भाग 2

समुदायों के साथ पशु–कल्याण हस्तक्षेपों का क्रियान्वयन

इस हिस्सा में आप क्या जानेंगे

- **अध्याय–3**
  पशु–कल्याण में हस्तक्षेपों के उन प्रकारों की व्याख्या करता है जो स्थायी परिणाम देते हैं। पशु–कल्याण की दृष्टि से सर्वाधिक जरूरतमंद कामकाजी पशु–समूह की पहचान कैसे करें और विभिन्न पशु एवं पशु–मालिकों के समूह के लिए सबसे उपयुक्त हस्तक्षेपों का निर्धारण कैसे करें–इसका वर्णन इस अध्याय में किया गया है।

- **अध्याय–4**
  इस अध्याय में सामुदायिक समूह में पशु कल्याण की बेहतरी के मनोभावों की स्थापना एवं उसके विकास के लिए चरणबद्ध दिशा–निर्देश दिया गया है।

- **अध्याय–5**
  इस अध्याय में विरल या कम पहुंच वाले क्षेत्रों तक पशु कल्याण सम्बंधित संदेशों को पहुंचाने एवं क्रियान्वित करवाने के तरीकों का वर्णन किया गया है।

इस हिस्से का उपयोग कैसे करें

इस खण्ड में दी गई सूचनायें पशुमालिक समुदायों के साथ काम करने की योजना बनाने के लिए काफी महत्त्वपूर्ण है। हमारी सलाह है कि आप अध्याय–3 को पढें और निर्णय लें कि किस समुदाय के साथ और कैसे काम करना है। उसके बाद आप अपने निर्णय के अनुरूप अध्याय 4 या अध्याय–5 का उपयोग करें। अगर आप अनेक समुदायों के साथ अलग–अलग तरीके से काम करने की योजना बनाते हैं तो आपके लिए दोनों अध्याय काफी उपयोगी होगा।

अध्याय–3

स्थायी परिवर्तन के लिए हस्तक्षेप

आप इस अध्याय में क्या जानेंगे?

इस अध्याय में हम लोग देखेंगे कि किस प्रकार कल्याण की स्थिति निरन्तरता के साथ बेहतर की जा सकती है। इसके लिए किस प्रकार सेवा प्रदाताओं (स्टेक होल्डर) के साथ–साथ पशु मालिक और उनका परिवार सहायक हो सकता है। अध्याय–1 व 2 के आधार पर विकसित पशु कल्याण सम्बंधी ज्ञान का उपयोग किस प्रकार विभिन्न समुदाय एवं उनके पशुओं के साथ योजना बनाकर काम करने में सहायक है–इसे भी इस अध्याय में दिखाया गया है।

किसी हस्तक्षेप को कौन सी बातें सफल बनाती हैं ?

अध्याय–2 में हमने देखा कि पशु कल्याण एक तय और जड़ स्थिति नहीं है। यह एक बहुआयामी एवं गतिशील स्थिति है। एक निश्चित समय में स्वीकार्य स्तर तक पशु कल्याण की स्थिति को बेहतर बनाने में पशु मालिक को समर्थ करने से यह निश्चित नहीं होता है कि कल्याण की यह स्थिति लम्बे समय तक कायम रहेगी। काम करने एवं पर्यावरण/वातावरण में परिवर्तन के कारण पशु कल्याण की स्थिति में जीवन पर्यन्त दैनिक और मौसमी परिवर्तन होता रहता है। स्थायी परिवर्तन के लिए किए जा रहे किसी भी हस्तक्षेप का अर्थ समुदाय का पशुओं की खराब स्थिति को समझ पाना एवं तत्काल उसके समाधान के लिए कार्य करने योग्य होना है।

सिद्धान्त पेटी–7 आवर्ती परिवर्तन

पशु कल्याण में बेहतरी एक निरन्तर प्रक्रिया है जिसे कामकाजी पशु की आवश्यकता एवं भावना को जानकर क्रमिक रूप से छोटे–छोटे परिवर्तन के द्वारा प्राप्त किया सकता है। इस प्रक्रिया को अधिकत्तर आवर्ती परिवर्तन या 'बाइट साइज्ड चंक्स' के नाम से जाना जाता है। कल्याण सम्पूर्ण या शून्य की स्थिति नहीं है। यह कदम–दर–कदम पशु के जीवन को बेहतर बनाते रहने की मानसिकता या मूल्य बोध है।

आप एक सहजकर्ता की हैसियत से किसी समुदाय को उसके उपलब्ध समय एवं संसाधन के अनुकूल कल्याण की स्थिति को बेहतर बनाने की सीमा एवं बिन्दुओं को तय करने में कैसे सहायता कर सकते हैं ?

मालिकों के समूह को पशु प्रबन्धन सम्बन्धी सही कार्यों को सामूहिक रूप से परिभाषित करने के लिए प्रोत्साहित करें। स्थानीय स्थिति एवं व्यवहारिक रूप से उपलब्ध सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए वे यह तय कर सकते हैं कि उन्हें क्या परिवर्तन करना है और किस प्राथमिकता के साथ करना है। इस काम में खण्ड–3 में वर्णित उपकरण आपकी मदद कर सकता है। इसका तात्पर्य यह है कि वर्तमान स्थिति में अपेक्षाकृत छोटी–छोटी सकारात्मक परिवर्तन लाना है। जेसे, एक–दो ऐसे कामों की शुरूआत करें जो पशु की स्थिति को बेहतरी की ओर से ले जाता है और एक दो ऐसे कामों को खत्म या कम करने की पहल करें जो पशु के जीवन को कठिन या दुरूह बनाता है।

उदाहरणस्वरूप, हम लोग पशु मालिकों को अक्सर यह कहते पाते हैं कि वे अपने पशु के सोने या आराम करने के लिए पर्याप्त जगह नहीं दे पाते क्योंकि उपलब्ध जगह उनके और परिवार के लिए ही पर्याप्त नहीं है। ऐसी स्थिति में हम उन्हें इसके लिए प्रोत्साहित करें कि अपनी स्थिति को देखते हुए सामूहिक रूप से किसी ऐसे काम के बारे में निर्णय लें जो पशु को कुछ राहत दे सके। अगर इसमें सफलता मिलती है तो, सहजकर्ता कार्य एवं उसके प्रतिक्रिया को समझने की स्थिति का निर्माण करें। यह पशु कल्याण के लिए अगले व्यवहारिक कदम के लिए निर्णय लेने की स्थिति का निर्माण करेगा।

कल्याण के नियामक

कामकाजी पशु के कल्याण के स्तर में काफी विभिन्नता होती है जो उनके जीवन को प्रभावित करने वाले जटिल तथ्यों पर निर्भर करता है। उन तथ्यों को नियामक कहा और नीचे दिए गये चित्र की तरह प्रस्तुत किया जा सकता है।

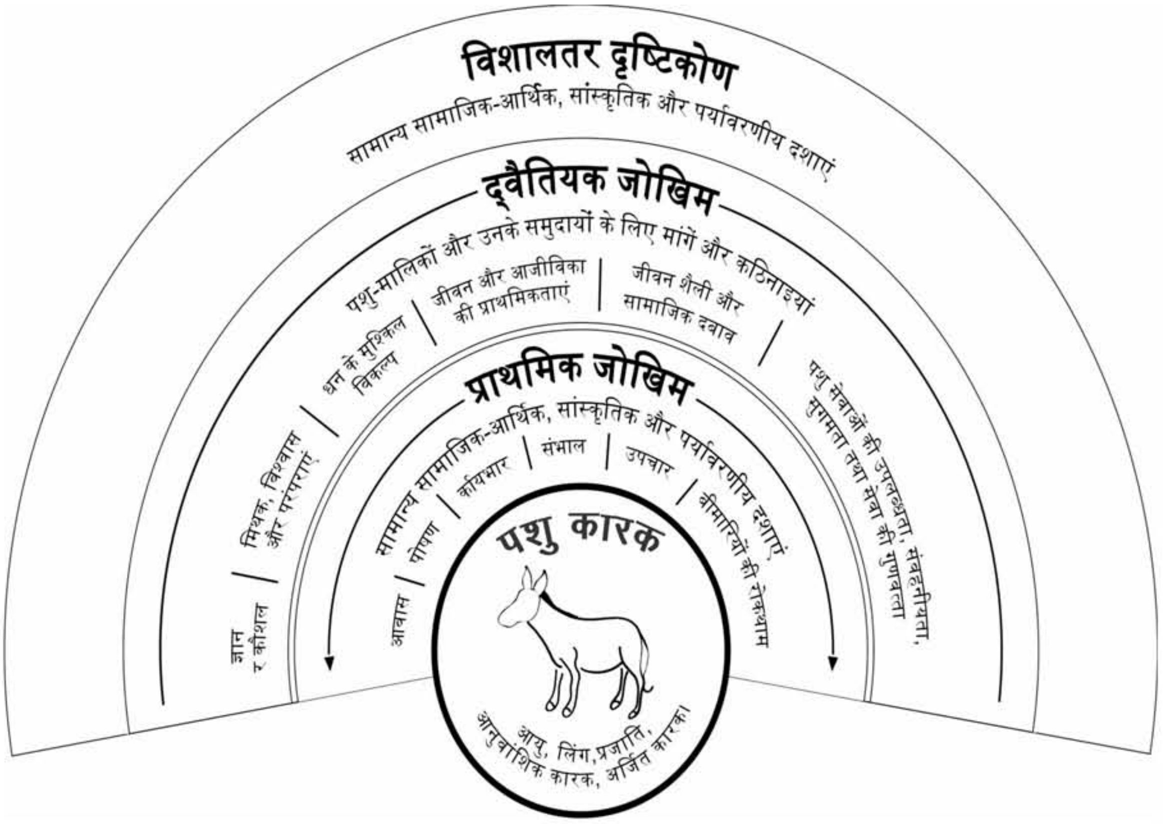

चित्र 3.1 कार्यकारी पशुओं के कल्याण के नियामक। स्त्रोत : लिसा वैन डिज्क,एल, प्रिचर्ड,जे.सी.,(2010),डालग्रेन एवम् व्हाईटहेड (1991) से अपनाया गया

रेखाचित्र के केन्द्र में स्वंय पशु है। इसका कल्याण आंशिक रूप से इसके पशु होने मात्र से प्रभावित है। जैसे, इसकी उम्र, लिंग, प्रजाति एवं गुण जो इनके माता–पिता से इन्हें प्राप्त है। (उदाहरण के तौर पर खास प्रकार की शारीरिक बनावट) या अब तक के अनुभव से प्राप्त (जैसे लोगों से भय)

बाहर की तरफ बढने पर रेखा की दूसरी सतह उन बाहरी कारकों को दिखाता है जो पशु के कल्याण को दैनिक रूप से सीधे प्रभावित करता है। ये सभी इनके रहने और काम करने की स्थितियां हैं। जैसे आवास, पोषण, कार्यभार, रख–रखाव, बीमारी से बचाव एवं उसका उपचार।

तीसरी सतह उन कारणों को दर्शाता है जो पशु के जीने और काम करने की स्थिति को प्रभावित करते हैं ये कारक बाध्यताएं एवं रूकावटें कही जाती हैं पशु के साथ काम करने वाले का ज्ञान, स्वास्थ्य सेवा सहित उपलब्ध अन्य सेवाएं, स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधन एवं पशु मालिक द्वारा अपने सामर्थ्य के अनुसार पशु के लिए उस संसाधन में से चुनाव इन कारकों में शामिल है। इसके साथ ही, पशु रखने वालों की मान्यता एवं परम्परा, उसके पड़ोसी एवं समाज का दबाव, उसकी सामाजिक–आर्थिक स्तर भी इसी प्रकार के कारक है।

सबसे बाहरी सतह अधिक व्यापक सामाजिक आर्थिक एवं पर्यावरणीय कारकों को दर्शाता है जो तीसरी सतह पर प्रभाव डालते हैं। इसमें सामाजिक बनावट, सूखा एवं बाढ़,गतिशीलता, शहरीकरण, इंधन की कीमत, यांत्रिक परिवहन में परिवर्तन आदि को शामिल करते हें।

इस रेखाचित्र में पशु–कल्याण को प्रभावित करने वाले सभी कारक एक दूसरे को प्रभावित करते हैं चाहे वे समान सतह पर या अलग–अलग सतहों में दर्शाये गये हों सफलतापूर्वक पशु कल्याण के स्तर में

सुधार लाने के लिए पशु, पशु के साथ रहने वाला व्यक्ति और दोनों के जीने एवं काम करने की पद्धति पर एक साथ काम करना आवश्यक है। पशु कल्याण से सम्बंधित कुछ बातें सीधे उसके मालिक द्वारा प्रभावित होते हैं जैसे पशु का पिटा जाना या पशु के खाने के समय को तय करना। फिर भी बहुत से कारक ऐसे हैं जो व्यक्ति विशेष प्रभावित नहीं है। क्योंकि पशु मालिक भी एक बड़ी सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं जीने एवं काम करने की चलती आ रही व्यवस्था का एक हिस्सा है। ऐसी स्थिति में ऐसे मुद्दों को एक ही समय में अधिक लोगों द्वारा सामूहिक पहल से सुलझाया जा सकता है।

उदाहरण के तौर पर, अनेक देशों में पशु–मालिकों की सामाजिक हैसियत उनके पशु के कल्याण की स्थिति को प्रभावित कर सकते हैं। वहां, जहां ये लोग समाज के हासिये पर हैं उनके देखभाल की क्षमता भी सीमित हो जाती है (जैसे–भारत में निम्न जाति के गदहा पालक)। क्योंकि सेवा प्रदाता एवं सरकारी तंत्र एक या एक परिवार की समस्याओं पर ध्यान नही देता है। ऐसी स्थिति में यदि गधा पालक सामूहिक रूप से काम नही करें तो ये प्रभाव उत्पन्न नहीं कर सकते हैं और अपने पशु के निरन्तर कल्याण की कल्पना को भी साकार नहीं कर सकते हैं।

सफल एवं दीर्घकालिक कल्याण हस्तक्षेप के स्तम्भ

कामकाजी पशुओं के कल्याण स्तर में स्थायी हस्तक्षेप के चार स्तम्भ नीचे दिखाया गया है

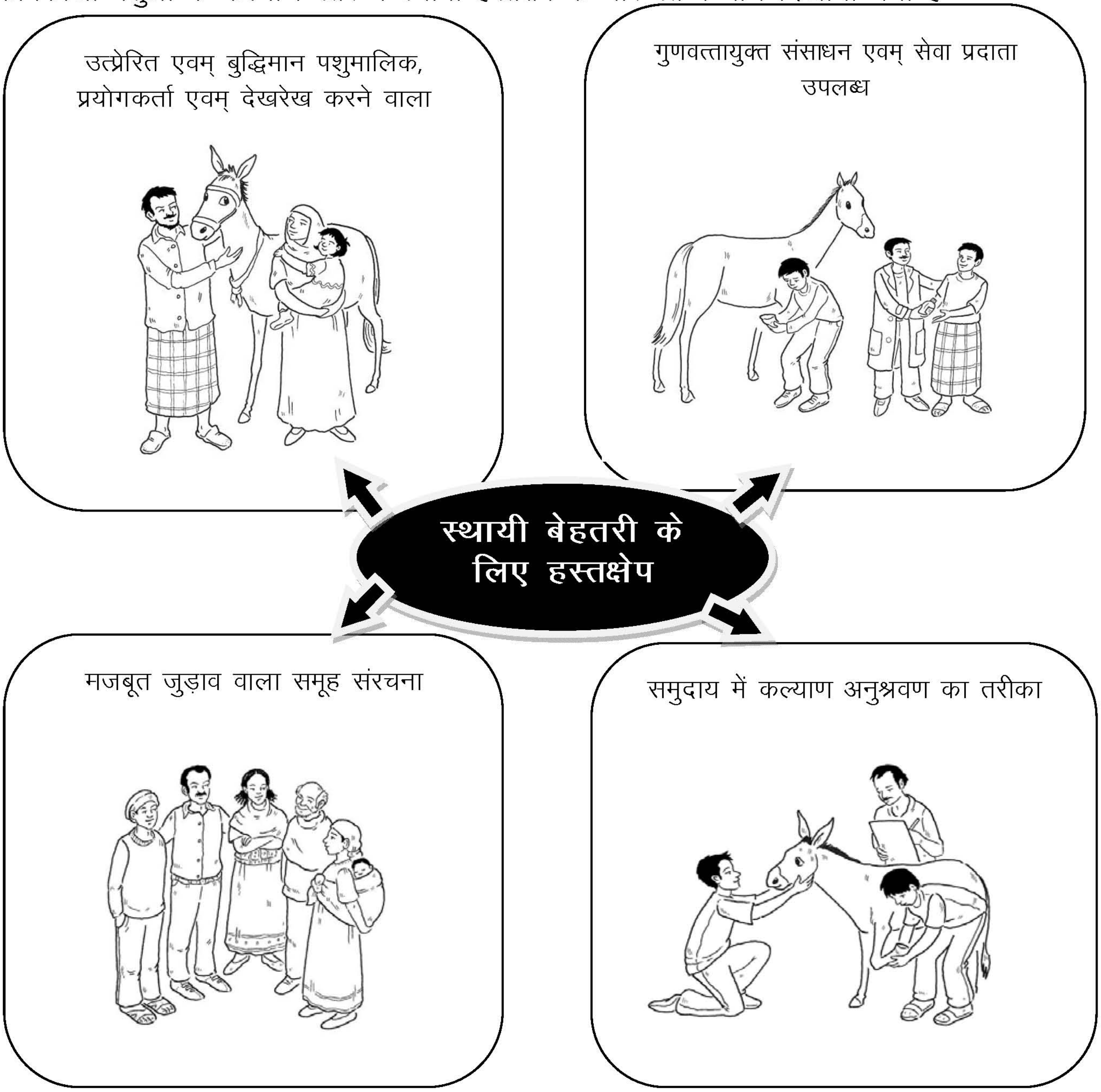

चित्र 3.2 सफल एवं दीर्घकालिक कल्याण हस्तक्षेप के स्तम्भ

प्रक्रिया पेटी–1 स्थायित्व चित्रण

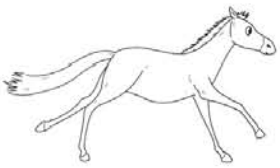

सफल एवं दीर्घकालिक कल्याण हस्तक्षेप के स्तम्भों का प्रस्तुतीकरण (चित्र 3.2 ऊपर), स्थायित्व चित्रण का एक उदाहरण है यह लोगों को कामकाजी पशु कल्याण में दीर्घकालिक सुधार के लिए आवश्यक पद्धति, संरचना, संस्थाएं और प्रक्रियाओं (अक्सर इसे 'रिजल्ट एरिया' कहते हैं) को समझ सकने के लिए सक्षम बनाता है।

बगैर किसी बाहरी मदद के स्वंय, किस प्रकार पशु के अच्छे कल्याण स्तर को कायम रखा जाये इसे स्थायित्व चित्रण में समुदाय के लोग विकसित कर सकते हैं। इसका उपयोग समुदाय से क्रमिक रूप से बाहरी मदद को खत्म करने के लिए समुदाय को तैयार करने में किया जा सकता है। (अध्याय–4, अवस्था–6 देखें)

हमारे प्रबन्धक एवं सहकर्ताओं ने स्वंय के परियोजना निर्माण के लिए भी स्थायित्व चित्रण को उपयोगी पाया है। कामकाजी पशु के कल्याण स्तर में सुधार के अपने लक्ष्य को पाने के लिए समुदाय के विशिष्ट आवश्यकताओं एवं व्यस्तताओं को समझने के लिए भी हम लोगों ने स्थायित्व चित्रण का उपयोग वार्षिक योजना–निर्माण कार्यशाला में किया है। प्रारम्भिक तौर पर पद्धति संरचना संस्थाएं और प्रक्रिया को चिन्हित करने के बाद हम इस अभ्यास को और विशिष्ट बनाने के लिए प्रत्येक परिणाम क्षेत्र के लिए गतिविधियों का निर्धारण करते हैं जो स्थायित्व के लक्ष्य प्राप्ति के लिए आवश्यक है।

पहला कदम– समूह से पूछें कि पशु कल्याण के लिए की जा रही वर्तमान गतिविधि को बगैर बाहरी या सहजकर्ता की मदद से स्वंय चलाने के लिए किस प्रकार की व्यवस्था, संरचना, संस्था और प्रक्रिया की आवश्यकता है। प्रतिभागियों को रंगीन कार्ड देकर अपने विचारों को शब्द या चित्र के माध्यम से बताने के लिए कहें।

दूसरा कदम– इन सभी कार्डों को वर्गीकृत करने में इनकी मदद करें और फिर उसे वर्गीकरण के अनुसार बड़े चार्ट पर चिपका दें। प्रत्येक कार्ड क्या दर्शाता है इस पर समूह में चर्चा करवायें एवं एक मत निर्धारित करें। प्रतिभागियों के विचारों के आधार पर प्रत्येक परिणाम क्षेत्र के लिए एक वाक्य या शीर्षक निर्धारित करें।

तीसरा कदम – परिणाम क्षेत्र निर्धारित होने के बाद प्रतिभागियों को इसे पाने के लिए आवश्यक गतिविधि तय करने में मदद करें। इन निर्धारित गतिविधियों को उसके परिणाम क्षेत्र वाले चार्ट पर अंकित करने के लिए कहें एवं इस पर चर्चा करें की इसे कैसे किया जा सकता है। इस प्रकार प्रत्येक चिन्हित गतिविधि के लिए कार्य योजना का निर्माण करें।

स्थायित्व चित्रण दूसरी जगह वर्णित स्वप्न या भविष्य चित्रण से (कुमार, 2002) से थोड़ा अलग है। स्वप्न या भविष्य चित्रण में एक व्यापक लक्ष्य को देखा जाता है और अधिकांशतः इसके लिए शब्द या चित्र के माध्यम से एक वकतव्य निश्चित किया जाता है। स्थायित्व चित्रण निश्चित योजना के निर्माण एवं विशिष्ट परिणाम क्षेत्र एवं तदनुकुल गतिविधियों को निर्धारित करने की दृष्टि से समुदाय को सक्षम बनाने में अधिक उपयोगी है।

उत्प्रेरित एवं ज्ञानी मालिक, उपयोगकर्ता एवं देखभालकर्ता

कामकाजी पशु मालिकों को आप अनेक तरीकों से प्रेरित कर सकते हैं। जिन तरीकों में शामिल हैं :–

- स्वस्थ्य पशु के मूल्य का पुनर्वलन इसे कामकाजी पशु द्वारा घर के आय में योगदान, स्वस्थ्य एवं दुर्बल पशु का जीवन काल, कार्य क्षमता एवं स्वास्थ्य सेवा पर होने वाले खर्च पर तुलनात्मक चर्चा के माध्यम से किया जा सकता है। इस पर विस्तार से चर्चा करने के लिए हम अपने पशु की कीमत कैसे बढा सकते हैं ? टूल का उपयोग करें (टूलकिट–18 देखें)

- समुदाय द्वारा अधिक वरीयता वाला कल्याण–हस्तक्षेप का चयन समुदाय अपने एवं अपने पशु के लिए क्या सबसे अधिक जरूरी समझते हैं, इस आधार पर हस्तक्षेप का चयन करें। कल्याण हस्तक्षेप में समुदाय की सहभागिता एवं स्वामित्व के लिए ऐसे वातावरण का निर्माण करें जिसमें पशु मालिक, उपयोगकर्ता एवं देखभाल कर्ता उन बिन्दुओं को स्वंय चिन्हित कर काम कर सके जो उनके पशु के कल्याण को सबसे अधिक प्रभावित करता है।

- अन्य पशु मालिकों का दबावः– अन्य पशु मालिकों का दबाव पशु मालिकों को प्रेरित करने में काफी उपयोगी रहा है। इसे सामूहिक कार्य के लिए समूह निर्माण के द्वारा बहुत कारगर ढंग से किया जा सकता है।

- प्रतियोगिता : हम लोगों ने पाया है कि भारत, पाकिस्तान केन्या में पशु–कल्याण के आधार पर आयोजित प्रतियोगिता, जैसे खुश गधा प्रतियोगिता मालिकों को काफी अभिप्रेरित करती है।

- उपलब्ध स्थानीय ज्ञान एवं प्रथाः ऐसे वातावरण में चर्चा द्वारा जिसमें लोग स्वतंत्रता पूर्वक अपने ज्ञान और प्रथा को व्यक्त कर सकें, हम पशु मालिकों द्वारा चिन्हित अनेक समस्याओं को खत्म कर सकते हैं। सामान्य तथा घर में कामकाजी पशु के देख–रेख में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इनके पास पशु सम्बन्धी अपना अनुभव और ज्ञान होता है जिसे पुरूष द्वारा महत्व नहीं दिया जाता। पशु के देख–रेख में महिलाएं महत्वपूर्ण है इसलिए दीर्घकालिक परिवर्तन के लिए कल्याण–हस्तक्षेप तय करने में इनका शामिल होना आवश्यक है।

अगर आपको लगता है कि कुछ प्रथाएं पशु कल्याण के पक्ष में नहीं है तो आपको अन्य सहकर्मी या स्वयं सेवा प्रदाता से विमर्श करना चाहिए। इसके बाद आप समुदाय के साथ उक्त प्रथा पर पशु कल्याण अभ्यास अन्तर विश्लेषण जैसे टूल का उपयोग (टूलकिट 21 देखें) कर सकते हैं।

एक मजबूत एवं सशक्त समूह का गठन

कामकाजी पशु के जीवन स्तर में सुधार की दृष्टि से परस्पर सीखने एवं सीखाने के लिए प्रेरणा, ज्ञान और अनुश्रवण संरचना के लक्ष्य को निश्चित रूप से एक मजबूत एवं सशक्त समूह के गठन के द्वारा ही पाया जा सकता है। जैसा कि इस कार्य–निर्देशिका के भूमिका में कहा गया है कि प्रत्येक समूह कल्याण के मुद्दों को पहचानने एवं उस पर काम करने के लिए सक्षम होता है। मालिकों का परस्पर सहयोग उन्हें यह अवसर देता है कि वे इन कामों को कर सकें जो वे अकेले नहीं कर सकते हैं जैसे–चारे की एक मुश्त खरीददारी या सेवाप्रदाताओं पर गुणात्मक सेवा के लिए दबाव। व्यक्ति द्वारा एकाकी रूप से किए जा रहे किसी काम की तुलना में किसी भी प्रकार की सामूहिकता स्थायित्व के लिए अधिक कारगर है। (देखें अध्याय–4, खण्ड–1 : नब्ज को महसूसना, समूह के गठन पर विस्तृत सूचना के लिए)

समुदाय द्वारा पशु कल्याण स्तर के अनुश्रवण के लिए संरचना

पशु कल्याण में सुधार और सुधार में स्थायित्व तभी सम्भव है जब लोग कल्याण सम्बन्धी समस्याओं से बचाव, प्रारम्भिक स्तर पर ही कल्याण समस्या की पहचान और इसके दुष्प्रभाव को कम करने के लिए काम करने के लिए सक्षम हों। अगर उपरोक्त सभी बातें हो तो कल्याण में होने वाली समस्याएं पशु को कम से कम प्रभावित करेगी। पशु के हित में शीघ्रता से पहल और दीर्घकालिक सुधार के लिए आवश्यक है कि समुदाय में स्वंय के द्वारा विकसित अनुश्रवण संरचना के अनुसार सामूहिक रूप से और नियमित अन्तराल पर अनुश्रवण किया जाये। इससे एक के ज्ञान का फायदा समुदाय के अन्य लोग भी देखते और समझते हैं। इस प्रकार से उत्पन्न दबाव भी अभिप्रेरणा को मजबूत करता है। इसे आगे अध्याय–4 में विस्तार से बताया गया है।

गुणी स्थानीय सेवाप्रदाता एवं गुणात्मक संसाधन की उपलब्धता

गुणी स्थानीय सेवाप्रदाता एवं गुणात्मक संसाधन की उपलब्धता के लिए महत्वूपर्ण है। अन्य समूह या सेवा प्रदाता की भूमिका भी पशु कल्याण में महत्वपूर्ण होती है।

एक सहजकर्ता के रूप में आप पशु के लिए सबसे उपयुक्त संसाधन की पहचान करने में पशु मालिकों की मदद कर सकते है। साथ ही, महत्वपूर्ण सेवा–प्रदाताओं , जो उनके पशु से किसी न किसी रूप में जुडे हैं, जैसे–बुग्गी बनाने वाला, पशु स्वास्थ्य कार्य कर्ता, चारा विक्रेता दवा की दुकान (देखें चित्र 3.3) के साथ सम्पर्क बढाने में भी सहायता कर सकते हैं। कुछ स्थानों पर ये सेवा –प्रदाता पशु मालिक भी होते हैं जिन्हें हम समूह का सदस्य बना सकते हैं या समूह की बैठक में आमंत्रित कर समूह के सदस्यों द्वारा किये जा रहे कार्यो से अवगत करा सकते हैं।

सेवा प्रदाताओं के प्रकार	**पशु को किस आवश्यकता को पूरा करते हैं।**
काठी और साज निर्माता	काठी और साज बनाता, बेचता ओर मरम्मत करता है।
चारा विक्रेता	*पशु चारा उपजाता, बेचता, उसकी कटाई करता और विभिन्न प्रकार के चारे का मिश्रण करता है।*
नालबन्द या लोहार	*खुर की छंटाई, नाल का निर्माण एवं लगाना*
पशु के डॉक्टर, पारावेटस और पशु स्वास्थ कार्यकर्ता	*बीमार पशु के बीमारी तय करना और इलाज करना।*
सामुदायिक पशु चिकित्सा कार्यकर्ता 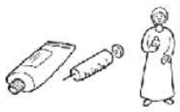	*पशु के बीमारी का पता लगाना एवं इलाज करना, पशु का टीकाकरण, महामारी के सम्बंध में सम्बद्ध अधिकारी को प्रतिवेदन देना*
कृषि चिकित्सक एवं दवाखाना 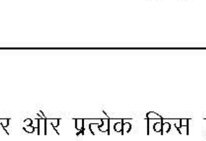	*पशु सम्बंधित दवाई और औजाद के विक्रेता किस दवा का इस्तेमाल करें इस सम्बन्ध में सलाह देना।*

चित्र–3.3 सेवा प्रदाता के प्रकार और प्रत्येक किस प्रकार पशु की आवश्यकता को पूरा करने मे मदद करते हैं।

सिद्धान्त पेटी–8

सेवा प्रदाताओं की पहुंच, उपलब्धता, क्रययोग्यता, स्वीकार्यता एवं गुणवत्ता

(AAAAQ -Accesibility- Availability-Affordability-Acceptability-Quality)

अपने पशु को ठीक तरीके से देखभाल करने के लिए समुदाय को सक्षम बनाने में सेवा प्रदाताओं की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। लगभग सभी समुदाय में स्थानीय सेवा प्रदाता उपलब्ध रहते हैं जो कामकाजी पशु को कामोवेश अपनी सुविधा देते हैं । उदाहरण के लिए, नालबन्द (लोहार), चारा–विक्रेता काठी और साज बनाने तथा मरम्मत करने वाला तथा सरकारी डाक्टर, पारावेट्स, स्वास्थ्य कार्यकर्ता या पारम्परिक इलाज करने वाले के रूप में स्वास्थ्य सेवा प्रदाता को देखा जा सकता है।

प्रभावी एवं दीर्घकालिक सेवा सुविधा के पीछे दो मूलभूत ताकतें काम करती है

- **मांग** : पशु मालिकों द्वारा सेवा की आवश्यकता को महसूस करना और साथ ही साथ मूल्य देकर सेवा लेने के लिए तैयार होना
- **आपूर्तिः** इच्छुक व्यक्ति को सेवा प्रदान कर जीवन यापन करना।

सफल समझे जाने के लिए प्रत्येक सेवा निम्नलिखित आधार पर होते हैं।

पहुंच–सेवा तक समुदाय की पहुंच होना स्थायित्व के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है। (इसमें चिकित्सा की दृष्टि से दवा एवं सामग्री तक पहुंच होना भी शामिल है।) कामकाजी पशु के सन्दर्भ में आपातकालीन सेवा त्वरित प्रतिक्रिया की अपेक्षा रखता है।

उपलब्धता– आवश्यकता के समय सेवा प्रदाता उपलब्ध हो। लचीला कार्यकाल आवश्यक है, विशेषतः रात के समय या इस समय जब पशु मालिक खुद काम नहीं कर पा रहे हों।

व्यय सामर्थ्य –यदि समुदाय को सेवा प्राप्त करने के लिए आवश्यक खर्च करने की क्षमता नहीं हो, तो वह उपलब्ध सेवा का लाभ नहीं उठा सकता है और न ही सेवा प्रदाता अपनी सेवा को जारी रख सकता है।

स्वीकार्यता– यदि समुदाय सेवा–प्रदाता के चयन में शामिल हो तो सेवा प्रदाता की स्वीकार्यता बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए विश्वास एवं सम्बद्धता चयन के मानक हो सकते हैं।

गुणवत्ता–पशु के लिए सहयोगपूर्ण एवं उपयुक्त सेवा के लिए गुणात्मकता आवश्यक है। यदि समुदाय सेवा प्रदाता के गुणों के प्रति आवश्वस्त नहीं है तो उसका उपयोग नही करेंगे।

सौजन्य–कटली,ए.,ब्लैकवे,एस.एवम् लीलैण्ड,टी.(2002)। कम्युनिटी आधारित एनीमल हेल्थकेयर : ए प्राक्टिकल गाइड टू इम्प्रूविंग प्राइमरी वेटिनरी सर्विसेज. बुकपावर/आइ. टी.डी.जी. प्रकाशन,रगबी,यू.के.

केस स्टडी–B पशु कल्याण में सुधार के मुख्य साझेदारों/हिस्सेदारों की सम्बद्धता

स्त्रोतः रत्नेश राव, बिजनौर, उत्तर प्रदेश, ब्रुक इण्डिया, सितम्बर 2009

उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिला का एक गांव है राउटी, जिसमें 21 अश्व पशु पालक परिवार एवं 40 घोड़े एवं गधे हैं। गर्मी के मौसम में ये पशु भट्टों पर एवं बर्तन ढ़ोने का काम करते हैं जबकि जाड़े के मौसम और वर्षा के अन्य माह में सामान या सवारी ढ़ोने का काम करते हैं। ब्रुक इण्डिया के बिजनौर जिला इकाई ने शुरू से ही अश्व प्रजाति के कल्याण के लिए समूह बनाने की पहल की और जुलाई 2008 में समूह का गठन हो गया। समूह ने सामूहिक बचत योजना प्रारम्भ की। इस समूह से लिये गये ऋण का उपयोग चारा खरीदने, इलाज के लिए, घोड़े एवं गधे की खरीद के लिए, बुग्गी की मरम्मत और घरेलू खर्च को पूरा करने के लिए किया गया है।

समूह ने इस बात को समझा कि पशु सम्बंधित कार्य के अन्य साझेदारों जैसे, नालबन्द, बाल काटनेवाला, चारा बेचने वाला, पशु सेवा देने वाला और दवा के दुकानदार– की भूमिकायें उनके पशु कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है। सहभागी टूलों जैसे लागत –लाभ विश्लेषण (उपकरण पेटी–15) एवं जोड़ावार श्रेणीकरण (उपकरण पेटी–8) ने समुदाय को सेवा –प्रदाताओं की सेवा लेने में आने वाले अवरोधों और अवसरों को पहचानने में मदद की।

हाशिम, स्थानीय नालबन्द, को समूह गठन के समय सदस्य बनने के लिए आमंत्रित किया गया था। यह नाल एवं नालबन्दी तथा इस पर होने वाले खर्च की गुणात्मक स्थिति की गहराई से जानने–समझने का अवसर दिया। समूह ने अपने बचत में से स्थानीय बाजार से अच्छा नाल खरीदने का निर्णय लिया और हाशिमद (नालबन्द) के साथ समूह के सदस्यों ने कम कीमत पर नालबन्दी करने का समझौता भी किया। हाशिम ने समूह के सदस्यों के लिए 60 भारतीय रूपया में नालबन्दी करना तय किया जबकि अन्य लोगों के लिए यह दर 80 भारतीय रूपया था। कम कीमत पर उच्च गुणवत्तापूर्ण नालबन्दी के अवसर ने नालबन्दी को नियमित किया एवं खुर सम्बंधित समस्याओं में भी कमी आई। यद्यपि हाशिम अपेक्षाकृत सस्ते दर पर काम कर रहा था। फिर भी उसके आय में वृद्धि हुई। क्योंकि, अब लोग अधिक नियमित और एक दो पैर की जगह चारों पैर में एक साथ नालबन्दी करवाने लगे।

बाल काटने वाला गांव से काफी दूरी पर था और गर्मी के मौसम में गर्दन और अन्य जगहों के बाल कटवाने में अन्य बहुत सारी रूकावटों की पहचान की गई थी। इन रूकावटों पर सामूहिक विश्लेषण करने से अनेक विकल्प उभर कर सामने आया। समूह के तीन सदस्य आगे आये और इस काम को स्वंय करने का निश्चय किया। इस काम को मात्र समूह के लिए ही नहीं बल्कि जीविकोपार्जन के साधन के रूप्प में अन्यत्र भी करना तय किया। प्रत्येक ने बाल काटने की मशीन की खरीददारी के लिए समूह बचत में से दो–दो हजार रूपया ऋण लिया और समूह के सदस्यों के लिए प्रति घोड़ा 50 रूपये और दूसरे के लिए 70 रूपये पारिश्रमिक लेना तय किया।

समूह ने इसी प्रकार का जुड़ाव स्थानीय पशु–सेवा प्रदाता (रघुनाथ और सुरेश), दवाखाना (अक्षय एवं विपिन दवाखाना) और बुग्गी बनाने वाला (शकील) के साथ भी स्थापित किया। इनके साथ उचित मूल्य पर गुणात्मक सेवा देने सम्बंधित समझौता हुआ, साथ ही परस्पर सहयोग एवं विश्वास का सम्बन्ध भी बना। इस जुड़ाव से जरूरत पड़ने पर समय से सेवा की उपलब्धता निश्चित हुई। सामूहिक कार्य से मालिकों की लाभादायक सौदा करने की क्षमता, आत्मविश्वास और सामूहिक भावना का विकास हुआ। दूसरी तरफ, सामूहिक बचत ने सेवा लेने में होने वाले खर्च को वहन करने लायक बनाया। पशु कल्याण में मात्र अल्पकालिक ही नहीं बल्कि दीर्घकालिक स्थायी सुधार के लिए आवश्यक, समय से, गुणात्मक एवं सामर्थ्य के अधीन सेवा की उपलब्धता को समूह की पहल से सम्भव हो पाया।

तय करना कि कहां और किसके साथ काम करें: सर्वाधिक जरूरतमंद पशु को लक्ष्य करना।

आप कितना भी समर्पित/प्रेरित हो, लेकिन आपके या आपकी संस्था के लिए उस क्षेत्र के सभी पशु मालिकों के साथ काम कर पाना व्यवहारिक रूप से सम्भव नहीं है। सम्भव है गांव भौगोलिक रूप से काफी दूर–दूर हों और गांवों में पशु की संख्या काफी कम हो। यह भी सम्भव है कि शहर और उसके आस पास का क्षेत्र इतना बड़ा हो कि उसमें एक साथ काम करना सम्भव नहीं हो। इसके अतिरिक्त शायद ही कोई संस्था ऐसी होगी जिसके पास असीमित साधन/धन हो। ऐसी स्थिति में यह महत्वपूर्ण है कि हम उन पशुओं को पहले लक्ष्य करें जो सबसे अधिक जरूरतमंद है।

परियोजना क्षेत्र के बारे में जानकारी इक्टठा करना

ऐसी जानकारी प्रत्यक्ष देखकर या पशु मालिकों एवं अन्य के साथ चर्चा के द्वारा प्राप्त की जा सकती है। राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कहानी, सर्वेक्षण, मानचित्र, प्रतिवेदन, सरकारी स्तर पर की गई गणना रिपोर्ट, पशु स्वास्थ्य प्रतिवेदन आदि स्त्रोतों का उपयोग आवश्यक एवं उपयोगी जानकारी एकत्रित करने के लिए किया जा सकता है।

खराब कल्याण स्थिति के लिए जिम्मेदार मुख्य जोखिम/कारण को निर्धारित करते समय निम्नलिखित तथ्यों को शामिल किया जा सकता है –

भौगोलिक क्षेत्र के सम्बन्ध में:–

- जिला एवम् प्रखण्ड या अन्य प्रशासनिक सीमाओं की संख्या
- प्रत्येक प्रखण्ड में वैसे गांव एवं शहर के नाम एवं संख्या जहां पशु है
- इस क्षेत्र से परियोजना कार्यालय की दूरी
- गांव में पुरूष, स्त्री एवं बच्चों की संख्या
- विभिन्न स्तर (जिला, प्रखण्ड एवं गांव) पर उपलब्ध अवसर, संरचना एवं सुविधा
- उस क्षेत्र में पहले से कार्यरत ऐसी स्वंय सेवी संस्था एवं सरकारी उपक्रम जो आपके कामों में रूचि रख सकते हैं

पशु के सम्बन्ध में:–

- उस क्षेत्र के कामकाजी पशुओं की संख्या और प्रकार तथा उनके ठहराव (एक जगह या बिखरे हुए हैं)

- स्थान जहां काम के कारण या अन्य कारण से पशु एकत्रित होते हैं जेसे– बाजार, भट्टा या कारखाना
- उस क्षेत्र में पशु द्वारा किए जाने वाले काम का प्रकार
- उनके मालिकों की जीविका, आय के श्रोत, सामाजिक आर्थिक स्तर,
- पशु कल्याण में सुधार के लिए उपलब्ध अवसर और सुविधाएं

इस क्रम में उस क्षेत्र में पशु कल्याण के विपक्ष में चिन्हित समस्या, उसकी प्रकृति और उसके कारणों को भी जाना जा सकता है।

सर्वेक्षण या अवलोकन करने से पूर्व एक आसान सा प्रश्नावली तय करना उपयोगी होता है। इससे क्षेत्र में प्राप्त जानकारी को दर्ज करने में सुविधा होती है।

सर्वाधिक जरूरतमंद पशुओं को लक्ष्य करना

मेरी सलाह में, सर्वाधिक जरूरतमंद कामकाजी पशुओं के क्षेत्र को पहचानने के लिए विभिन्न प्रकार के साझेदारों के साथ इस विषय पर अभ्यास करना चाहिए। यह अभ्यास आपके द्वारा एकत्रित तथ्य (अपखण्डित) यथासाध्य अधिक से अधिक लोग जैसे पशु मालिक, उपयोगकर्ता, सेवा प्रदाता के अनुभवों के आधार पर किया जाना चाहिए। प्रक्रिया पेटी–2 लक्ष्य अभ्यास को करने के विभिन्न चरणों को दिखाता है। केस स्टडी–सी वास्तविक उदाहरण को विस्तार से बताता है। कुछ पशु अधिक जोखिम कठिन और अनचाहा वाला काम करने के बावजूद सही देखभाल के कारण स्वस्थ और खुश रहते हैं। 'लक्ष्य अभ्यास' एक अच्छा तरीका है जिससे आप यह प्राथमिकीकरण कर सकते हैं कि किस पशु एवं पशु मालिक के साथ पहले काम किया जाये। कालक्रम में यदि आपको लगता है कि पशु–कल्याण की स्थिति को समझने में कुछ सीमाएं रह गई हैं तो आप पशु–पालक समुदाय की सहायता से अपनी प्राथमिकता और योजना को दुरूस्त कर सकते हैं।

प्रकिया पेटी–2

कल्याण के लिए जोखिमों के वर्गों को पहचानने के लिए टारगेटिंग अभ्यास (लक्ष्य)

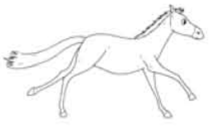

इस अभ्यास के पहले हिस्से को इस प्रकार बनाया गया है जिससे आपके जिला या क्षेत्र में कामकाजी पशुओं को उनके काम की प्रकृति के आधार पर वर्गीकृत/चिन्हित किया जा सके। उस क्षेत्र के कामकाजी पशुओं के काम की प्रकृति को तय करने के लिए अधिक से अधिक साझीदारों के साथ विमर्श करना चाहिए।

क्षेत्र एवं पशु के सम्बन्ध में आपके द्वारा एकत्रित की गई जानकारी और अन्य उपलब्ध स्त्रोत (जैसे–परियोजना एवं प्रकाशन) को रखकर पशु कल्याण के लिए सबसे जोखिम वाले समूह को चिन्हित करने के लिए एक साथ मानक तय करें। कुछ उदाहरणों को सम्मलित किया जा सकता है।

- पीठ पर या बुग्गी पर ढ़ोने वाले वजन का प्रकार
- पशु के काम करने का घंटा
- प्रतिदिन तय की जाने वाली दूरी
- पर्यावरण जैसे–मौसम या जमीन की बनावट
- पशु कल्याण के सम्बन्ध में मालिकों की जागरूकता
- विभिन्न जीवन–यापन का तरीका जिसमें पशु काम करते हैं
- पशु के उपयोग के लिए आर्थिक दबाव
- उपयोग होने वाले सामग्री/औजार का प्रकार
- कोई भी जानकारी जो पशु कल्याण पर आधारित हो। जैसे–लंगड़ापन की संख्या, घाव अन्य बीमारी या भय का वातावरण
- मौसमी विभिन्नता

एक बडे से चार्ट पेपर पर लम्बवत रेखा खींचते हैं जिसके एक छोर पर उच्च कल्याण जोखिम एवं दूसरे छोर पर 'निम्न कल्याण जोखिम लिखते हैं। कामकाजी पशुओं के समूह को दिखाएं और उसे एक दूसरे से तुलना करके चार्ट पर क्रम से लिखें। ऐसा सम्भव है कि मूल रूप से एक प्रकार के समूह में भी अन्य कारणों से अलग–अलग जोखिम स्तर पर हो। जैसे–पीठ पर बोझा ढ़ोने वाले वो गधे जो कभी कभार या सप्ताह में एक बार कृषि उत्पाद जेसे –सब्जी, अनाज को ढ़ोते हैं को हम निम्न कल्याण जोखिम में रख सकते हैं लेकिन पीठ पर बोझा ढोने वाले वे गधे जो निर्माण स्थल पर रोज पत्थर ढोते है उच्च कल्याण जोखिम श्रेणी के करीब आ सकते हैं। इसी प्रकार की तुलना सभी समूह और उप समूहों के बीच तब तक करें जब तक सभी समूह मानक के अनुसार एक क्रम में व्यवस्थित नहीं हो जाए।

श्रेणीबद्व करने के क्रम में क्रम तय करने के कारणों को भी उसी चार्ट या अन्यत्र दर्ज करें जो भविष्य में सन्दर्भ के काम आ सकते हैं। पूरी श्रेणी को तीन मुख्य हिस्सा–उच्च जोखिम, मध्यम जोखिम एवं निम्न जोखिम में बांट दें।

केस स्टडी– C इथियोपिया में प्रायोगिक परियोजना के लिए सर्वाधिक जरूरतमंद पशुओं को परिभाषित करना

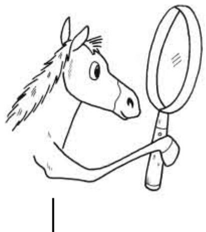

स्त्रोत: लिसा वैन डिज्क,एवम् ब्रुक ईथीयोपिया,वार्षिक कार्ययोजना कार्यशाला,जुलाई 2008,अडीस अबाबा, ईथीयोपिया

इथियोपिया में पांच लाख से अधिक कामकाजी पशु हैं और इनमें अधिकांशत: गधे हैं जिनका उपयोग ग्रामीण परिवहन एवं कृषि कार्य के लिए किया जाता है। ब्रुक द्वारा 2008 में एक प्रायोगिक परियोजना की शुरूआत की गयी जिसमें दक्षिणी राष्ट्र राज्य एवं प्रान्तों के अनेक हिस्सा को लिया गया। परियोजना दल के द्वारा कामकाजी पशुओं के सम्बन्ध में जानकारी जुटाने के क्रम में ही एक दुविधा उत्पन्न हो गयी। पशुओं की संख्या इतनी अधिक थी कि प्रभावी रूप से सभी तक पहुंच पाना लगभग असम्भव था। उदाहरण के लिए मात्र हदिया क्षेत्र में 90000 से भी अधिक कामकाजी गधे थे।

योजना निर्माण कार्यशाला में दल ने, जरूरतमंद पशु के साथ काम करने के लिए आवश्यक संसाधन और लागत पर केन्द्रित करते हुए जरूरतमंद पशुओं को कैसे चिन्हित किया जाये पर चर्चा शुरू की। कार्यशाला में प्रत्येक प्रतिनिधि समूह में पशुपालन के प्रतिनिधि को भी शामिल किया था। प्रतिभागी के एक समह ने सासेगो अंचल के कामकाजी पशु को परिभाषित करना शुरू किया साथ ही उनके निम्न कल्याण स्तर के लिए जिम्मेदार जोखिमों को भी बताया। शुरू में इन लोगों ने पशु के विभिन्न समूहों को सूचीबद्ध किया– पीठ पर अनाज ढोकर बाजार ले जाने वाले घोडा और खच्चर, आदमी को ढोने वाले घोडे, खान से पत्थर को बुग्गी के माध्यम से ले जाने

वाले गधे बेचने के लिए पानी को बुग्गी पर ढोने वाले गधे और घरेलू उपयोग के लिए पशु चारा पीठ पर ढोने वाले गधे। पहली सूची विशेष रूप से सौसेगो के लिए था जबकि दूसरी सूची लेमो द्वारा बनाई गयी थी।

इसके बाद समूह ने स्वंय इस पर चर्चा की कि वह कौन से कारक हो सकते हैं जो यह तय करे कि किस पशु को हमारे मदद की सबसे अधिक जरूरत है। अन्त में उन्होंने निम्नलिखित सूची तैयार की –

- कार्य के प्रकार, जैसे–बुग्गी द्वारा सामान एवं लोगों को खींचना, पीठ पर लादने वाला पशु, सवारी वाला पशु
- कार्य भार, समूह द्वारा परिभाषित जैसे दूरी+वजन+वजन का प्रकार+समय
- कार्य क्षेत्र का वातावरण, जैसे सड़क की स्थिति और काम के रास्ते का चढाव
- पशु स्वतः मालिक (या उसके परिवार) द्वारा उपयोग किया जाता है या दूसरे द्वारा।
- पशु शहर, कस्बा या गांव में काम करता है।
- मालिक के आय का स्त्रोत कामकाजी पशु आमदनी का मुख्य स्त्रोत है। या मालिक के पास आय के अन्य स्त्रोत जैसे कृषि है।
- क्षेत्र विशेष में रहने या काम करनेवाले पशुओं की संख्या
- प्रति परिवार के पास पशु की संख्या
- पशु और उनके काम पर मौसम का प्रभाव
- पशु पर आश्रित लोगों की संख्या, दूसरे शब्दों में परिवार का आकार
- प्रयोग होने वाली सामग्री की गुणात्मकता जैसे–बुग्गी और साज
- पिछले दिनों कुछ अंचल में की गयी कामकाजी पशुओं का कल्याण स्तर मूल्यांकन का परिणाम।

इन्होंने पशु के समूह को अलग–अलग कार्ड पर लिखा और जमीन पर एक पंक्ति में बायें से दायें व्यवस्थित किया। पंक्ति का बायां छोर कम कल्याण जोखिम और दांया छोर उच्च कल्याण जोखिम का था। कहां कौन कार्ड उपयुक्त है इस पर उपर लिखित आधार पर बहस के बाद तय किया गया (देखे चित्र–नीचे)। बहस का आधार समूह का व्यक्तिगत अनुभव था जिसे विभिन्न अंचल के वस्तुनिष्ठ पशु–कल्याण के उदाहरणों को प्रस्तुत कर प्रमाणिक बनाया गया था। प्रतिभागियों ने पशु समूह को मुख्य तीन वर्ग–उच्च जोखिम, मध्यम जोखिम एवं उच्च जोखिम में बांटा। लेमो अंचल वालों ने बुग्गी खींचने वाला गधा और खच्चर, अनाज मण्डी में काम करने वाला घोड़ा और खच्चर और बुग्गी से पत्थर एवं पानी ढोने वाला गधा से उच्च जोखिम वर्ग में रखा। मध्यम जोखिम वाले वर्ग में घरेलू काम के लिए बुग्गी खींचने और कूड़ा इक्ट्ठा करने वाला गधा को रखा गया। निम्न जोखिम वाले श्रेणी में चढ़ने एवं बच्चा लेने वाला घोड़ा, एम्बूलेंस वाला घोड़ा और पीठ पर घरेलू काम करने वाले गधा को रखा गया।

चित्रः जोखिम की स्थति वाले पशु समूह की पहचान

इस अभ्यास ने ब्रूक इथियोपिया को समझौता का आधार प्रदान किया कि पशु कल्याण में सुधार के लिए किस पशु को लक्ष्य किया जाये और सुधार कैसे किया जाये।

कैसे काम करें का निर्णय करनाः हस्तक्षेप पद्धति/प्रणाली

अब तक हम लोगों ने अपने परियोजना क्षेत्र के कामकाजी पशुओं को तीन मुख्य श्रेणी–उच्च जोखिम, मध्यम जोखिम एवं निम्न जोखिम में वर्गीकृत कर लिया है। सम्भवतः उच्च जोखिम श्रेणी वाले पशु सबसे जरूरतमंद पशु हैं जिसके साथ आपकी परियोजना प्राथमिकता के साथ काम करना चाहेगी। ऐसी स्थिति में उतने ही संसाधन में सम्भवतः बहुत कम पशु होगा, जिसके साथ आप काम करेंगे। इसलिए सर्वाधिक जरूरतमंद पशुओं को लक्ष्य करते समय यह आवश्यक है कि संस्था की प्राथमिकता और रणनीति एकदम स्पष्ट हो।

जोखिम के वर्गीकरण का उपयोग करते हुए कामकाजी पशुओं के कल्याण स्तर में सुधार के लिए काम की सघनता के आधार पर तीन स्तर निर्धारित करते हैं। किस समुदाय के साथ कितनी सघनता के साथ काम करना है यह पशु के कल्याण स्तर और पशु मालिकों के जीविका स्तर के आधार पर तय किया जाता है।

सघन पद्धति

पशु कल्याण में सुधार लाने के लिए सघन रूप से काम करने की प्रक्रिया सबसे अधिक प्रभावी है। जहां अधिक पशु संख्या, उच्च जोखिम स्तर और पशु मालिक के जीविका का निम्न स्तर एक साथ मौजूद हो वह क्षेत्र इस श्रेणी के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। उदाहरण के तौर पर निर्माण उद्योग में काम कर रहे पशु और पशुमालिक, जैसे भारत और मिस्त्र के ईंट भटटा। एक सहजकर्ता के रूप में सघन रूप में कार्य के लिए यह आवश्यक है कि आप प्रत्यक्षतः और जल्दी जल्दी पशु मालिक से मिलें और कल्याण स्तर में सुधार के लिए समूह गठन और सामूहिक गतिविधि को माध्यम बनाऐं। आपकी मदद से, समूह के सदस्य सामूहिक रूप से निम्नलिखित काम कर सकते हैं।

- पशु के कल्याण की समझ विकसित करने एवं स्वंय द्वारा पशु के प्रबन्धन एवं रख–रखाव में सुधार।
- इस क्षेत्र में मौजूद सेवा–प्रदाताओं की गुणवत्ता, उपलब्धता और पहुंच में सुधार।

इस पद्धति की मूल अवधारणा समुदाय को इस प्रकार से सक्षम करना है कि पशु कल्याण में स्थायी सुधार के लिए वे सामूहिक रूप से काम कर सके। यह आपसे और समुदाय दोनों से समय, पहल और प्रतिबद्धता की अपेक्षा रखती है लेकिन इसके परिणाम काफी उत्साहवर्धक हैं। इस पद्धति के विभिन्न चरणो की विस्तृत व्याख्या अध्याय –4 में की गयी है।

विरल पद्धति

विरल पद्धति उन समुदाय के साथ अपनायी जाती है जहां आप या आपकी संस्था किन्हीं सीमा की वजह से सघन पद्धति नहीं अपना सकते हैं। ये सीमाएं समय की, संसाधन की या पशु एवं उसके मालिक तक पहुंच सकने की हो सकती है। इस पद्धति में हम लक्ष्य समूह के साथ अप्रत्यक्ष रूप से काम करते हैं। यहां हम पहले से मौजूद संस्था–जैसे महिला समूह, धार्मिक समूह, संगठन, विद्यालय की गतिविधि में अपने संदेशों को शामिल करते हैं। यहां पशु कल्याण संदेश देने के लिए रेडियो, पोस्टर आदि माध्यम का भी उपयोग किया जा सकता है। यह पद्धति दोनों, अधिक और कम पशु संख्या वाले, जगहों पर अपनाया जा सकता है। समूह के माध्यम से अपने पशु के प्रति व्यवहार परिवर्तन के लिए किये गये काम की अपेक्षा संदेश प्रेषण कम प्रभावी होता है। इसलिए, यह उस क्षेत्र के लिए अधिक उपयुक्त है जहां पशु निम्न जोखिम श्रेणी के हों और पशु मालिक के जीविका की स्थिति अपेक्षाकृत कम दयनीय है। हमने पाया है कि ऐसी स्थिति उन पशुओं के साथ है जिनका उपयोग कभी–कभी खेती या घरेलू काम के लिए होता है और अक्सर यह ग्रामीण क्षेत्र में होता है। इस पद्धति के लिए हस्तक्षेप रणनीति का वर्णन अध्याय–5 में किया गया है।

अर्द्ध सघन पद्धति

व्यवहार में, उन सभी क्षेत्रों में जहां आप उच्च जोखिम श्रेणी वाला पशु पाते हैं वहां काम नहीं कर पाते हैं । इसका कारण संस्था की सीमा या गांव की बिखरी हुई बसावट हो सकती है जिसमें समूह गठन करके सामूहिक गतिविधि कर पाना सम्भव नहीं होता। अर्द्ध सघन पद्धति एक मध्य मार्गी पद्धति है। यह सघनता से कर रहे काम के अधिकतम उपयोग करने की अवधारणा पर निर्भर है। इसमें सघन पद्धति से काम कर रहे गांव का प्रभाव नजदीक के अन्य उच्च जोखिम श्रेणी वाले क्षेत्र पर पड़ता है। इस पद्धति में आप प्रत्यक्ष रूप से गांव में काम करते हैं लेकिन गांव में जाने की आवृति अपेक्षाकृत कम होती है। यह पद्धति, गांव से गांव का भ्रमण एवं प्रतियोगिता जैसे गतिविधियों के द्वारा सघन पद्धति से काम वाले क्षेत्र के पशु मालिकों से सीखने–सिखाने का अवसर पैदा करने के मूलभूत सिद्धान्त पर आधारित है। साथ ही सघन पद्धति के क्रम में जुड़े सेवा प्रदाताओं का भी जुड़ाव करवाते हैं।

हस्तक्षेप उपक्रम के सम्बन्ध में टिप्पणी

काम करने को पद्धति भौगोलिक सीमा के व्यक्त नहीं करता है। एक ही भौगोलिक क्षेत्र में आप विभिन्न जोखिम श्रेणी के साथ अलग अलग पद्धति से काम कर सकते हैं। ये पद्धतियां एक दूसरे से सर्वथा पृथक नहीं हैं बल्कि एक दूसरे के लिये परस्पर पूरक हैं पशु मालिकों के किस समूह के साथ और कैसे काम करना है इसका निर्णय स्वविवेक और संस्था की क्षमता एवं दिशा–निर्देश के अनुरूप ही लें।

उपरोक्त पद्धति विभिन्न देशों और अनेक पर्यावरणीय एवं जीविका सम्बंधी कार्य के अनुभवों पर आधारित है। यद्धपि हरेक जगह अपवाद की गुंजाइश होती है। उदाहरण के तौर पर स्थानीय सरकारी नीति और उसके क्रियान्वयन में परिवर्तन हो और पशु–कल्याण के हित में प्रसार–प्रचार माध्यम का काफी उपयोग होने लगे तो सम्भव है कि परिवर्तन दिख जाऐ। ऐसी स्थिति में विरल पद्धति उच्च कल्याण जोखिम श्रेणी के पशु में भी सुधार ला सकती है।

अपवादों, के बावजूद, सामान्य स्थिति में यदि आप उच्च कल्याण जोखिम वाले श्रेणी के पशु में सुधार लाना चाहते हैं तो आपको ऊपर वर्णित सघन पद्धति और अध्याय–4 में वर्णित पद्धति के अनुसार कोशिश करना चाहिए।

अध्याय–4

सामूहिक कार्य के लिए सहज करना

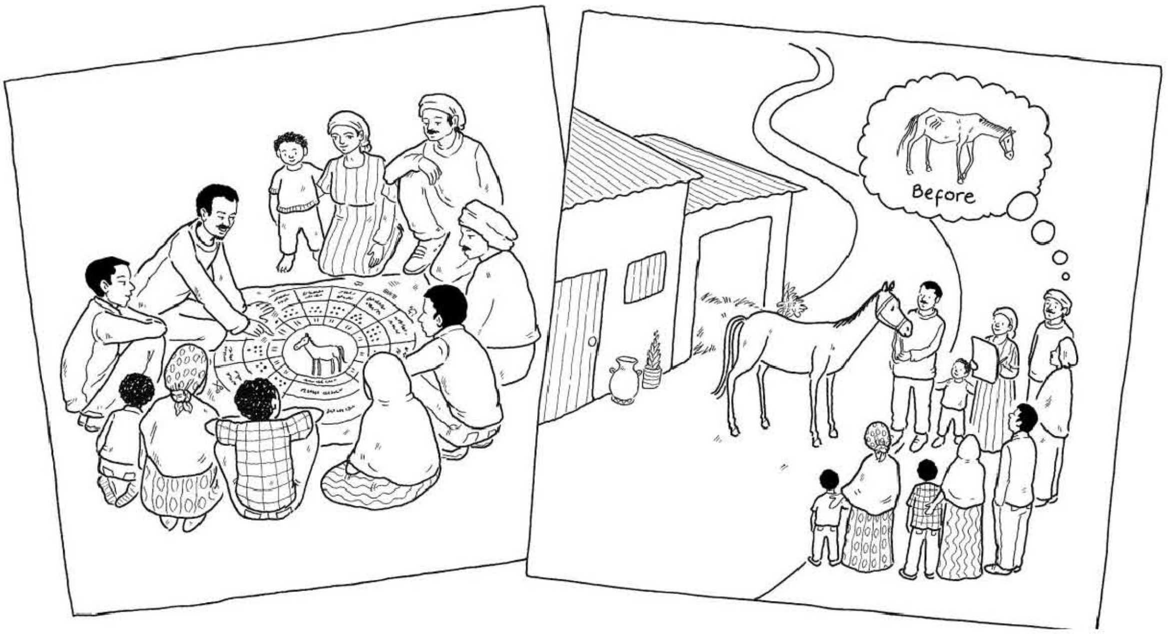

इस अध्याय में आप क्या पाऐंगे

इस अध्याय में, अपने कामकाजी पशु के कल्याण स्तर में सुधार के लिए पशु मालिक समुदाय द्वारा सामूहिक कार्य को सहज करने की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है। सहभागी प्रक्रिया के उपचरण सहित छः चरणों के सम्बन्ध में संक्षिप्त में बताया गया है। आगे सभी चरणों का विस्तार से वर्णन किया गया है एवं अपनाये जा सकने वाली प्रक्रिया को भी दर्शाया गया है ऐसा नया या पूर्व प्रयुक्त सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन (पी0आर0ए0) तकनीक, जो उपयोगी हो उसे उसके चरणों में बताया गया है इन सहभागी क्रिया तकनीक का वर्णन विस्तार से पशु कल्याण तकनीक पेटी भाग–3) में दिया गया है।

यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक चरण में दिए गये सभी तकनीकों का उपयोग किया ही जाये। प्रारम्भ मे ही अधिक तकनीकों का प्रयोग भ्रम और ऊब का कारण बन सकता है। परिणामतः क्रमशः रूचि में कमी, कम उपस्थिति और कम सहभागिता जैसी स्थिति बन सकती है। इसलिए तकनीकों का चयन सावधानी पूर्वक करें। इस बात को हमेशा ध्यान रखें कि सहजकर्ता के रूप में आपका लक्ष्य किसी खास तकनीक या किसी खास क्रम को पूरा करना नहीं है। बदलाव के लिए समुदाय को संगठित करने का पूर्व अनुभव आपको उद्‌देश्य विशेष के उपयुक्त तकनीक का चयन करने में मदद करेगा जिससे आप समुदाय को विचार– विमर्श और विश्लेषण के लिए प्रेरित करके सामूहिक गतिविधि के लिए वातावरण का निर्माण कर सकते है। यदि आपको सहज करने का पूर्व अनुभव नहीं है या काफी कम अनुभव है तो प्रक्रिया को सहज/आरम्भ करने से पहले आपको इस पुस्तक के अन्त में दिए सन्दर्भ और पाठ्‌य सामग्री की सूची के सामग्रियों को पढ़ना, प्रशिक्षण लेना और अनुभवी सहजकर्ता के साथ काम करना चाहिए।

अध्यायों को व्यवहारिक निर्देशिका की तरह व्यवस्थित किया गया है। यदि आप कम अनुभवी है तो समुदाय के साथ , वर्णित चरणों का क्रम से उपयोग कर सकते हैं। अनुभवी सहजकर्ता अपने अनुभवों के आधार पर प्रक्रिया का चयन कर सकता है या नये सहभागी तकनीक का प्रयोग कर सकता है ताकि पशु कल्याण में सहज तरीके से बदलाव लाया जा सके।

कल्याण–स्तर में सुधार के लिए सामूहिक कार्य की प्रक्रिया का खाका नीचे चित्र में दिखाया गया है। विभिन्न अवस्था एवं चरणों का विस्तृत वर्णन अन्य अध्यायों में किया गया है। केस स्टडी D सामुहिक कार्य हेतु समूह के साथ अपनायी जा रही पूरी प्रक्रिया का एक चित्र प्रस्तुत करता है।

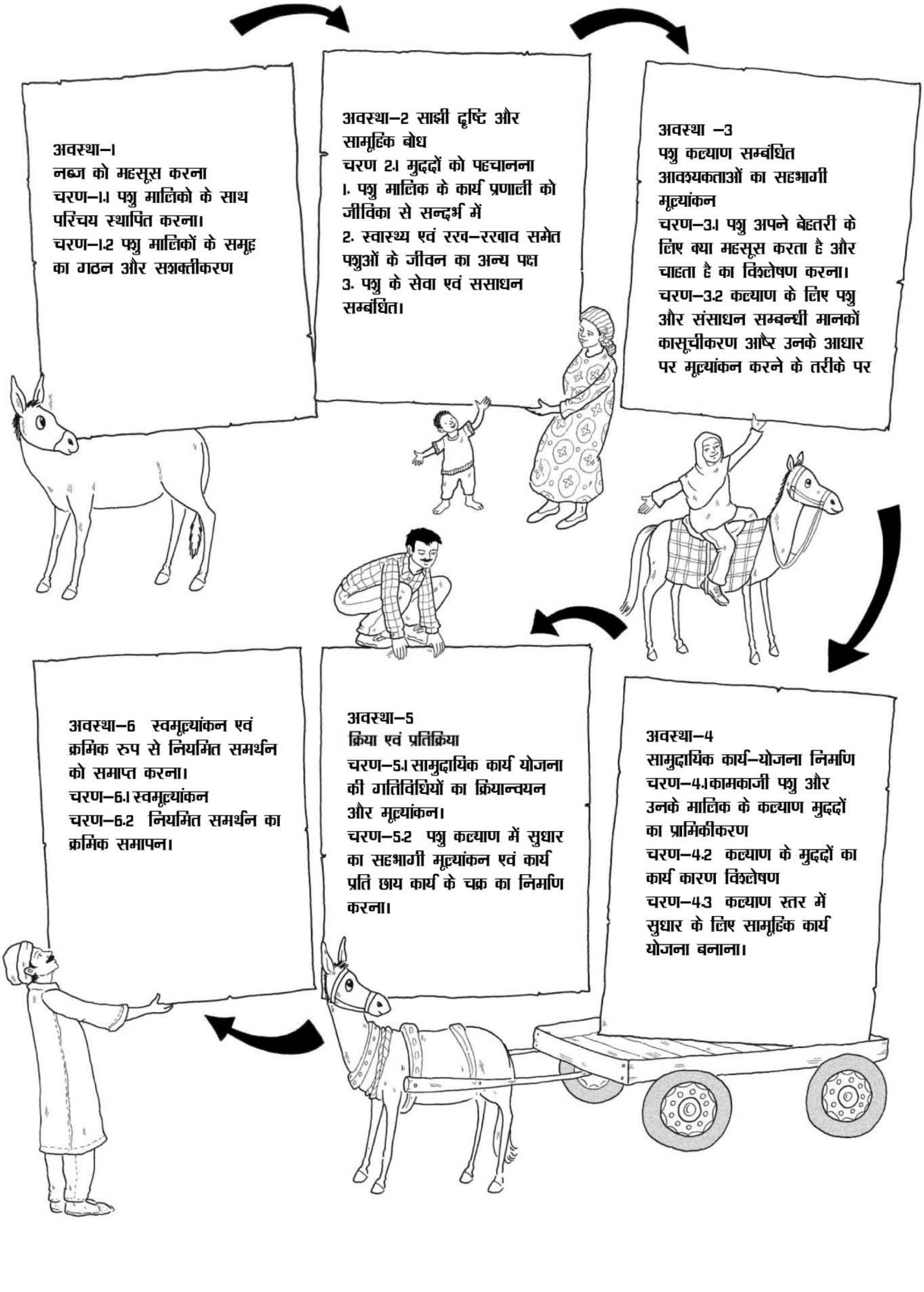

टेबल 4.1 कामकाजी पशुओं के कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए सामूहिक कार्यक्रम की एक सम्पूर्ण रूपरेखा

केस स्टडी – D कामकाजी पशु के कल्याण स्तर में सुधार के लिए सामूहिक गतिविधि

स्त्रोतः अनूप सिंह एवम् शिशुपाल सिंह, बागपत,उत्तर प्रदेश, ब्रुक ईण्डिया, अक्टूबर 2009

जून 2007 में ब्रुक इण्डिया के बागपत जिला इकाई ने गलहैता गांव जो कि मुख्यालय के काफी दूर अवस्थित था, में काम प्रारम्भ किया। गांव में बर्तन बनाने वाले समुदाय के पास करीब 14 कामकाजी घोड़े और 6 कामकाजी खच्चर थे। ब्रुक इण्डिया के सहजकर्ता शिशुपाल सिंह ने पशु मालिक ग्राम प्रधान और समुदाय के अन्य प्रतिनिधि व्यक्तियों से मुलाकात के लिए अनेक बार गांव गये। 18 जून को पशु मालिकों की एक आम सभा आयोजित की गयी। इस बैठक के दौरान यह निश्चय किया गया कि स्वयं एवं पशु की स्थिति विश्लेषण के लिए प्रत्येक माह नियमित तौर पर एक बैठक की जायेगी।

सबसे पहले समुदाय ने एक मानचित्र अभ्यास (टूल किट– टी1) में समुदाय की स्थिति को दर्शाया जिसमें प्रत्येक परिवार में पशु संख्या, मुख्य सामुदायिक सम्पत्ति, टायर मरम्मत की दुकान, दवाखाना, विद्यालय, डाकघर और पशु से सम्बन्धित अन्य सेवा प्रदाताओं की अवस्थिति शामिल की गयी थी। समूह ने मौसमी विश्लेषण (टी–6) द्वारा साल भर में मजदूरी की उपलब्धता एवं कार्यभार में अन्तर, आय–प्रवाह, पशु में होने वाली सामान्य बीमारी और चारे की उपलब्धता को दर्शाया। फिर शिशुपाल ने समूह के साथ चपाती चित्रण (टी–3) किया जिसमें अस्पताल, बाजार, चारा बेचने वाला, नालबन्द जैसे दैनिक जीवन में उपयोग की जाने वाली सुविधा, सुविधा प्राप्त करने करने के लिए तय की जा रही दूरी, समय आवृत्ति और उनके जीवन में उस सुविधा के महत्व का विश्लेषण किया गया। मैट्रिक्स श्रेणीकरण (टी–9) द्वारा पशु की बीमारियों को और गहराई से विश्लेषण किया गया जिसमें घोड़े और खच्चरों को प्रभावित करने वाली बीमारियां और पशुमालिकों द्वारा ऐसे समय में किस प्रकार पशु चिकित्सा सेवा प्राप्त की जाती है, शामिल था।

इस समय तक समूह की एक साफ समझ बन चुकी थी कि कौन से मुद्दे पशु कल्याण और उनकी जीविका को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। कुछ गतिविधि पर सहमति भी थी। उदाहरण के लिए शुरू की तीन मासिक बैठक के दौरान एक दिन एक पशु मालिक ने अपने रिश्तेदार के गांव में घोड़े में हुई बीमारी हिरण बयाल के बारे में चर्चा की। शिशुपाल ने उसके लक्षणों के बारे मे पूछा और समूह ने उसकी टिटनेस के रूप में पहचान की। समूह में इस विषय पर चर्चा हुई कि अगर यह बीमारी उसके गांव में हो तो क्या हो सकता है। टिटनेस से बचाने के लिए वे क्या कर सकते हैं। इस पर चर्चा के लिए पशु कल्याण लागत–लाभ विश्लेषण (टी–15) टूल का प्रयोग किया गया। शिशुपाल ने यह देखा कि गलहैता गांव के सभी पशुओं को सामूहिक रूप से टिटनेस प्रतिरोधी टीका लगवाने की पहल इन्ट्री प्वाइन्ट एक्टीविटी के रूप मे की जा सकती है। पशु कल्याण लागत–लाभ विश्लेषण के आधार पर मालिकों ने सामूहिक कार्य किया। सभी ने पैसा इकट्ठा किया, दवा की दुकान से दवा खरीदा और स्थानीय सेवा प्रदाता को बुलाकर टीकाकरण करवाया। सभी ने अपने सामूहिक ताकत को पहचाना और पशु हित में अन्य सामूहिक कार्य के प्रति उत्साहित हुए।

पैसों के सामूहिक योगदान के समय की चर्चा ने समूह सदस्य के आय–व्यय विश्लेषण के लिए एक अवसर बनाया। जनवरी 2008 में एक बैठक में दौरान शिशुपाल ने ऋण विश्लेषण अभ्यास (टी–13) किया। जिसके माध्यम से मालिकों को वर्तमान ऋण व्यवस्था की हानि और लाभ एवं उससे उसके सामूहिक और पशु के कल्याण स्थिति पर प्रभाव के बारे मे काफी समझ बनी। पशु मालिकों में से कई मालिकों ने स्थानीय साहूकार से 5 रूपये प्रतिमाह या 60 रूपये प्रतिवर्ष ब्याज की दर से ऋण लिया था। एक घोड़ा पालक लामचन्द ने अपने और गॉव के पशुओं के लिए आवश्यक ऋण की जरूरत पूरा करने के लिए स्वयं सहायता समूह का गठन किया जिसमें प्रत्येक सदस्य प्रतिमाह 100 रूपये का योगदान देते थे।

महिलायें, जो हमेशा गांव की बैठक में हिस्सा लेती थी, भी महिला स्वयं सहायता समूह बनाने के लिए उत्साहित हुई। पुरूष समूह की कुछ बैठको में शामिल होने के बाद इन लोगों ने 11 सदस्यों का एक अलग महिला स्वयं सहायता समूह का गठन किया और 50 रूपये प्रतिमाह बचत करने लगी।

लगातार चल रहे स्थिति विश्लेषण के एक हिस्से के रूप में पुरूष समूह ने नालबन्द, बाल काटने वाला और बुग्गी मरम्मत करने वाले की सेवा के बारे में सोचना प्रारम्भ किया। उन्होने पहले बनाये गये चपाती चित्रण का उपयोग किया। साथ ही गतिशीलता चित्रण (टी–2) और निर्भरता विश्लेषण (टी–12) को मिलाकर इन सेवा प्रदाताओं से लाभ और चुनौतियों का विश्लेषण किया। निर्भरता विश्लेषण ने समूह को प्रत्येक सेवा प्रदाताओं पर उनकी निर्भरता को समझने में मदद की। इसके परिणामस्वरूप समूह ने अपनी बैठक में सेवा प्रदाताओं को आमंत्रित किया और उन

समस्याओं पर चर्चा की, जिससे वे जूझ रहे हैं और बेहतर सेवा के लिए समझौता भी किया। शिशुपाल ने समूह की

एक बैठक में पशु चिकित्सक को आमंत्रित किया जिसने पेट दर्द और सर्रा पर विस्तार से समूह के साथ चर्चा की। इन्होने बीमारी के लक्षण, कारण और सम्बन्धित बचाव को जानने के लिए थ्री पाइल सोर्टिंग (टी–23) टूल का उपयोग किया।

मार्च तक समूह ने सामूहिक गतिविधि की सफलता का अनुभव किया था और पी0 आर0 ए0 टूल्स के उपयोग से अपनी स्थिति के सम्बन्ध में इनकी बेहतर समझ बन चुकी थी। शिशुपाल ने यदि मैं घोडा होता (टी–17) के माध्यम से गलहैता गांव के पशुओं के वर्तमान स्थिति की और गहनता से विश्लेषण किया। उसने प्रतिभागी से पूछा कि यदि मैं, आप घोड़ा होते तो अपने मालिक से क्या अपेक्षा करते ?

समूह ने 14 अपेक्षाओं की सूची बनायी। तब शिशुपाल ने पूछा इनमें से आपकें घोड़े की कितनी इच्छाएं पूरी हो रही हैं ? जवाब वर्तमान व्यवहार एवं स्थिति के आधार पर देना था। बाद में प्रत्येक ने कम अंक पाने वाले अपेक्षाओं के सम्बन्ध/कारण पर चर्चा की।

अप्रेल में इस बैठक की अगली कड़ी में शिशुपाल ने यदि मैं घोडा होता अभ्यास को दिखाकर पूछा कि अगर आपके घोडे की अपेक्षाओं को पूरा नही किया गया तो उस पर क्या प्रभाव पडेगा ? समूह ने पानी की कमी, कमजोरी, चमडी में कीडा, गंदा शरीर, काम करने के लायक नही रहेगा। जैसे प्रभावों की पहचान की। शिशुपाल ने पूछा आप इन चीजों को पशु पर कैसे देखेगें ? प्रतिभागियों ने 16 चिन्ह बतायें जो पशु के शरीर और व्यवहार से दिखेगा। जैसे– पीठ पर घाव, खुर में दरार, जोड़ो में सूजन, हड्डी और पसलियों का दीखना और सक्रियता में कमी ।

अगले माह की बैठक में शिशुपाल ने पूछा कि पिछली बैठक में तय चिन्हों के आधार पर वे अपने पशुओं को किस प्रकार माप सकते हैं ? एक लम्बी चर्चा हुई जिसमें सभी अपने पशु को पड़ोसी के पशु से बेहतर मान रहे थे। राजपाल इस लम्बी चर्चा से उत्तेजित हो गया और सलाह दी कि चलकर सभी घोड़ा और खच्चरों को देख लिया जाये। समूह ने तय किया कि तय सभी चिन्हों के आधार पर वे सभी पशुओं को देखेगें और अंक देगें। उन्होनें 5 और आधारों को जोड़ दिया जो सेवाप्रदाता और संसाधन के उपयोग से सम्बन्धित था और स्थिति विश्लेषण के क्रम में सामने आया था। सभी 21 कल्याण मानको के लिए ट्रेफिक लाईट स्कोरिंग प्रणाली के सम्बन्ध में सर्व सम्मति बनी। सभी मानकों के सन्दर्भ में हरा –ठीक , पीला–मध्यम और लाल–खराब स्थिति को इंगित करने के लिए तय किया गया।

समूह ने पहला पशु कल्याण भ्रमण (टी–22) तीन दिनों में पूरा किया। इस क्रम में कल्याण सम्बन्धित अनेक समस्याएं सामने आयी– गंदी आंखे, शरीर के विभिन्न हिस्सों में जख्म, घूटनों में सूजन, भयभीत पशु, गंदी त्वचा, गंदा और बदबूदार खुर, खराब साज, दागने का निशान और खराब नालबन्दी। इस भ्रमण में हिस्सा लेने के कारण कुछ पशु मालिकों को यह महसूस हुआ कि उनके पशु के कल्याण की स्थिति अच्छी नहीं है और उन्होंने तत्काल ही उसे ठीक करने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया।

अगली बैठक में ट्रैफिक लाइट चार्ट का विश्लेषण किया गया और शिशुपाल ने पशु कल्याण के लिए चिन्हित मुद्दों पर एक–एक करके पशु कल्याण, कारण–प्रभाव चित्रण (टी–26) किया। इस अभ्यास ने समूह के सदस्यों को मुद्दों की गम्भीरता और उसके कारणों को समझने में मदद की। उदाहरण के तौर पर उन्होंने जाना कि बुग्गी का संतुलन और अधिक वजन लादना घाव का कारण है। उन लोगों ने यह निश्चय किया कि सभी मुद्दों पर कारण–प्रभाव चित्रण और अन्य स्थिति विश्लेषण के आधार पर कार्य–योजना बनायी जायेगी। प्रत्येक मुद्दा जो उनके पशु के कल्याण को प्रभावित करता था, को दूर करने के लिए क्या किया जायेगा ? कौन करेगा ? कैसे इसका अनुश्रवण किया जायेगा और किस समय अन्तराल पर किया जायेगा। यह योजना बनायी गयी। वे जो करेंगे उसे व्यवस्थित रूप से चार्ट–पेपर पर दर्ज करना भी तय किया गया। योजना के क्रियान्वयन के 3 माह बाद इन लोगों ने शिशुपाल के साथ फिर से पशु भ्रमण किया और ट्रैफिक लाइट चार्ट पेपर पर अपने निष्कर्षो को दर्ज किया। उन्होंने चार्ट पेपर का विश्लेषण किया और निष्कर्ष के अनुरूप योजना को संशोधित किया।

पशु कल्याण योजना निर्माण के एक वर्ष बाद अगस्त 2009 में समूह सदस्यों द्वारा पिछले वर्ष के मूल्यांकन के लिए एक बैठक आयोजित की गयी। इन लोगों ने पहले और आगे विश्लेषण अभ्यास (टी–11) किया ताकि इस अवधि मे आये बदलाव को समझा जा सके। साथ ही, योजना को और बेहतर बनाये जा सकने के विकल्प को ढूंढा जा सके। इन्होंने अब तक चार बार किये जा चुके पशु भ्रमण के ट्रैफिक लाइट चार्ट का भी विश्लेषण किया। इससे इन्होंने देखा कि इस समय में पशु के कल्याण की स्थिति में काफी बदलाव आया है। अधिक वजन लादने की समस्या पूरी तरह नियंत्रित थी और इस बीच पशु में बीमार होने की संख्या में भी कमी आयी थी। इन्होने यह भी पाया कि पशु कल्याण की स्थिति स्थायी नहीं है और मौसमी अन्तर इस पर प्रभाव डालते हैं। इस जानकारी ने इन्हें भविष्य का अंदाजा करके योजना निर्माण की ओर अग्रसर किया। समूह ने यह भी समझा कि अच्छी स्थिति उनके परिवारिक स्थिति में भी असर डालता है और गलहैता के पशु मालिकों की स्थिति पहले से अच्छी हुई है।

अक्टूबर की बैठक में पशु मालिकों के समूह ने निर्णय लिया कि नियमित प्रतियोगिता की जायेगी और उस पशुमालिक को पुरस्कृत किया जायेगा जो अपने पशु कल्याण में सर्वाधिक सुधार लाया है। इस निर्णय के सम्बन्ध में इन्होने शिशुपाल से विमर्श किया और प्रक्रिया का सुधारते हुए ट्रैफिक लाइट की जगह नम्बर/स्कोरिंग प्रणाली तय की।

इससे ये छोटे–छोटे बदलाव को भी मूल्य देने में सक्षम हुए और यह तय करना भी आसान हुआ कि किसने पशु में सर्वाधिक अन्तर लाया है । पुरस्कार पाने की लालसा से पशुमालिक योजना को और अधिक तीव्रता से लागू करने लगे और पशु के खराब कल्याण को दर्शाने वाले लक्षणों को खत्म करने के प्रति अधिक सक्रिय हुए।

इस समय तक गलहैता के स्वयं सहायता समूह अपना निर्णय स्वयं ले रहा था और प्रत्येक बैठक में पशु पर स्वीकारात्मक अन्तर को देख रहा था। शिशुपाल के साथ बैठक कर इन लोगो ने उन स्थिति/मानकों को चिन्हित किया जिसमें बगैर शिशुपाल के यह स्थिति और प्रक्रिया जारी रहे। इन मानकों के आधार पर शिशुपाल के निष्काशन के लिए योजना बनायी गयी। अब परस्पर समझौता के आधार पर बागपत इकाई क्रमिक रूप से अपने सहयोग को कम कर रही है और शिशुपाल गलहैता तभी जाते हैं जब उन्हें वास्तव में कोई जरूरत हो या किसी सफलता पर मनाये जा रहे उत्सव में शामिल होने का निमंत्रण हो।

प्रक्रिया कितना समय लेगी और कब आप पशु के कल्याण में परिवर्तन को देखना प्रारम्भ करेंगे ? हम लोगों ने देखा है कि छोटे–छोटे बदलाव चरण –1 'नब्ज को महसूसना' एवं चरण –2 'साझी दृष्टि और सामूहिक बोध' के समय से ही प्रारम्भ हो जाता है। मुख्य रूप से दीखने योग्य परिवर्तन तीसरे चरण 'सहभागी पशु कल्याण–आवश्यकता मूल्यांकन' और उसके बाद दिखता है। इस चरण में समूह पशु कल्याण की जरूरत का मूल्यांकन करने लगता है और बदलाव के लिए एक योजना तय करता है। पहले दो चरणों में समूह की क्षमतावृद्धि के लिए किये गये आपके काम का सीधा परिणाम है इसलिए यदि परिवर्तन छोटा दिख रहा है, फिर भी बाद में पशु के हित में बड़े लाभ के लिए आपको शुरूआती प्रक्रिया पर ध्यान देना और उसे पूरा करना आवश्यक है।

अलग–अलग सन्दर्भ और अलग–अलग पशु मालिकों के समूह के साथ पहल करने के आधार पर यह प्रक्रिया लगभग 36 माह का समय लेता है। यह माना गया है कि इस समय एक साथ आप कई अन्य समूह के साथ भी काम कर रहे है। पहली अवस्था ''नब्ज को महसूस करना'' एवं दूसरी अवस्था ''सम्मिलित दृष्टि और सामूहिक सोच'' लगभग 6 माह का समय लेता है। तीसरे चरण में साल के अन्त होने तक समुदाय कार्य योजना तैयार कर लेती है। अगले 18 माह में (हस्तक्षेप के 30 माह तक) योजना के क्रियान्वयन और ''क्रिया एवं प्रतिक्रिया'' (अवस्था–4) प्रक्रिया के दौरान समूह अपनी क्षमता को विकसित करता है। हस्तक्षेप प्रारम्भ करने के 18 महीने के बाद एक मध्यकालिक विकास पुनरीक्षण किया जा सकता है। लगभग 36 माह बाद समूह को इतना सशक्त हो जाना चाहिए कि आप अपने हस्तक्षेप को कम कर सके और समूह को स्वयं सतत् रूप से पशु कल्याण के लिए कार्यरत रहने की क्षमता के साथ छोड़ देना चाहिये।

अवस्था – 1 – नब्ज को महसूस करना

सामूहिक कार्य हेतु सुगमीकरण के प्रथम भाग को हम ''नब्ज को महसूस करना'' कहते है। इस भाग का उद्देश्य, समुदाय को बेहतर ढंग से समझना, एक दूसरे का विश्वास जीतना तथा एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना जिसमें समुदाय बदलाव हेतु तैयार हो। यह भाग एक सामूहिक लक्ष्य के प्रति समुदाय को एकजुट करता है तथा उनके पशुओं में धनात्मक बदलाव के लिए उनकी योग्यता के अनुसार उनकी आत्मविश्वास बढ़ाकर उन्हें एक समूह के रूप में कार्य करने हेतु प्रेरित करता है। इस प्रथम भाग के प्रमुख चरण निम्नलिखित है :–

चरण – 1.1 : पशुपालक समुदाय के साथ सम्बन्ध बनाना :–

''नब्ज को महसूस करना'' का पहला हिस्सा पशुपालक समुदाय को जानना है।

- अपना परिचय क्षेत्रीय कार्यकर्ता के रूप में दें, कि आप एक ऐसी संस्था से हैं, जो संस्था पशु कल्याण में सतत् सुधार के लिए समुदाय आधारित समूह बनाने में स्थानीय समुदाय की मदद करती है तथा उन्हें एक जुट करती है।
- लोगों से उनके जीवन, उनकी समस्याओं, स्थानीय संस्कृति एवं उनकी रूचि के बारे में पूछें।
- चर्चा या बातचीत के लिए ग्राम की दुकानों एवं बैठक के स्थानों का भ्रमण करें।
- गाँव के प्रमुख व्यक्तियों तथा अन्य इच्छुक व्यक्तियों के साथ बैठक करें, जैसे कि – विद्यालय के शिक्षक, धार्मिक नेता तथा अन्य कोई जोकि शुरूआत से समुदाय को इकट्ठा करने में आपकी मदद कर सकता है।
- पशुपालक परिवार के साथ अपने सम्बन्ध को मजबूत करें, परिवार के महिलाओं एवं बच्चों के साथ भी संबंध मजबूत करें जोकि घर पर पशु प्रबन्धन के लिए जिम्मेदार है।
- स्थानीय पशु चिकित्सक, पशु स्वास्थ्य सेवा प्रदाता, दवा की दुकान वाले, नालबन्द या अन्य कोई भी जो पशु के साथ जुड़ा हो, की पहचान करें तथा उनसे बात करें।

अवस्था – 1 – नब्ज को महसूस करना

चरण 1.1– पशु पालक समुदाय के साथ सम्बन्ध बनाना।

उद्देश्य

- विश्वास एवं आपसी भरोसा बनाने के लिए।
- समूह गठन की प्रक्रिया की शुरूआत के लिए

प्रक्रिया–

- समुदाय को जाने तथा समझें।
- समूह गठन की शुरूआत के लिए शुरूआती गति–विधियाँ करें।

टूल्स–(देखे–टूल किट)–

- मैपिंग (टी1)
- दैनिक गतिविधि सूची (टी4)
- लैंगिक गतिविधि विश्लेषण (जेन्डर) (टी–5)
- ऐतिहासिक समय रेखा (टी 7)

पशु कल्याण संबंधी सांप सीढी खेल (टी–16)

चरण 1.2– पशु मालिकों का समूह गठन एंव मजबूती करण।

उद्देश्य

- पशु मालिकों तथा उपयोगकर्ताओं को संगठित करना।
- समूह तथा स्थानीय संस्थाओं को मजबूत करना।

प्रक्रिया–

- स्थानीय समुदाय समूह की पहचान तथा गठन।
- समूह का निर्माण करना तथा मजबूत करना।

टूल्स–(देखे–टूल किट)–

- मौसमी विश्लेषण (टी 6)
- निर्भरता विश्लेषण (टी12)
- साख विश्लेषण (टी–13)

टेबल 4.2 प्रक्रिया परिदृश्य, अवस्था –1 – नब्ज महसूस करना

लोगों के दैनिक गतिविधियों में भाग लें, या समुदाय के निमन्त्रण पर उनके महत्वपूर्ण घटनाओं में भाग लें, जैसे कि – धार्मिक संस्कार, अंतिम संस्कार, त्यौहार आदि। यह आपको समुदाय को समझने में मदद करेगा तथा आपको उनके करीब ले जायेगा। किसी भी विशेष पशु कल्याण संबंधी मुद्दे पर पशु मालिकों को निर्देशित करने से पूर्व हमें महत्वपूर्ण मुद्दे पर उनकी इच्छा को भी समझना चाहिए, जोकि उनके पशुओं के कल्याण में दूरगामी प्रभाव डाल सकता है। सामूहिक कार्य कभी भी अपने आप नहीं होता है। परेशानी या संकटकाल में सामूहिक कार्य करने की जरूरत महसूस होती है।

समुदाय की जरूरतों एवं आशाओं को समझने की आपकी योग्यता, बदलाव लाने के लिए आपको उत्प्रेरक के रूप में कार्य करने में सहायक हो सकती है। पशु मालिकों के जीवन की कुछ समस्यायें सीधे तौर पर उनके पशुओं के कल्याण के प्रभावित नहीं करती हो परन्तु उन्हें समझने से समुदाय में आपकी स्वीकार्यता एक सहायक तथा शुभचिंतक के रूप में बढ़ सकती है।

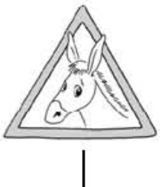

चेतावनी बॉक्स

इस दौरान (जोकि एक से तीन माह का समय हो सकता हैं।) यह महत्वपूर्ण हैं कि आप कोई भी शिक्षाप्रद या कोई अन्य कार्यक्रम संचालित न करें।

क्यों ?

- स्थानीय समस्याओं या सन्दर्भो को समझे बिना कोई भी कार्यक्रम शुरू करना, समुदाय के हित में गलत हो सकता है।
- समुदाय के साथ बिना अच्छा संबंध तथा समझ बनाये यदि कोई भी कार्यक्रम शुरू किया जाता हैं तो वह समुदाय द्वारा शक की नजर से देखा जायेगा।
- किसी भी कार्यक्रम को बिना स्थायित्व योजना के शुरू करना, पशुपालकों को आप तथा आपकी संस्था पर निर्भर बना सकती है। जहाँ से वापसी बहुत मुश्किल होगी।

आपकी शुरूआती बातचीत आपको अवसर देती है

- पशुमालिकों ,उपयोग करने वाले तथा पशु का ध्यान रखने वालों के जीवन को समझने का
- अपने पशुओं के कल्याण में सुधार हेतु कि समुदाय में कितनी रूचि एवं उत्साह है का पता करने का
- कार्य करने वाले पशुओ की भूमिका को समझने का
- ऐसे सामाजिक संगठनों को खोजने का जोकि पशु कल्याण में रूचि रखता हो
- समूह गठन का

पशुमालिकों ,उपयोग करने वाले तथा पशु का ध्यान रखने वालों के जीवन को समझना

पशु तथा पशु मालिक के दैनिक जीवन की कौन सी ऐसी चीज है, जिसमें अगर बदलाव लाया जाये, तो उनके जीवन मे स्थायी रूप से गुणात्मक सुधार हो सकता है। उदाहरण के लिए, क्या पशु तथा पशु मालिक को अपने परिवार हेतु पानी लाने के लिए काफी ज्यादा दूर जाना पड़ता है, क्या उन्हें अपने ऋण को चुकाने के लिए ज्यादा समय तक कार्य करना पड़ता हैं ?

अपने पशुओं के कल्याण में सुधार हेतु कि समुदाय के रूचि एवं उत्साह को समझना

- बदलाव लाने हेतु लोग कितने ईमानदार है ?
- क्या समुदाय में ऐसे लोगों की संख्या पर्याप्त हैं ?
- क्या रूचि रखने वाले पशु मालिक, अन्य पशु मालिकों को उस बदलाव के लिए प्रभावित करने में सक्षम है ?
- समुदाय जो बदलाव लाना चाहता है, तथा उसके लिए उन्होंने ने जो नियम बनाये हैं। क्या वे उस पर भरोसा करते है तथा उसका अनुसरण करने को तैयार हैं ?
- क्या वे उस कार्य को करने की कीमत तथा मांग को समझते हैं ?

कार्य करने वाले पशुओ की भूमिका को समझना

यह समय आपके लिए यह समझने का एक अवसर है कि कार्य करने वाले पशु की उसके मालिक तथा उसके परिवार के जीवन में क्या भूमिका हैं ?

पशु कल्याण में रूचि रखने वाले सामाजिक संगठनों की खोज

समुदाय के साथ शुरूआती मुलाकातें या बातचीत द्वारा आप समुदाय में सक्रिय सामाजिक संगठनों या ऐच्छिक समूहों के बारे में पता लगा सकते हैं। (देखे चित्र सं0 – 4.1) यदि ये समूह या संगठन पहले से समुदाय में मौजूद हैं तो उनकी बैठको में सामूहिक निर्णय के द्वारा पशु कल्याण को उनके क्रियाकलाप में शामिल करना सम्भव है।

चित्र सं0 – 4.1 – समुदाय में विभिन्न सामाजिक समूह तथा ऐच्छिक समूह

समूह गठन

उन गतिविधियों को चिन्हित करें तथा उस पर चर्चा करे, जिन गतिविधियों में पशु मालिक तथा पशु में रूचि रखने वाले लोग शामिल हों। ये प्रारम्भिक गतिविधियाँ समुदाय को सामूहिक शक्ति का एहसास कराने में सहायक होती हैं एवं समुदाय में समुदाय का आपसी विश्वास एवं भरोसा बनता है जिससे कि उनमें पशु कल्याण संबंधी जागरूकता बढ़ने की शुरूआत हो सकती है। यदि शुरूआती चरण में लोगों की प्राथमिक रूचि न हो, तो पशु कल्याण संबंधी मुद्दो के चुनाव से ज्यादा महत्वपूर्ण समूह की सहभागिता तथा निर्णय सुनिश्चित करना हो जाता है।

समूह गठन हेतु कुछ प्रारम्भिक गतिविधियाँ जिनका सफलता पूर्वक प्रयोग किया गया है –

- गाँव में सड़क की मरम्मत – जिससे कि पशु आसानी से बुग्गी खीच सकें।
- पशु बाँधने के नुकीले खूँटे के स्थान पर टायर का प्रयोग – जिससे कि पशु की चोट, जख्म से बचाव हो सके। (देखे – केस स्टडी ई)
- समुदाय का बचत समूह जिससे कार्य करने वाले पशु लाभान्वित हों – एक उद्देश्य पर काम करने के लिए लोगों को एकजुट करने के लिए यह एक सबसे प्रभावशाली तरीका है। जो कि बिना बाहरी संगठन के सहयोग से लम्बे समय तक चलता है ? (देखें – केस स्टडी– एफ,)

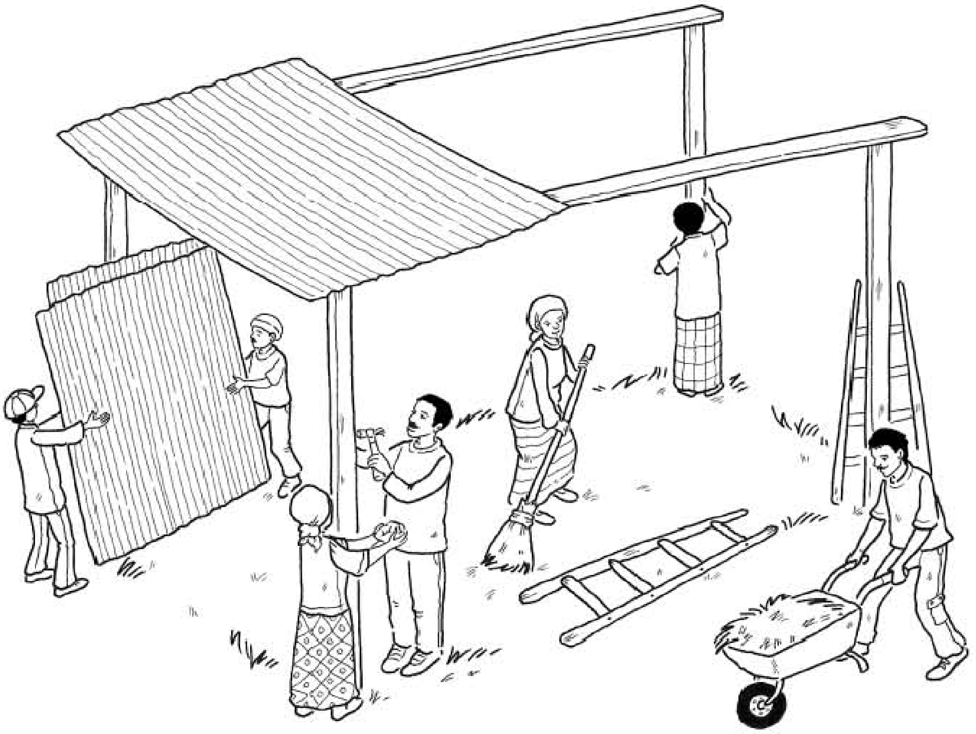

- समूह गठन के इस चरण में पशुपालकों का अन्य ग्रामों में भ्रमण कराना बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें पशुमालिक ये देखते हैं कि अन्य समूह गतिविधियां कैसे कर रहे हैं या स्थिति से कैसे निपट रहे हैं। बाहय भ्रमण के दौरान यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप पशुमालिकों के ज्यादा से ज्यादा सीख के लिए अच्छे से सुगमीकरण का कार्य करे। परन्तु लोगो को अपने क्षेत्र में उसी समाधान को ढूढ़ने के लिए निर्देशित न करें। अपने समूह से कहें कि अन्य समुदाय द्वारा क्या किया गया, के साथ–साथ किसने किया तथा कैसे किया गया पर भी ध्यान दे। उदाहरण के लिए–
- पहले से बने समूह द्वारा सामूहिक रूप से कौन –कौन सी गतिविधियॉ की जा रही हैं? और वे उसे कैसे करते हैं ?
- यदि वह बाहय भ्रमण समूह के अपनी बचत के पैसे से हो रहा है तो इसका निर्णय कैसे हुआ ? तथा पैसा कैसे इकट्ठा किया गया ?
- बाहरी संस्थाओं के साथ समझौते/बातचीत की जिम्मेदारी किसकी थी ?
- समूह का दस्तावेज कौन लिखता है ?

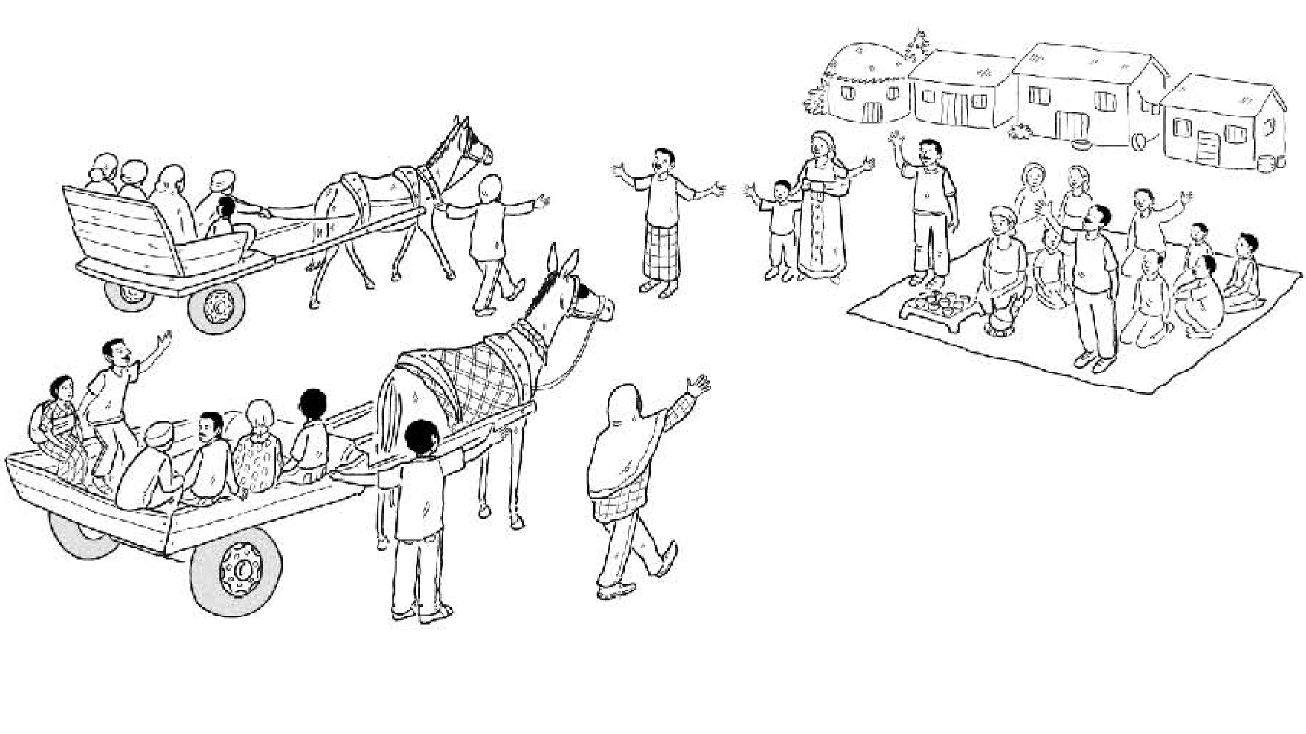

केस स्टडी E :– पशु मालिक समुदाय में प्रवेश गतिविधियाँ

स्त्रोत : रमेश रजन, बुक इण्डिया, बंसतपुर सैंथली ग्राम, गाजियाबाद इण्डिया, अक्टूबर 2007.

जिला अश्व कल्याण इकाई, गाजियाबाद, ब्रुक इण्डिया की अश्व कल्याण हेतु एक टीम है जो उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले में पशु मालिक समूहों के साथ काम करती है। यह टीम प्रतिवर्ष अपने पहुँच को नए गांवो में फैलाती है पशु मालिकों के साथ रैपोर्ट (जान पहचान एव दोस्ती) बनाने के लिए टीम नए गांवों में समुदाय प्रवेश गतिविधियों जो "एप्रिसियेटिव प्लानिंग एव एक्शन" (APA) समुदाय की प्रशसा करते हुए उन्हें उत्प्रेरित कर योजना का निर्माण एवं क्रिया विधियों का आरम्भ करना पद्वति पर आधारित होता है।

अक्टूबर 2007 में एक सामुदायिक सहजकर्त्ता ने ग्राम बसन्तपुर सैंथली के भ्रमण में पाया कि उस ग्राम में 24 कामकाजी घोडे हैं जो मुख्य रूप से भट्ठों में काम करने के साथ–साथ बुग्गी से यात्रियों एव बोझे को ढोने का भी काम करते हैं। शुरूआती वातावरण निर्माण एवं आपसी समझ विकसित करने के उपरान्त सहजकर्त्ता से बातचीत का सिलसिला प्रश्न पूछने से शुरू किया। प्रश्न था कि कृपया आप लोग किसी ऐसे क्रिया विधियों को बताएं जो कि आपने सामूहिक रूप से किया है एवं उसका परिणाम घनात्मक आया है। समुदाय ने अभिमान के साथ बताया कि उन लोगों ने अनैतिक यातायात साधनों के खिलाफ सरकारी कर्मचारियों का घेराव किया। यह एक काफी सफल सामूहिक प्रयास था। यह जवाब (APA) का खोज (DISCOVERY) वाला था। इसके बाद सहजकर्त्ताओं ने चर्चा को आगे बढाते हुए पूछा कि आपको अपने घोडों के रख–रखाव में किन चुनौतियों का सामना करना पडता है। इस सवाल के जवाब में कई मुद्दे सामने आए जिन मुद्दों में घोडे को खूटे से बाधना एक महत्वपूर्ण मुद्दा था क्योंकि खूटे पर गिरकर कई बार कई पशु खतरनाक रूप से घायल हुए थे। ये घोड़े कई दिनों तक काम करने के लायक भी नही रहे। इस तरह घोड़े के घायल होने के कारण इसके ईलाज में भी काफी धन खर्च हुआ एवं काम बाधित होने के कारण काफी आमदनी का भी नुकसान हुआ। समूह को सहजकर्त्ता के सामने आए मुद्दों को प्राथमिकीकरण करने के लिए उत्साहित किया, ताकि उभरकर आए मुद्दों में से किसी एक को सामूहिक रूप से बिना किसी बाहरी व्यक्ति के मदद के चुन सके। खूटे से पशु को बांधने वाले मुद्दो को सबसे अधिक वरीयता एव सहमति प्राप्त हुई क्योंकि यह एक ऐसा मुद्दा था जो कई समस्याओं को जन्म दे रहा था। एव इसका समाधान भी आसान था। सहजकर्त्ता ने समूह को पूछा कि इस खूटे वाले मुद्दे को हल कर लेने से क्या–क्या संभावित लाभ हो सकते हैं? समूह ने कई घनात्मक लाभ बताए जिसमें जख्म से बचाव, ईलाज में होने वाले खर्च से बचाव, काम रूकने से होने वाले नुकसान से बचाव आदि शामिल था। यह सपना (DREAM) दिखाने वाला चरण था।

इस समय तक समूह का उत्साह अधिक बढ गया कि सभी सदस्यों में तुरन्त ही घोड़े को बाधने वाले खूटे को उखाड़कर फेंकने एव उसके जगह साइकिल की टायर जमीन में गाड़कर घोडे को बांधने के नये तरीके पर सहमति बन गई। क्योंकि दूसरे गावो में भी वे टायर वाली या खूटे के जगह रस्सी वाली व्यवस्था देख चुके थे एव जानते थे कि टायर या रस्सी को जमीन में गाड़कर घोडे को उससे बांधने से कोई नुकसान भी नही है। यह एक आसान एवं सरल समाधान भी था क्योंकि साइकिल के टायर उनके अपने ही गांव में काफी मात्रा में उपलब्ध थे (यह रूपरेखा (DESIGN) वाला चरण था।)

साथ–साथ सभी समूह सदस्य एक दूसरे के घर गए एवं सबने सभी को खूटा हटाने एवं उसके जगह टायर गाड़ने मे मदद की। सिर्फ दो घंटे के अन्दर ही समूह अपने एक महत्वपूर्ण मुद्दे का समाधान कर चुके थे। (यह क्रियान्वयन (Delivery) वाला चरण था)

इस तरह सामूहिक कार्य ने समूह के अन्दर एक घनात्मक सोच को जन्म दिया एवं पशु मालिकों ने फैसला लिया प्राय: अब आपस में इसी तरह बैठेंगे एवं पशुओं को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर विचार विमर्श करके क्रिया विधि तय करके उस पर अमल करेंगें।

प्रशसा करते हुए कार्य योजना बनाना एवं अमल करना एक ऐसी सोच है जो समूह एव समुदाय को अपने स्वय के विकास के लिए घनात्मक घटनाओं की खोज के सिद्वान्त पर बनाया गया है जो यह बताता है कि किस कार्य के लिए समुदाय काम करता है एवं किसके लिए समुदाय व्यक्तिगत एव सामूहिक रूप से ऊर्जा देता है। इसके बाद यह स्थानीय समुदाय को सशक्त करता है ताकि वे अपने सुनहरे भविष्य की विजन (सोच) बना कर उस पर समर्पित होते हुए सीधे पहला कदम उठा लेता है। इस पूरे प्रक्रिया में चार चरण है। :–

खोज :– इस चरण में घनात्मक सवाल पूछते हुए जानने की कोशिश करें कि क्या काम करता है एवं क्या सशक्त करता है।

सपना :–हम कहां जाना चाहता है एवं क्या क्या सम्भावनाएं है की सोच विकसित करना है।

रूपरेखा या खाका :– अपने आप के विकास के आधार पर स्वयं की जिम्मेदारी लेते हुए कार्य योजना बना लें।

अमल करना :– गतिविधयो के क्रियान्वयन पर अमल करना अभी से शुरू करें।

स्त्रोत :–भाटिया ए0सेन0सी0के0 पाण्डेय, जी0 एवं आत्मजीस, जे0 (1998 संस्करण), एप्रिसिएटिव एक्शन एण्ड प्लानिंग इन: कैपेसिटी बिल्डिंग इन पार्टिसिपेटरी अपलेण्ड वाटरशेड प्लानिंग, मानीटरिंग एण्ड इवेलुएशन ए रिसोर्स किट आई0सी0आई0एम0ओ0डी0, काठमांडू नेपाल पी0पी0 127–133

<u>चरण 1.2 :–</u> **पशु मालिकों का समूह गठन एवं सशक्तिकरण**

इस चरण तक आप पायेगें कि कई लोग एक ही वस्तु (कामकाजी पशु) में इच्छुक नजर आयेगें। जिन्हें गतिशील पशु मालिकों के समूह के रूप में विकसित करना एक महत्वपूर्ण एवं गम्भीर चरण होता है जिसकी सफलता आपके अनुभव एवं सहयोग पर निर्भर करती है। समूह पुरूष महिलाओं एवं बच्चों तीनों को मिलाकर भी बनाया जा सकता है एवं अलग–अलग भी। यह विभिन्न परिस्थितियों पर निर्भर करता है। हम लोगों ने देखा है कि जहां पुरूष समूह द्वारा सामूहिक क्रियाविधि शुरू करने में कठिनाई होती है वहां महिलाओं का समूह आसानी से संगठित होकर सामूहिक गतिविधि शुरू कर देते है एंव बाद में महिलाओं की सफलता को देखकर पुरूष भी एकत्रित हो जाते हैं एवं सामूहिक कार्य शुरू कर देते हैं। कुछ प्रकरणों में महिलाओं का समूह गठित करने से पहले पुरूषों से मिलकर उन्हें यह समझाना आवश्यक हो जाता है कि क्या होने जा रहा है एवं महिलाएं संगठित होकर परिवार को क्या–क्या फायदा पहुॅचायेगीं।

समूह में सदस्यता सुनिश्चित करने का काम दो से तीन महीने के अन्दर कई बैठकों के बाद हो पाता है एवं एक स्थायी एवं मजबूत गठन एवं मजबूतीकरण के इस अवधि में होने वाले बैठकों में सदस्य अपने परिवार एवं समुदाय से सम्बन्धित मुद्दों को भी उठाता है। अगर समूह सामूहिक रूप से बचत करता है या आपसी लेन–देन करता है तो वहां आपस में काफी बहस होती है। (केस स्टडी एफ) समूह में सदस्यों द्वारा सामूहिक निर्णय को बिना किसी नियम को भंग किए मानने की ललक यह दिखाती है कि समूह के सदस्यों में आपस में एक दूसरे के प्रति कितना विश्वास है।

समूह को अपना स्वयं का नियमावली बनाने के लिए प्रेरित करें। हमने पाया है कि समूह नियमावली में प्रायः निम्न बातें सम्मिलित होती है :–

सदस्यता :– कौन समूह का सदस्य हो सकता है, समूह का आकार क्या होगा और अगर कोई सदस्य समूह छोड़ता है तो क्या होगा?

बैठक :– समूह बैठक के मुद्दे क्या होगें। अगर कोई बैठक से अनुपस्थित रहता है अथवा विलम्ब से आता है तो क्या होगा?

प्रतिनिधि :– समूह का प्रतिनिधित्व कौन करेगा? प्रतिनिधि कैसे चुने जायेगें? क्या प्रतिनिधियों को समय के साथ बदला जायेगा अगर हॉ तो प्रतिनिधि को बदलने की अवधि क्या होगी?

सामूहिक सहमति :– अगर कोई किसी नियम को तोड़ता है तो किस–किस की सहमति की आवश्यकता है एवं अगर कोई अपवाद वाली परिस्थिति आती है तो उस समय किन–किन की सहमति की जरूरत है।

सामूहिक भागीदारीः– समूह का सदस्य बनने के लिए कम से कम एक धनराशि निश्चित की जाती है जो सभी सदस्य आसानी से इकट्ठा कर सकें जहां से निकासी एवं ऋण की व्यवस्था एक आसान किश्त एवं ब्याज दर पर की जाती है।

ऋण व्यसस्था :– अगर बचत से ऋण लिया जाता है तो

- कैसे इसका प्राथमिकीकरण किया जाये।
- क्या ब्याज दर होगा।
- कैसे ऋण के उपभोग का अनुश्रवण करेंगे एवं कैसे समय पर ऋण वापस नहीं करने वाले सदस्यों को दण्डित किया जायेगा।

समूह का स्थायित्व एवं मजबूतीकरण एक लगातार चलते रहने वाली प्रक्रिया है। बनाए गए नियमों का पालन करके, सामूहिक कार्ययोजना पर सामूहिक निर्णय लेकर, पशु मालिकों का समूह बढ़ते हुए क्रम में मजबूत एवं प्रभावी हो जाता है।

दण्ड /शंास्तियां :– नियमों को तोड़ने पर दण्ड के क्या प्राविधान होंगे और अपेक्षायें कब पूरी हो सकती हैं।

सामूहिक योगदान/अंशदानः– यदि समूह की सदस्यता राशि या एकसमान बचत शामिल है तो एकत्रित की जाने वाली न्यूनतम राशि क्या है , जहां कि बचत से निकासी /ऋण की अनुमन्यता दी जाती है तो ऋण पर ब्याज किस प्रकार अदा किया जाता है और कितना?

ऋण / लेन देनः–यदि समूह की बचत राशि से ऋण लिया जाता हो तो इसमें किसको प्राथमिकता दी जाती है या ऋण देने का प्राथमिकीकरण किस प्रकार की जाती है , ब्याज दर क्या है ,ऋण राशि अवलोकन किस प्रकार किया जाता है और ऋण वापसी न करने वालों को किस प्रकार से दण्डित किया जाता है।

समूह का गठन करना और उसे मजबूत करना एक निरंतर प्रक्रिया है। सभी सदस्यो की सहमति से बनाये गये नियमों का कठोरता से पालन करके ,सामूहिक कार्ययोजना पर सामूहिक निर्णय करके और इन निर्णयों को व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से पूरा करके पशुमालिकों का समूह लगातार मजबूत और प्रभावी होता जाता है।

केस स्टडी–F : सहारनपुर ऋण और बचत समूह–कामकाजी पशुओं का कल्याण एवम् गरीब ग्रामीणों को सशक्त करते हुए

श्रोत :– कमलेश गुहा और देव कण्डपाल, ब्रुक इण्डिया, जनपद सहारनपुर ,उत्तर प्रदेश –2008

उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जनपद में गधा रखने वाले लोग मौसम के अनुसार बेरोजगारी और बहुत कम मजदूरी मिलने के कारण परेशान थे । गांव में जब इन लोगो के साथ सम्पर्क किया गया तब यह स्पष्ट हुआ कि इन लोगों में एकता न होना ही मुख्य रूप से, उनकी समस्याओं को हल करने में बाधक था ।

जो मुख्य समस्यायें अनुभव की गयीं वो थी – साहूकारो द्वारा पशुमालिकों का शोषण ,यातायात के पारम्परिक और आधुनिक मशीनीकृत साधनों के बीच प्रतिस्पर्धा , रास्तों की खराब हालत, गधा रखने वाले लोगों की संख्या सीमित होना एव लगातार कम होना और हीन भावना से ग्रसित होना।

पशुमालिकों का स्वयं सहायता समूह 10 से 20 महिलाओं या पुरुषों द्वारा गठित एक सामूहिक निकाय जो कि नियमित छोटी –छोटी बचत जमा करके एक सामूहिक कोष बनाता है और अपने सदस्यो को आर्थिक सुविधायें प्रदान करता है। स्वयं सहायता समूह की गठन प्रणाली को समझकर 16 ग्रामों के गधे रखने वाले लोग आगे आये। इसी क्रम में जिला सहकारी बैंक के सहयोग से उन्होंने बैंक खाते खोले , समूह के प्रत्येक सदस्य की भूमिका और अधिकारों को परिभाषित करते हुये उन्होंने समूह की नियमावली बनायी और यह भी निर्णय लिया कि जो भी सदस्य सर्वसम्मति से तय किये गये इन नियमों का उल्लंघन करेगा उसके खिलाफ क्या कार्यवाही की जायेगी?

16 स्वयं सहायता समूहों की बचत और ऋण का विवरण

जनवरी से जून 2008

कुल लाभान्वित गधों की संख्या	– 141
कुल लाभान्वित परिवारों की संख्या	–199'
16 समूहों की कुल बचत (भारतीय रुपयों में)	–183,500

समूह सदस्यों द्वारा लिये गये ऋण का विवरण

पशु के लिये दाना खरीदने हेतु	– 47700
पशु खरीदने हेतु	– 43500
बुग्गी मरम्मत हेतु	–39000
पशु के इलाज	– 6000
पशु खरीदने के लिये गये अन्य ऋणों को चुकाने हेतु	–24000
अन्य घरेलू जरूरतों हेतु	–42000

'इनमें वो परिवार भी शामिल हैं जो कि पशु नही रखते हैं परन्तु उसी समुदाय से हैं ।

ये समूह हर महीने अपने आम मुद्दों पर चर्चा करते थे। गधों के कल्याण के विषय मे चर्चा करना उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता थी। समूह के सदस्यों ने बिना किसी अतिरिक्त गारण्टी और कागजी कार्यवाही के, मुख्यतया आपसी विश्वास के आधार पर ही अपने सामूहिक कोष से ऋण लेना शुरू किया । सामान्यतया कम राशि, कम अवधि के लिए ली गयी और इसे मुख्य रूप से अपने पशु के लिये प्रयोग किया गया (बॉक्स देखें) । समूह बनने से पहले इन सदस्यों को अन्य साहूकारों से ऋण लेने पर ब्याज के रूप में अत्यधिक राशि जोकि 60 से 120 प्रतिशत वार्षिक थी देनी पड़ती थी। अब स्वयं सहायता समूह, पशु के इलाज और रोकथाम के उपायों जैसे कि मुख्य बीमारियों का टीकाकरण हेतु पैसे का सहयोग करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पुराने समूह के सदस्यों ने पड़ोस के ग्रामों में भी नये समूहों का गठन किया। स्वयं सहयता समूह के सहयोग से महिलायें भी काफी सशक्त हुई हैं क्योंकि इनमें से काफी समूह महिलाओं द्वारा ही गठित किये गये जिन्होंने अपने पशु की देखभाल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। ये स्वयं सहायता समूह निरंतर समर्थ हो रहे हैं और और बिना किसी बाहरी सहायता के समूहों का चलना लम्बे समय तक पशु कल्याण के स्थायित्व हेतु एक आशा की किरण दिखाता है, जिस प्रकार से उन गधा पालने वाले पशु मालिकों के जीवन स्तर में सुधार आया।

प्रक्रिया बॉक्स –3

एक स्थानीय समुदाय के समूह का सघन विश्लेषण – एक वर्ष बाद की स्थिति

एक पशुमालिकों का समूह ,केवल देखभाल करने वालों ,पशु को काबू करने वालों या केवल पशुमालिकों का संगठन ही नहीं है। यह उनका समूह है जो कि एक संकल्प के साथ एक सही दिशा और भविष्य की योजना के साथ पशु कल्याण हेतु साथ साथ आते हैं।एक स्वयं सहायता समूह में निम्नलिखित विशेषताऐं होनी चाहिए :–

सदस्य मिलकर योजना बनायें और उसे पूरा करने हेतु सामूहिक गतिविधि करें।

समूह के सदस्य नियमित रूप से ,तय किये गये स्थान व समय पर मिलते हो और समूह के सदस्य सक्रिय भागीदारी करते हों।

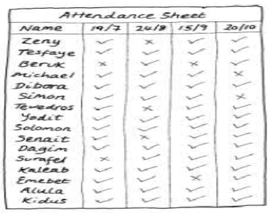

एक स्थानीय समुदाय के समूह का सघन विश्लेषण

समूह के सदस्यों के बीच खुली बातचीत और निर्णयों की स्वतंत्रता हो।

समूह के सदस्यों को सदस्यता के नियम, उनके कर्तव्यों और दायित्वों की जानकरी हो । उन्होंने बैठक और मिलकर काम करने हेतु नीति /नियम निर्धारित किये हों ,ये नियम औपचारिक रूप से लिखित में हों या सभी के द्वारा भलीभांति समझ लिये गये हों।

समूह का आकार , समूह को प्रभावी बनाने हेतु पर्याप्त बड़ा हो और उतना ही छोटा भी हो कि सभी सदस्य आपस में मिल सके और भागीदारी कर सकें।

वे सभी एक समान उद्देश्य या लक्ष्य की प्राप्ति हेतु समान रुचि के साथ कार्य करने हेतु साथ हों । बैठक आयोजित करने के पीछे कारणों /उद्देश्यों के विषय में सभी सदस्यों की एक समझ हो।

समूह में एक निर्धारित नेतृत्व हो । यह कोई एक व्यक्ति या एक से अधिक हो सकते हैं किन्तु समूह सदस्य उसके नेतृत्व को मान्य करते हों और नेतृत्वकर्ता भी समूह का सक्रिय नेतृत्व करे।

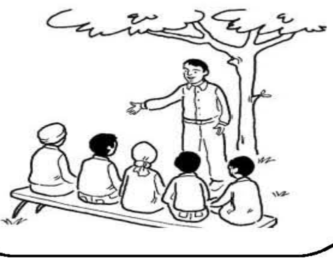

केस स्टडी G. :— बुटाजीरा घोड़ा गाड़ी मालिक एसोसिएशन

श्रोत :— गोरफू नेटी और किबनेश चाला, ब्रुक इथोपिया, आदिस अबाबा, जनवरी 2010

इथोपिया के दक्षिणी राष्ट्र, राष्ट्रीयता और लागों के क्षेत्र (SNNPR) में बुटाजीरा घोड़ा गाड़ी मालिक एसोसिएशन फरवरी 2008 में स्थापित हुई थी । इसके 670 सदस्यों के पास अपने, 1200 से अधिक गाड़ी घोड़े हैं जो कि बुटाजीरा और आस पास के गांव के लोगों को आवागमन की सुविधायें देते हैं । घोड़ा गाड़ी के मालिक अपने पशु के साथ कुछ समस्याओं का सामना कर रहे थे । इन समस्याओं में रहने के स्थान, पानी, दाना की कमी, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याऐं जैसे कि एपीजूटिक लिम्फैनाइटिस (EZL) और गलत नालबंदी के कारण सुम सम्बन्धी समस्याऐं शामिल थीं।

बुटाजीरा की तरफ के साइड रोड की सही मरम्मत नहीं थी इसीलिये ऊबड़—खाबड़ बड़े गड्ढ़े के साथ गाड़ी सही फिट न होने से घोड़ों के जख्म बन जाते थे। गाड़ी मालिक को यह महसूस हुआ कि यद्यपि वे गाड़ी में 7 लोग / सवारी तक ढ़ोते थे पर इससे भी पर्याप्त आमदनी निश्चित नहीं थी क्योंकि यात्रियों के किराये की दर निर्धारित नहीं थी साथ ही अक्सर यातायात पुलिस, गाड़ी वालों को रोक देती थी क्योंकि नियमतः घोड़ों के ,मुख्य एस्फाल्ट रोड से गुजरने पर प्रतिबंध था हालांकि वहां और कोई अन्य वैकल्पिक रास्ता भी उपलब्ध नहीं था।

एस्रेस बेरटा जो कि अब बुटाजीरा घोड़ा गाड़ी एसोसिएशन के अध्यक्ष हैं, के अनुसार कुछ लोगों ने इन समस्याओं से निजात पाने के लिये एसोसिएशन बनाने की बात रखी लेकिन उन्हें इसे शुरू करने के तरीकों की जानकारी नहीं थी।

शीघ्र ही वर्ष 2008 में, ब्रुक इथोपिया ने घोड़ागाड़ी वाले पशुमालिकों, यातायात पुलिस और कृषि विभाग के एक प्रतिनिधि के साथ, पशु कल्याण हेतु संवेदनशील करने/हेतु एक कार्यशाला आयोजित की । इस कार्यशाला से पशुमालिकों को एसोसिएशन गठित करने हेतु एक आधार और उत्साह मिला। शुरूआत

में बहुत से पशुमालिक इस एसोसिएशन से दूर रहे परन्तु एसोसिएशन के अधिक फायदे देखने के बाद अधिक सदस्य इससे जुड़े।

वर्तमान में एसोसिएशन की मुख्य गतिविधियां हैं :–

- पशुमालिकों द्वारा अपने पशुओं पर क्षमता से अधिक वजन के नियंत्रण हेतु प्राविधान नियत करना।
- एसोसिएशन के अन्दर बचत जमा करने और ऋण देने की प्रवृति विकसित करना।
- पशु कल्याण में आम समस्याओं को सामूहिक रूप से हल करना।
- घोड़ों के लिये अच्छे दाने की व्यवस्था करना।
- उनके द्वारा प्रयोग किये जाने वाले सामान जैसे – साज, घोड़ो की नाल और गाड़ी के टायर की गुणवत्ता में सुधार करना।

पिछले 2 वर्षों में एसोसिएशन ने महत्वपूर्ण प्रगति की है जैसे –

- अपनी एसोसिएशन के प्राविधान, जिसके अन्तर्गत एक घोड़ागाड़ी केवल 3 सवारी (7 के स्थान पर) ही ले जा सकती है के द्वारा इसे क्रियान्वित कराने में सफल रहे। सवारी का किराया 50 सेन्ट के स्थान पर 1 बीर अर्थात 2 गुना कर दिया गया है। जिससे कि पशु मालिकों को अब भी अपने परिवार और पशु की देखभाल हेतु पर्याप्त आमदनी होती है।
- गाड़ियों के आने जाने वाले 6 मार्गों पर, ओवरलोडिंग रोकने हेतु प्रविधान है (जिसके द्वारा ओवरलोडिंग करने वाले पशुमालिक पर जुर्माना किया जाता है) इस प्रकार सामूहिक प्रयास से कस्बे में ओवरलोडिंग को नियंत्रित्र किया गया है।
- उन्होंने 17 किलोमीटर के दायरे में साइड रोड के गड्ढों को मरम्मत कराया है जिनके कारण पहले घोड़ों के लिये यात्रा करना काफी मुश्किल था। एसोसिएशन के प्रत्येक सदस्य की 4 दिन इस रास्ते को मरम्मत करने की जिम्मेदारी है।
- उनकी बचत जमा करने और ऋण के लेन देन के तरीके ने , उनके ऊपर उस दवाब को, जिससे गाड़ी वालों द्वारा उधार लिये जाने वाले साप्ताहिक एडवांस को चुकाने के बदले में काफी लम्बे समय तक काम करना पड़ता था, हटा दिया। सदस्यों ने एसोसिएशन से ऋण लेकर एक अतिरिक्त घोड़ा खरीद लिया जिससे कि एक पशु एक दिन आराम कर सके और दूसरा काम कर सके।
- एसोसिएशन के द्वारा एक दुकान खोली गयी जिससे पशुओं का दाना थोक में खरीदा जाता है और इसके सदस्यों को उचित दर पर दिया जाता है। इससे पहले की तुलना में पशु के दाने की कीमत कम हुई है और अब वे पशु के लिये दाना ले पाते हैं। दुकान में पशुओं के काम करने के दौरान पशु के पीने के लिये पानी उपलब्ध कराया है।
- स्थानीय पशु चिकित्सा सेवाओं से सदस्यों का जुड़ाव किया है। उन्होंने एसोसिएशन की दुकान के सामने नालबंदी करने वालों को बैठाया है और अब वे अच्छी गुणवत्ता की नालबंदी कर रहे हैं।
- एसोसियेशन के माध्यम से अपने पशुओं की स्थिति पर चर्चा करने के लिये व आपस में मिलने के लिये एक मंच तैयार किया गया है। उनमें आपस में प्रतिस्पर्धा भी शुरू हो गयी है कि कौन अपने पशु की अच्छी देखभाल करता है और वे खराब स्थिति वाले पशु के मालिक को उस पशु की स्थिति सुधारने हेतु सलाह भी देते है।

एसोसिएशन ने घोड़ा गाड़ी मालिकों को अपने घोड़ों की कल्याण की स्थिति को सुधारने हेतु एक सशक्त/मजबूत मंच प्रदान किया है , साथ ही इसने पशुमालिकों के जीवन स्तर को सुधारने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

अवस्था– 2 सम्मिलित दृष्टि एवं सामूहिक सोच

प्रथम अवस्था में आपके द्वारा समूह में सुगम एवं मजबूत किये गये पशु कल्याण के लक्ष्यों को पहचानना ही द्वितीय अवस्था का उद्देश्य है। आप इसे कई श्रृंखलाबद्ध चरणों मे कर सकते हैं जो कि समूह को उनकी अपनी परिस्थिति एवं पशुओं की स्थिति का विश्लेषण करने में सहायक होता है। द्वितीय अवस्था निम्न तीन क्षेत्रों के मुद्दों को पहचानता एवम् विश्लेषित करता है

पशु मालिकों का जीवनयापन एवं कार्यपद्धति

इसमें समुदाय की संरचना की समझ भी शामिल है। कौन कहाँ रहता है प्रत्येक घर में पशुओं की संख्या तथा पशु पर निर्भर लोगों की संख्या। यह उनके प्रतिदिन के कार्यों को भी देखता है। परिवार के सदस्यों के बीच की गतिविधियों मे अन्तर, परिवार की मुख्य आय का साधन, उनके खर्चे, धन की आवश्यकता और मौसमवार आमदनी का उतार–चढ़ाव। इसके अतिरिक्त और सम्बन्धित सूचनाओं का प्रदर्शन जैसे लोगों की पशुओं की देखभाल हेतु दूसरे स्टेक होल्डर्स पर निर्भरता।

कार्य करने वाले पशु की जिन्दगी

यह पशुओं की दैनिक कार्य से सम्बन्धित है। आहार और बीमारियों में मौसमनुसार परिवर्तन, पशु की दैनिक आवागमन, कितना भार ढोते या खींचते हैं? कितनी दूरी तय करते हैं? और कितने चक्कर लगाते हैं? पशुपालन एवं स्वास्थ्य की देखभाल के वर्तमान अभ्यास जो कि उनके पशु की बीमारियों एवं बचाव से सम्बन्धित है। पशु कल्याण से सम्बन्धित समस्याएं भी महत्वपूर्ण हैं।

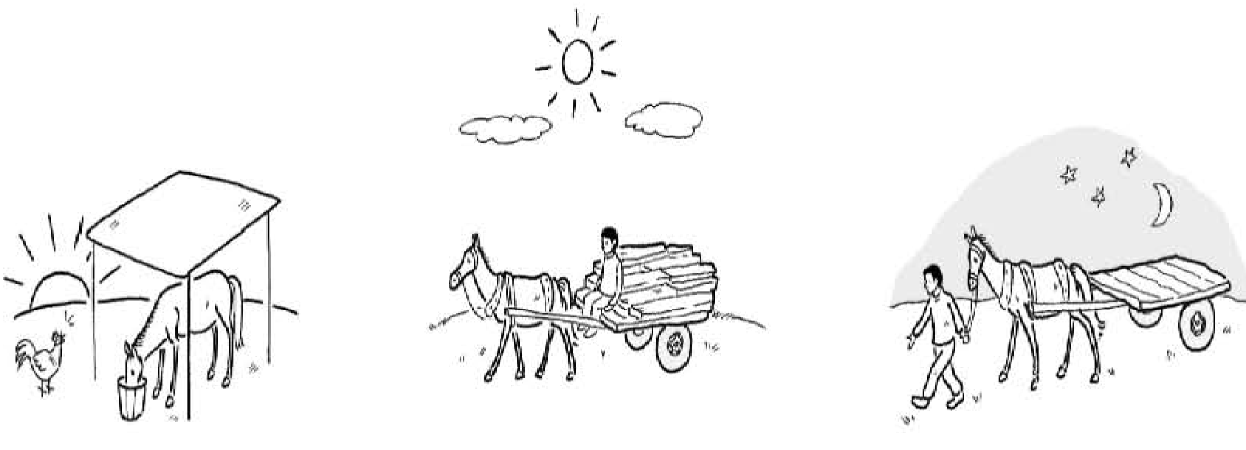

पशु सम्बन्धी सेवाप्रदाता

स्थानीय पशु चिकित्सक, नालबन्द, बाल काटने वाला, बुग्गी निर्माता, दवा की दुकान, दाना विक्रेता और साधन (दाना, पानी चारागाह, नाल, साज, दवाइयां तथा अन्य।) इसमें पशु सम्बन्धी सेवा देने वाले लोगों की स्थिति के बारे में समझ शामिल है। समुदाय से उनकी दूरी, उनकी उपलब्धता, वहन क्षमता एवं गुणवत्ता साथ ही समुदाय में उनकी स्वीकार्यता या प्राथमिकता। पशु संसाधन सम्बन्धी सूचनाओं में कीमत एवं गुणवत्ता तथा उनकी स्थानीय उपलब्धता या मौसमानुसार उपलब्धता प्रत्येक संसाधन की होती है।

परिस्थिति विश्लेषण सहभागी पद्धति और टूल के माध्यम से की जाती है। जैसा कि टेबल 4.3 में दिया गया है।

चरण– 2 को पूरा करने में सामुदायिक समूह की कई मीटिंग और निरीक्षण लग सकते हैं। मीटिंग की संख्या की आवश्यकता और टूल्स जिनका आपको प्रयोग करना है तथा समूहों का विश्लेषण इस चरण में उपयोगकर्ता पर निर्भर तथा समूह से समूह के बीच परिवर्तनशील रहता है। हमने इसे लगातार निर्धारित नीतियों के माध्यम से पूर्ण होने तक करते रहने को सर्वाधिक उपयुक्त पाया है।

इस चरण के अभ्यास में सभी मूलभूत तरीकों का अनुसरण किया गया है –

- विश्लेषण हेतु एक सामुदायिक बैठक आयोजित करें।
- बहस एवं पी0आर0ए0 टूल्स का प्रयोग करें। पशु कल्याण को परोक्ष या अपरोक्ष रूप से प्रभावित करने वाले मुददों की पहचान करें।
- मुद्दों का विश्लेषण छोटे–छोटे समूहों के साथ करें जैसे पशुमालिक, चालक एवं देखभाल वाले अथवा पुरूष, महिलाएं एवं बच्चों के ग्रुप के साथ।
- छोटे समूहों के साथ हुए विश्लेषण को समुदाय में बड़े समूह के साथ बांटे ताकि आगे बहस के बाद क्या किया जाना है तय हो सके।

आप समूह को व्यक्तिगत रूप से स्टेकहोल्डर्स या सेवादाता से उनके कार्य स्थल पर मिलने हेतु अथवा स्टेकहोल्डर्स मीटिंग/कार्यशाला में भाग लेने हेतु। प्रोत्साहित कर सकते हैं।

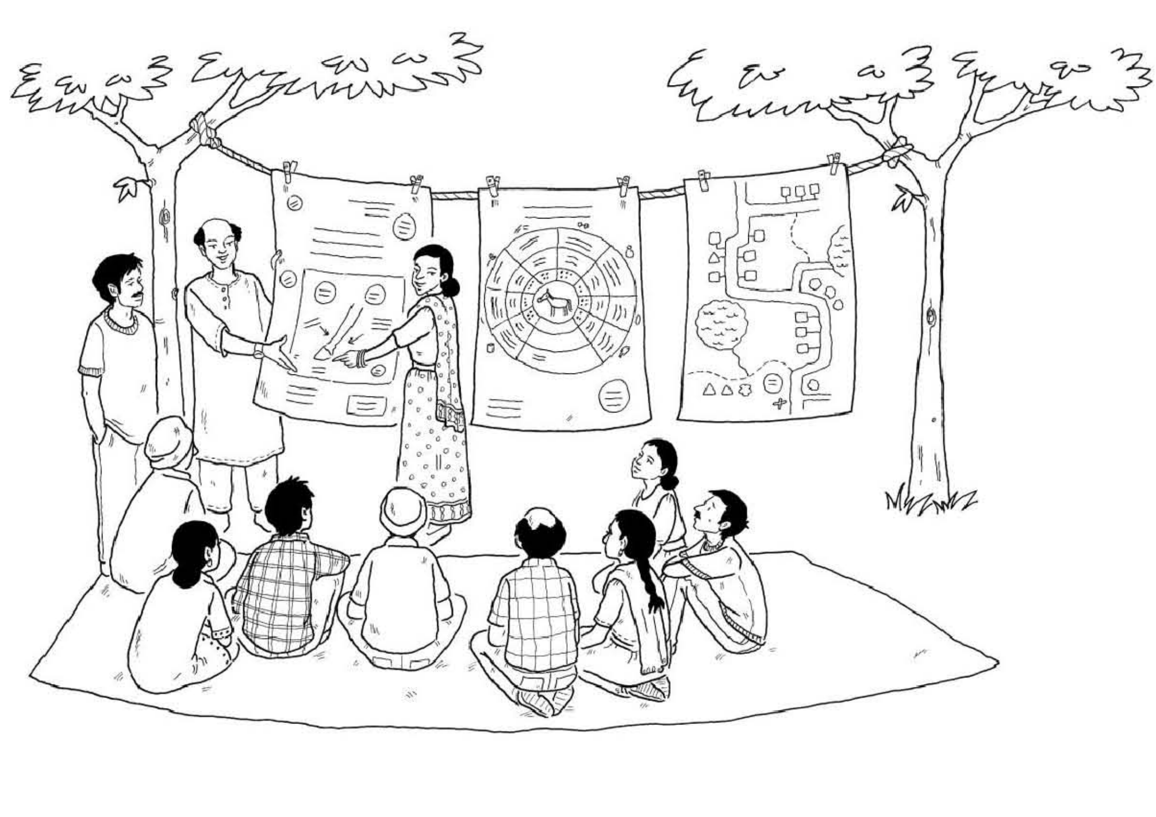

अवस्था– 2 सम्मिलित दृष्टि एवं सामूहिक सोच

1 पशु मालिकों का जीवन निर्वाह एवं कार्य पद्धति।
उद्देश्य

- समूह सदस्यों का जीवनयापन एवं कार्य पद्धति का विश्लेषण
- पशु कल्याण को परोक्ष या अपरोक्ष रूप से प्रभावित करने वाले मुद्दों को पहचानना। जैसे जीवनयापन, आय–व्यय, दूसरो पर निर्भरता आदि।

2 काम करने वाले पशुओं की जिन्दगी।
उद्देश्य

- काम करने वाले पशुओं की जिन्दगी का विश्लेषण उनका आधार, आराम, काम करने का ढंग, दैनिक एंव मौसमी अन्तर
- पशु की बीमारी से सम्बन्धित मुद्दों को पहचानना एवं बचाव जैसे बीमारी पहचानना, बीमारी का प्रकोप एवं बचाव का तरीका

3 पशु सम्बन्धी सेवादाता एवं संसाधन।
उद्देश्य

- सेवा प्रदाताओं का पशु कल्याण में योगदान का विश्लेषण करना और स्टेकहोल्डर से सम्बन्धित मुद्दों को पहचाना जो समूह के सदस्यों और पशुओं से सम्बन्धित हैं।
- पशु की आवश्यकताओं वाले संसाधनों का विश्लेषण करना और संसाधनों की उपलब्धता और गुणवत्ता से सम्बन्धित मुद्दों को पहचानना।

प्रक्रिया

1. समूह के सदस्यों के मुद्दों के विश्लेषण हेतु समूह की बैठक करें।

- पशु कल्याण को परोक्ष या अपरोक्ष रूप से प्रभावित करने वाले मुद्दों को पहचाने बातचीत, निरीक्षण एवं पी0आर0ए0 टूल का प्रयोग करें।
- इन मुद्दों पर बातचीत एवं विश्लेषण विभिन्न छोटे समूहों में करे जैसे पशु मालिक, पशु चालक, देखरेख वाले पुरूषों, महिलाओं एवं बच्चों से।
- वृहद सोच बनाने हेतु इस विश्लेषण को बडे समूह के साथ प्रस्तुत करें। चिन्हित मुद्दों का, समूह सदस्यों के साथ सेवादाताओं या स्थानीय स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं एवं अन्य सम्बन्धितों के यहां जायें। पशु कल्याण मुद्दों पर चिन्हित सम्बन्धितों से व्यक्तिगत या एक कार्यशाला आयोजित कर बातचीत करें। बाद में समूह के साथ वर्तमान सेवा प्रदाता की सेवा, साधन के अन्तर एवं उसमें सुधार के सम्भावित विकल्प पर चर्चा हेतु एक पूरक मीटिंग करें।

टूल–1

- मैपिंग (टी–1)
- गतिशीलता चित्रण (टी–2)
- वेन डायग्राम (टी–3)
- डेली एक्टिविटी, शडयूल्ड (टी–4)
- लिंगानुसार कार्य विश्लेषण (टी–5)
- लिंगानुसार पहुंच व नियन्त्रण (टी–10)
- मौसमी विश्लेषण (टी–6)
- बदलाव चित्रण विश्लेषण (टी–11)

टूल –2

- पशु कल्याण एवं बीमारियां चित्रण (टी–1)
- पशु बीमारियों का वेन डायग्राम (टी–3)
- डेली एक्टीविटी शैडयूल्ड (टी–4)
- निर्भरता विश्लेषण (टी–12)
- पशु शरीर का चित्रण (टी–20)
- पशु कल्याण के अभ्यास अन्तर का विश्लेषण (टी–21)

टूल – 3

- पशु सम्बन्धी सेवाओं और संसाधनों का चित्रण (टी–1)
- गतिशीलता चित्रण(टी–2)
- जोड़ावार रैकिंग क्रम निर्धारण (टी–8)
- पशु सम्बन्धी सेवादाताओं का मैट्रिक्स स्कोरिंग (टी–9)
- पशु सम्बन्धी सेवादाताओं का लागत लाभ विश्लेषण (टी–15)

टेबल 4.3 प्रक्रिया परिदृश्य, अवस्था – 2 सम्मिलित दृष्टि एवं सामूहिक सोच

प्रक्रिया पेटी – 4–पशु की आवश्यकतायें एवं मानवीय आवश्यकतायें

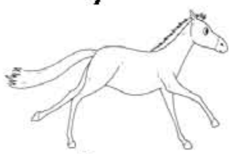

लोग और काम करने वाले पशु जीवित रहने हेतु एक दूसरे पर निर्भर हैं। वे फलने फूलने के लिए आपस में भार बांटते हैं। जबकि कभी–कभी पशु और लोगों की आवश्यकताओं और इच्छाओं के मध्य विवाद हो जाता है। जो परिवार की आय के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है, वह पशु कल्याण के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हो जरूरी नहीं। यह सामान्य है कि जब धन और साधन की एक सीमा हो और उनका प्रयोग लोगो की आवश्यकताओं एवं पशु की आवश्यकताओं के मध्य बंटवारा हो। इसलिये जब आप समुदाय के साथ काम करते हैं। पशु कल्याण एवं मानव कल्याण के बीच समन्वय बनाये रखने का बहुत ही महत्व है।

विशेषकर आप जब एक नये समूह के साथ कार्य शुरू करते हैं। तब पशु मालिक प्रयोगकर्ता, देखरेख वाले, पशुओं से सीधा सम्बन्ध न रखने वाली आवश्यकता एवं मुद्दे के साथ आयेंगे यद्यपि ये समूह सदस्यों को सीधा प्रभावित करते हैं। उदाहरणर्थ न्यूनतम दैनिक मजदूरी, कर्ज पर बड़ी ब्याज दर, बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य, जर्जर सड़कें, रहने की कम जगह यह सामान्य बात है। इसे हतोत्साहित न करें। आपकी सहायक संस्था में इन मुद्दों के सीधे निस्तारण की संभावना नही है। परन्तु इस पर कुछ किया जा सकता है।

- पशु कल्याण को बढ़ावा देने वाली प्रक्रिया से समूह गठन एवं सामूहिक कदम से लोगों में आत्मबोध एवं क्षमता विकसित होती हैं, जो इन समस्याओं से निपटने में सहायक है।
- एक बचत समूह को प्रोत्साहित करें जिससे न सिर्फ पशु कल्याण बढ़ेगा (देखे केस स्टडी **F**) बल्कि इसमें से कुछ मुद्दों जो कि पशु कल्याण से सीधे सम्बन्धित न हो को भी हल मिलेगा। जैसे बाहर से लिए गये कर्ज पर ऊंची ब्याज दर।
- आप सामुदायिक समूह को स्थानीय अन्य संस्थाओं से या सहायता दिलवा सकते हैं जो कि इनको इन मुद्दों को हल करने में मदद कर सकते हैं। जैसे स्वास्थ्य एवं शिक्षा।

चित्र 4.2 पशु एवम् मनुष्यों के जरूरतों का संतुलन('दो गदहों की कहानी'. झगडे से सहयोग बेहतर, सोसायटी ऑफ फ्रेण्ड्स पीस कमिटी वाशिंगटन, से लिया गया)

अवस्था – 3– सहभागी पशु कल्याण आवश्यकताओं का आंकलन

अवस्था 3 का उद्‌देश्य काम करने वाले पशु का वर्तमान स्तर देखना है। इसमें पशु को केन्द्र में रखकर समूह द्वारा आंकलन किया जाता है। हम इसे सहभागी पशु कल्याण आंकलन (PWNA) कहते हैं। पशु कल्याण में वास्तविक सुधार सामूहिक प्रयास द्वारा लाने के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण चरण को सुगम बनाना है और यह बाहय चिन्हों एवं व्यवहार के द्वारा पशु की शारीरिक और मानसिक स्थिति की पहचान पर केन्द्रित होता है। इसमे 4 चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में एक निश्चित टूल का प्रयोग होता है जिससे पशु मालिक गहराई तक विश्लेषण करते हैं और पशु मालिक पशु के जरिये से दुनिया देखते हैं तथा उनकी जरूरतों को समझते हैं।

पशु की आवश्यकता एवं अहसास को पशु अपने व्यवहार एवं शारीरिक भाषा द्वारा किस प्रकार व्यक्त करता है, के बारे में पशु मालिक को संवेदनशील बनाने हेतु अति प्रभावी प्रक्रिया है। पशु की आवाज को सुन सकने में सक्षम होना बहुत ही निर्णायक है जो कि पशु मालिकों में प्रेरणा देता है। प्रयोगकर्ता एवं चालक कार्ययोजना बनाने एवं पशु कल्याण का अनुश्रवण करने में सक्षम हो जाते हैं। जिससे कि कल्याण में सुधार लम्बे समय तक स्थायी हो सकता है। आपके निवेश को घटाने या पूर्णतः बन्द करने पर भी।

आप सहभागी पशु कल्याण के आंकलन के साथ क्या कर सकते हैं–

- समूह को किसी पशु कल्याण स्तर को पहचानने एवं अनुश्रवण को प्रेरित करें जो कि पशु के शरीर की बाहय स्थिति को देखकर एवं उसके व्यवहार के आंकलन को देखकर।
- अब समूह को उनके पशु कल्याण को प्रभावित करने वाली चीजों को यह जानने हेतु प्रेरित करें इसमें पशुमालिक के प्रबन्धन की गतिविधियां एवं उसका व्यवहार, संसाधन स्टेकहोल्डर्स, सेवायें और मौसम का प्रभाव भी शामिल है।
- अब समूह को कल्याण सम्बन्धी समस्याओं की गंभीरता एवं उसमें मददगार कारकों को समझने हेतु प्रेरित करें।
- समूह को उनके पशु कल्याण आवश्यकताओं के बारे में संवेदनशील करें दूसरे शब्दों में कार्य का प्रकार, चलाने का तरीका, प्रबन्धन, वातावरण एवं साधन जो पशु कल्याण बढ़ाने में सहायक है।
- समूह को कार्य करने हेतु प्रेरित करें। यह इस प्रक्रिया का सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिणाम है।

- समूह को उनके पशु में आये सुधार का नियमित अनुश्रवण करने हेतु प्रेरित करें और वृद्धि को स्थायी करने हेतु सामूहिक दबाव को बढ़ावा दें तथा लगातार सुधार हेतु सामूहिक दबाव बनाये रखें।

सहभागी ग्रामीण आंकलन (PRA) टूल एवं अभ्यास जो कि इस भाग में उपयोग किये गये हैं, सभी अलग हैं। ये अच्छे एवं बुरे कल्याण को सूचीबद्ध करने हेतु निर्मित किये गये हैं। जो कि पशु मालिक की अपनी रचना है, जिनसे सीधे निरीक्षण किया जा सकता है (पशु आधारित सूचक) इन्हीं चिन्हों का प्रयोग समूह द्वारा सभी पशुओं के कल्याण के आंकलन हेतु किया गया जो कि उनके समूह सदस्यों से सम्बन्धित थे। कुछ टूल्स कल्याण में सुधार हेतु प्रबन्धकीय गतिविधियां, साधन एवं सेवा की आवश्यकताओं की सूची सृजित करते हैं। जिन्हें साधन आधारित पशु कल्याण संकेत कहते हैं। इन टूल्स के कुछ और प्रयोगात्मक उपयोग हैं। पशु के लिए जैसे पशु खरीदते समय क्या–क्या देखना है, अपने पशु की कीमत कैसे बढ़ाये ताकि बेचने पर अधिक लाभ हो।

नीचे के चित्र सारणी सहभागी पशु कल्याण के चार चरणों का विस्तृत विवरण है

चरण – 3.1

ऑकलन करें कि पशु कैसा अनुभव कर रहा है और वे उसकी खुशहाली के लिए क्या आवश्यक है

चरण – 3.2

पशु और संसाधन आधारित कल्याण के मानकों की एक सूची विकसित करना और वे कैसे अंक देंगे पर सहमत करना

चरण – 3.3

पशु को निरीक्षित करना और उसकी कल्याण स्थिति को अंकित करना

चरण – 3.4

समूह के अनुसार पशु की वर्तमान कल्याण स्थिति का आकलन करना

चित्र 4.3 सहभागी पशु कल्याण आवष्यकताओं का आंकलन

अवस्था– 3– सहभागी पशु कल्याण आवश्यकताओं का आंकलन

चरण – 3.1
ऑकलन करें कि पशु कैसा अनुभव कर रहा है और उसकी खुशहाली के लिए क्या आवश्यक है
उद्देश्य :–
•समूह को कल्याण आधारित पशु की आवश्यकताओं और भावनाओं की एक समान समझ बनाने हेतु योग्य बनाना
•समूह को पशु के शरीर व व्यवहार के प्रगट करनें में अच्छे और खराब कल्याण के कैसे मायने हैं के पहचान के योग्य बनाना

चरण – 3.2
पशु और संसाधन आधारित कल्याण के मानकों की एक सूची विकसित करना और वे कैसे अंक देंगें पर सहमत करना
उद्देश्य :–
•समूह को पशु और संसाधन आधारित मानकों को एक प्रारूप बनाने हेतु सशक्त करना जिससे कि पशु कल्याण की आवश्यकताओं का आंकलन कर सकें और बदलावों का अनुश्रवण कर सकें।

चरण – 3.3
पशु को निरीक्षित करना और उसकी कल्याण स्थिति को अंकित करना
उद्देश्य :–
• सभी मुद्दे जो कि समूह के अनुसार पशु को प्रभावित करते हैं को एकत्रित करते हुए प्रत्येक पशु के कल्याण की एक स्पष्ट तस्वीर देना
• समूह को चर्चा और निर्णय लेने के योग्य बनाते हुए प्रतिक्रिया देने को कहना

चरण – 3.4
समूह के अनुसार पशु की वर्तमान कल्याण स्थिति का ऑकलन करना
उद्देश्य :–
समूह को प्रत्येक पशु कल्याण के मुद्दों पर चर्चा करना और ऑकलन करने हेतु योग्य बनाना

प्रक्रिया :–
• एक समूह बैठक को संगठित करना
• पशु कल्याण आवश्यकता को चिन्हांकित करना,प्रभावों के कौन से कारण हैं जिससे ये आवश्यकतायें पशु को नहीं मिल पा रही हैं और भौतिक लक्षणों और व्यवहार के द्वारा पशु पर इन प्रभावों को कैसे देख सकते हैं (पशु – आधारित कल्याण मानक)
• पशु की आवश्यकताओं को परिवर्तित करना (संसाधन – आधारित कल्याण मानक) – पशु – आधारित कल्याण मानकों की एक सूची
• एक समान सहमति बनाना कि कैसे प्रत्येक मानक को परिभाषित और अंक देगें।
• सीधे भ्रमण के द्वारा पशु और संसाधन को निरीक्षित करना
• प्रत्येक पशु की उनकी खतरनाक और कल्याण मानकों को अंकित करना
• सामूहिक रूप से अलग – अलग व समूहवार कल्याण मुद्दों को एकत्रित करना और चर्चा करना

तकनीक :–
•पशु कल्याण मुद्दों की मैट्रिक्स रैंकिंग (टी 9)
•यदि मैं एक घोडा होता (टी 17)
•अपने पशु की कीमत कैसे बढ़ायें (टी 18)
•पशु की भावनाओं का ऑकलन (टी 19)
•पशु शारीरिक चित्रण (टी 20)
•पशु कल्याण आदत कमी ऑकलन (टी 21)
•पशु कल्याण भ्रमण (टी 22)

टेबल 4.4 प्रक्रिया परिदृश्य अवस्था 3 सहभागी पशु कल्याण आवश्यकता आंकलन

चरण – 3.1: पशु कैसा महसूस करता है और उसकी अच्छाई के लिए क्या आवश्यक है ऑकलन करना

चरण 3.1 पशु मालिकों के समूह को उनके काम करने वाले पशु के अच्छे जीवन जीने के लिए प्रत्येक आवश्यक चीजों को चिन्हित करने के योग्य बनाता है । आप इस मैनुअल के भाग – 3 में दिये गये तरीकों में से नीचे दिये गये तरीकों का एक या एक से ज्यादा बार प्रयोग कर सकते हैं :

- यदि मैं एक घोडा होता (टी 17)
- अपने पशु की कीमत कैसे बढायें (टी 18)
- पशु शारीरिक चित्रण (टी 20)
- पशु कल्याण आदत कमी ऑकलन (टी 21)
  ये तरीके समूह को मदद करते हैं :
- काम करने वाले पशु की आवश्यकताओं को चिन्हित करने में :
- पशु को अपनी आवश्यकताओं को अपने मालिक से, उपयोगकर्ताओं से, सामान लादने वालों से और स्थानीय सेवा प्रदाताओं से पाने में कैसे कमी है का ऑकलन करने में :
- काम करने वाले पशु पर क्या प्रभाव पड़ता है जब उसकी आवश्यकतायें नहीं पूरी हो पाती हैं का ऑकलन करने में :
- प्रत्येक भौतिक और व्यवहारिक लक्षणों को चिन्हित करने में, जो कि सीधे निरीक्षित किया जा सकता है जबकि एक पशु को आवश्यकतायें मिल रही हैं या नहीं मिल रही हैं (पशु – आधारित कल्याण के मानक, अध्याय – 2)

हम पाते हैं कि अधिकतर पशुमालिक केवल संसाधन और सेवाओं को ही इंगित करते हैं जब उनके पशु की अच्छाई के लिए बात करते हैं। वर्तमान संसाधन और सेवायें महत्वपूर्ण हैं लेकिन वे अच्छे कल्याण को सुनिश्चित नहीं करती हैं ।
उदाहरण के लिए, एक पशु को भोजन देते हैं (एक संसाधन) , लेकिन यदि इसे दूसरे लडाकू पशु के पास बांध दिया जाता है, या इसके मुँह को काटता है, इसे नहीं खा पायेगा। ये तरीके लोगों को पशु संबंधित संसाधनों

को देखने में मदद करते हैं और सेवाओं को पशु में सीधे निरीक्षित करने में, देखते हैं कि उसके अपने कल्याण के बारे में वो क्या कह सकते हैं। वे पशु को ऑकलन करते समय स्वयं केन्द्र में रहते हैं।

एक विस्तृत व्याख्यान कि इन तरीकों का कैसे उपयोग करते हैं भाग – 4 में आप पा सकते हैं । इनको देखें और चुनें कि आप जिस समूह के साथ काम कर रहे हैं कौन सा सबसे अच्छा तरीका आप इस्तेमाल कर सकते हैं।

बहुत सारे अवसरों में हम पशु शारीरिक चित्रण (टी 20) का प्रयोग करते हुये पशु की आवश्यकताओं की चर्चा की प्रक्रिया शुरू करते हैं। समूह काम करने वाले पशु के शरीर का एक चित्र बनाता है, इसके शरीर के भागों को चिन्हित करता है और तब इसके प्रत्येक हिस्से को स्वस्थ रखने के लिये क्या आवश्यक है को वर्णित करता है।

पशु को उसकी अच्छाई के लिये आवश्यक चीजों को अच्छे रखरखाव आदतों से और उनके मालिकों के व्यवहार के प्रकार से जोडते हैं, जैसे कि अस्तबल की साफ – सफाई, नियमित मालिश आराम और खूँटे से बॉधना। उनकी आवश्यक अच्छे संसाधनो और सेवाओं जैसे कि साफ पानी, शेल्टर और चिकित्सा सुविधा। इसी अभ्यास के दौरान समूह से पूरी सूची निकलवा लेंगे और इसे देख भी सकते हैं सिद्वान्त बाक्स 3

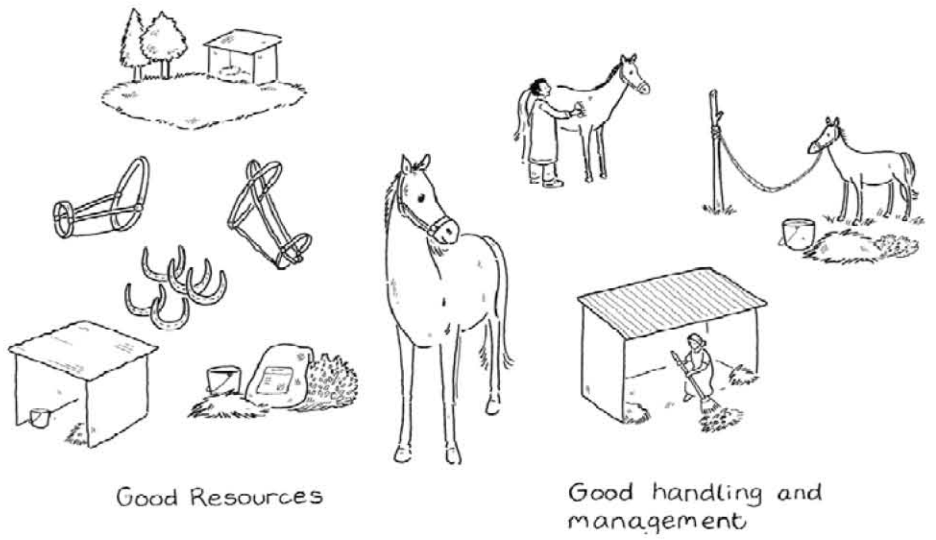

चित्र 4.4 पशु को अच्छा रहने के लिए अच्छे संसासनों एवं अच्छे काबू करने के तरीकों के साथ अच्छा रख रखाव भी चाहिए

एक सुगमकर्ता के रूप में , आपका उद्‌देश्य समूह को पहचान कराने के लिये है :

- पशु की आवश्यकतायें
- पशु पर पड़ने वाले प्रभावों का जब उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती है
- इन पडने वाले प्रभावों को पशु के शरीर पर या उसके व्यवहार पर कहॉ देख सकते हैं।

नीचे दर्शाया गया चित्र एक सामुदायिक समूह द्वारा यदि मैं एक घोडा होता तरीका (टी 17) सहभागी कल्याण आवश्यकता ऑकलन के लिये कुछ वास्तविक परिणाम दिखाता है। यहॉ चित्र के बारे में व्याख्या है :–

- गोला एक (अन्दर वाला गोला) दिखाता है कि पशु अपने मालिक से व दूसरे लोगों से क्या अपेक्षायें रखता है।इन्हें कभी–कभी संसाधन आधारित कल्याण के मानक भी कहते हैं।

- गोला दो दिखाता है कि मालिक की वर्तमान रखरखाव आदतें क्या हैं,स्कोर करने के लिये पत्थर का प्रयोग करेंगें कि प्रत्येक आवश्यकता कितना मिल रही है।
- जब इन आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती है तब पशु पर पड़ने वाले प्रभावों को गोला तीन दिखाता है।
- गोला चार (बाहरी गोला) पशु के व्यवहार में या शरीर पर सीधे निरीक्षित कर सकने वाले लक्षणों को वर्णित करता है जो कि समूह को आवश्यकतायें न पूरी होने को जानने के योग्य बनायेगा, को पशु आधारित कल्याण के मानक कहते हैं। उदाहरण के लिये प्रतिभागी चिन्हित करते हैं कि नालबंदी की प्रत्येक 15 दिनों में आवश्यकता है। यदि यह नहीं हो पाती है तो इसका प्रभाव लंगडापन है,जिसे कि पशु के सुम व पैर पर देख सकते हैं।

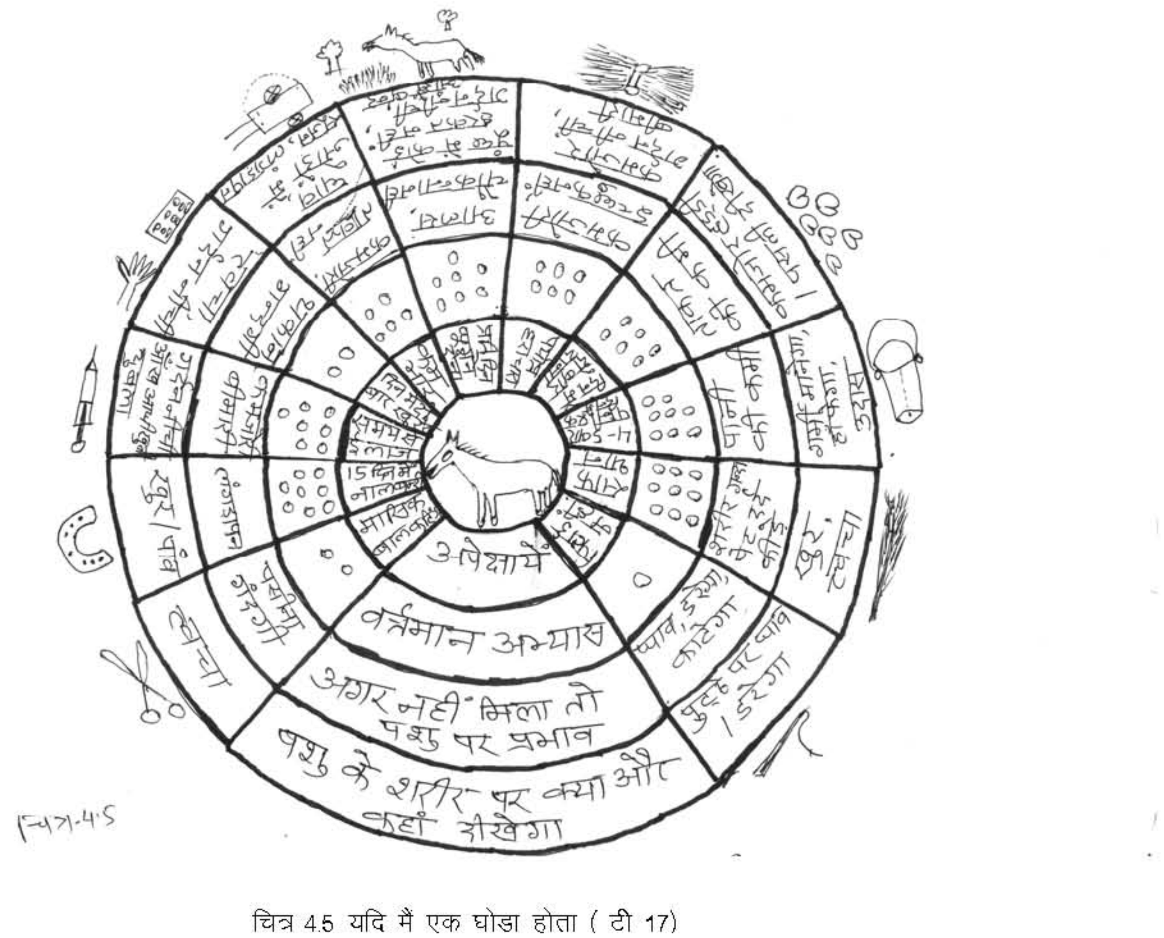

चित्र 4.5 यदि मैं एक घोडा होता (टी 17)

पशु कैसा महसूस करता है – पशु की आवाज को समझना

उपर चित्र 4.5 में, पशु पर कल्याण मानकों या लक्षणों को (पशु – आधारित कल्याण के मानक) दो विभिन्न प्रकार से देख सकते हैं :

1–पशु के पूरे शरीर को सिर से पूँछ तक देखकर भौतिक चिन्हों या लक्षणों को पहचानते हैं।

2–व्यवहारिक हाव–भाव या शारीरिक भाषा। ये शारीरिक हलचलों (पशु कैसे खड़ा होता है) ऑख, कान, सिर, पैर और पूंछ की स्थिति और हरकत में देख सकते हैं। पशु के व्यवहार में और दूसरे पशु या लोगों के साथ बातचीत करते समय भी देख सकते हैं। चित्र 4.5 में ये हैं : गर्दन नीची करना, ऑख आधी खुली रखना, चौकन्ना नहीं और पूंछ को न चलाना ।

इन तरीकों का उपयोग करके हम बहुत सारे मानकों को निकालेंगें जो कि समूह से समूह में अलग होगा। चित्र 4.6 नीचे भौतिक और व्यवहारिक चिन्हों के कुछ उदाहरण देता है जिससे कि एक पशु को आवश्यक चीजें मिल पा रहीं हैं या नहीं मिल पा रहीं हैं देख सकते हैं।

	जब पशु की आवश्यकतायें पूरी हो रही है।	जब पशु की आवश्यकतायें पूरी नहीं हो रही हैं
शरीर पर दिखने वाले भौतिक चिन्हों के उदाहरण	•घाव नहीं •साफ, चमकदार बाल •कठोर, चिकना सुम •साफ,चमकदार ऑखें	•घाव •चीचडी •फटा सुम •दस्त
व्यवहारिक हाव–भाव या शारीरिक भाषा के उदाहरण	• घूमने में इच्छुक • कान अधिकतर उपर या आगे • चारों पैरों पर बराबर वजन लिये हुये • दूसरे अपने प्रकार के पशुओं के साथ बराबर हरकत करते हुऐ • लोगों के साथ दोस्ताना अंदाज	• घूमने में इच्छुक नहीं • कान अधिकतर नीचे या पीछे • एक पैर उठाये हुऐ या वजन दिये हुए बीच–बीच में दूसरे पैरों पर • एक स्थिति में बहुत देर तक खड़े रहना • लोगों से डरा हुआ या काटने को करता हुआ

चित्र 4.6 भौतिक और व्यवहारिक लक्षणों का उदाहरण है जिसे कि एक पशु दिखाता है कि उसकी आवश्यकता पूरी हो रही है कि नहीं हो रही है।

हमने एक विशेष तरीका भी विकसित किया है जिसे पशु की भावनाओं का ऑकलन (टी 19) कहते हैं जो कि समूह को गहराई में जाकर उस पशु के कल्याण के बारे में व्यवहार को देखने व समझने में मदद करता है। यह लोगों को काम करने वाले पशु को क्या पसन्द है और पशु के सुखी व दुखी होने पर भावनाओं के मुख्य कारकों

पर चर्चा करने के लिए उत्साहित करता है । समूह के साथ इन पाँचों तरीकों के परिणामों का एक या एक से अधिक बार उपयोग करते हैं–

- रख रखाव आदतों और पशुमालिक के व्यवहार और दूसरे लोग जो कि पशु आवश्यकता में हिस्सेदार हैं को पहचानते हैं।
- संसाधन, सेवाप्रदाता और सेवायें जो कि पशु आवश्यकता में हिस्सेदार हैं को पहचानते हैं।
- अच्छे और खराब कल्याण के भौतिक और व्यवहारिक लक्षणों को पहचानते हैं (पशु – आधारित मानक) जो दिखाता है कि पशु की आवश्यकतायें पूरी हो रही हैं कि नहीं हो रही हैं।

इस स्टेज में समूह सहभागी कल्याण आवश्यकता ऑकलन की प्रक्रिया में अगले चरण के लिये तैयार है।

चरण 3.2 कल्याण सूचकों की सूची तैयार करना एवं स्कोर करने को सहमति बनाना।

यह चरण समूह को उनके पशुओं के प्रबंधन कार्यों तथा संसाधन सम्बंधी सूचकों का पशु कल्याण एवं अनुश्रवण में परिवर्तन देखने के प्रारूप बनाने में मदद करता है।

1. सहभागियों को अवस्था –3 के चरन 3.1 (उपर) पर पहचाने गए सूचकों को लिखना तथा अपने पशु कल्याण में प्रयोग होने वाले सूचकों को सूचीबद्ध करना है।
2. तत्पश्चात समूह एक समझ पर आता है कि प्रत्येक सूचक को कैसे स्कोर किया जा सकता है और प्रत्येक स्कोर की निश्चित परिभाषा की जा सकती है।

चरण 3.1 का अभ्यास एवं टूल के परिणामों का प्रयोग करते हुए, समूह को पशु के प्रत्येक अंग की सूची बनाने के लिए उत्साहित करें जिससे कि वे पशु कल्याण देख सकें। पशु आधारित सूचकों के विशेष पहचान देख सकें। समूह पशु की कमजोरी पशु की हड्डियों को और नीची गर्दन देखकर निर्धारित कर सकते हैं, पैर में लंगड़ापन व सूजन निर्धारित कर सकते हैं। तत्पश्चात् वे प्रबंधन व संसाधन सम्बंधी सूचकों की सूची बना सकते हैं। इसके बाद निर्धारित करें कि वास्तव में वह क्या देखेंगे। उदाहरण के लिए प्रतिभागी जानना चाहेंगे कि पशु को पानी कितने बार दिया गया है, खोर की सफाई देखें, खोर में कितना आहार है, और खोर की ऊंचाई सही है, या नहीं, अस्तबल या स्थान की सफाई देखें, बदबू व मक्खियों को देखें। (चित्र 4.7 देखें)

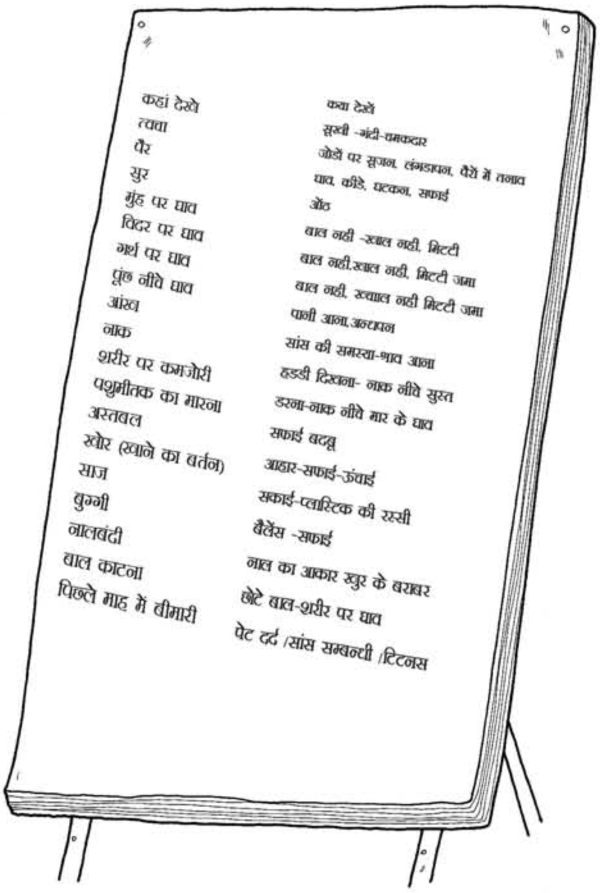

चित्र 4.7– पशु आधारित सूचक, प्रबंधन व संसाधन सम्बंधी कल्याण सूचक

सुगमकर्ता की हैसियत से आपका महतवपूर्ण कार्य यह देखना है कि सूची में पशु कल्याण के सभी मुददे हैं। आप स्वंय अध्याय–2 में दिए गए क्योरी बाक्स 6 देखकर समझ सकते हैं। समूह द्वारा सूची को अन्तिम रूप दिए जाने के पश्चात, उनके साथ बैठकर देखें कि पशु कल्याण के सभी मुद्दे लिए गए हों। कभी–कभी हम देखते हैं कि पशु मालिक की सूची में केवल बाहय (भौतिक) कल्याण के सूचक लिए गए होते

हैं। यदि ऐसा होता है तो पशु के अहसास टूल (टी–20) का प्रयोग करके अच्छे और खराब मानसिक अथवा अहसास वाले मुद्दे देखना चाहिए।

पशु मालिक समूह निम्न वर्गीकरण में कल्याण मुद्दे रखकर देख सकते हैं—

- पशु के शारीरिक –व्यवहारिक एवं अहसास (बीमारी सम्बन्धी भी)
- प्रबन्धन सम्बन्धी व पशु मालिक का पशु के प्रति व्यवहार।
- संसाधन, सेवा प्रदाता एवं सेवाओं के मुद्दें

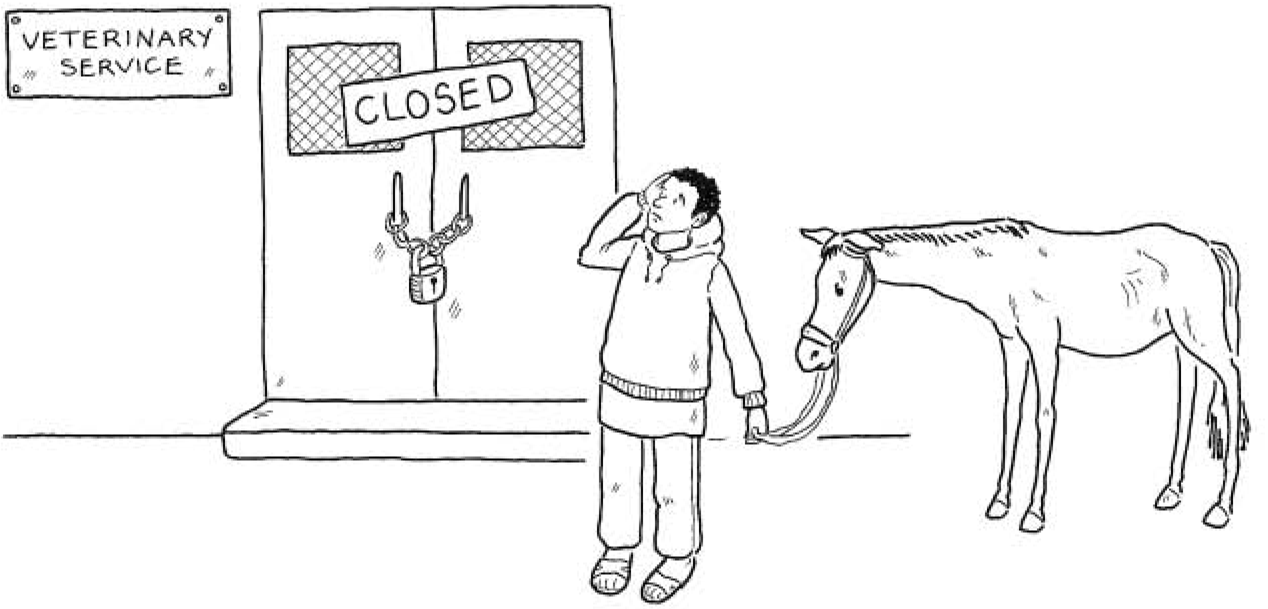

पशु कल्याण सूचकों को स्कोर करने पर सहमति

पशु कल्याण सूचकों की सूची बनाने के बाद सुनिश्चित कर लें कि पशु कल्याण के सभी बिन्दु लिए गए हैं, अब समूह निर्णय ले कि मुददों का स्कोर कैसे बनाए एवं स्कोर को निर्धारित कैसे करें। यह महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक स्कोर की स्पष्ट रूप से व्याख्या करें, ताकि सभी समूह सदस्य एक तरीके से प्रत्येक बार पशु का स्कोर कर सकें।

सबसे अधिक स्कोरिंग का प्रकार जो हम देखते हैं वह है ट्रैफिक लाइट सिग्नल लाल, पीला तथा हरा बिंदु जैसे कि पशु को देखते समय समूह ट्रैफिक लाइट की व्याख्या इस प्रकार कर सकता है।

- हरा– दोनों आंखे साफ हैं, कोई घाव का निशान नहीं है। धूल का निशान नहीं और पशु अन्धा नहीं है।
- पीला– पशु अन्धा नहीं है, आंखे अपेक्षाकृत साफ है परन्तु हल्का सा घाव या पानी आता है या आंख के आस–पास कुछ धूल है।
- लाल– आंखे गंदी है या श्राव अधिक आता है या सफेदी लिए हैं अथवा पशु एक अथवा दोनों आंखों से अन्धा है।
- पशु के पैर अथवा खुर के लिए , स्कोर निम्न प्रकार किया जा सकता है।
- हरा– सभी चारों पैर साफ हैं, खुर की छँटाई अच्छी व चटकन तथा बदबू नहीं है। यदि पशु की नाल लगी है तो पशु की नाल अच्छी तरह लगी है।
- पीला– एक या अधिक खुर ठीक से व साफ नहीं, छोटे चटकन, नाल को बदलने की आवश्यकता
- लाल–एक या अधिक खुर गंदा, अधिक बड़ा, कुछ छोटी चटकन या बदबू। यदि नाल लगी है तो चटकी है या ठीक ही नहीं लगी है।

स्कोर का अन्य तरीका गिनती लिखना है। मानक समूह को तय करना है जो कि 3 खराब दशा, 2 मध्यम व 1 अच्छी दशा को दे सकते हैं जबकि पशु मालिकों में साक्षरता न होना साधारण है पशु मालिक गिनती के स्कोर को ट्रैफिक लाइट की तुलना में कठिन सोच सकते हैं यद्यपि वह गिनती व टैली नं0 को पहचान सकते हैं। देखा गया है कि समूह गिनती व पहचान का जोड़ आसानी से समझ सकते हैं जैसे कि स्कोर –2 खराब दशा, 1 मध्यम दशा व (+) निशान अच्छी दशा रख सकते हैं। वह समूह जो गिनती का प्रयोग करते हैं वह प्रत्येक पशु के लिए व गांव के लिए सारांश बनाते हैं। यह विश्लेषण में अतिरिक्त मूल्य बढ़ाता है (अवस्था–3, क्रम 3.4)

हमारा अनुभव है कि अधिकांश समूह ट्रैफिक लाइट स्कोरिंग से शुरू करते हैं। बाद में वह गिनती के स्कोर पर चले जाते हैं। दूसरे स्कोरिंग प्रणाली में जाना द्योतक है कि पशु मालिकों में पशु के मूल्यांकन करने का अनुभव हो गया है। वह पशु कल्याण की सूचना रखने लगे हैं।

समूह समझने लगा है कि ट्रैफिक लाइट पशु कल्याण को मापने का पूर्ण व पर्याप्त तरीका नहीं है इसलिए वह पशु कल्याण के मुददों को गहराई में देखना चाहते हैं। हमारे होने से समूह पशु कल्याण मुददों को 1–5 व 1–10 स्केल पर नाप रहे हैं। वह अधिक गहराई में मापन की व्याख्या करते हैं। बहुत से समूह पशु कल्याण मुद्दों के माध्यम से आपस में व गांव में प्रतियोगिता करते हैं जिससे समूह अथवा गांव का सबसे अच्छा पशु चयनित हो सके।

चरण 3.3 पशु कल्याण भ्रमण के माध्यम से पशु को मापना व कल्याण स्थित को संकलित करना।

चरण 3.3 प्रतिभागियों को प्रत्येक पशु जो समूह के पास है का वास्तविक आंकलन करने के योग्य बनाता है। समूह के पशुओं को प्रभावित करने वाले साधारण मुद्दों की पहचान कराता है।

एक बार जब पशु व संसाधन आधारित मुद्दे सूचीबद्ध हो जाए तब पशु कल्याण भ्रमण करना चाहिए (टी–22), पूरे गांव में घर–घर घूमकर देखना चाहिए। समूह के पशु मालिक सदस्यों को एक–एक करके सभी पशुओं को देखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। समूह पशुओं को साथ–साथ देखता है व प्रत्येक सूचक को स्कोर करने के लिए सहमत होता है। स्कोर को चार्ट या रजिस्टर पर संकलित करना चाहिए जो कि समूह के पास लगातार मूल्यांकन के लिए उपस्थित होता है।

चित्र 4.8 दर्शाता है कि ट्रैफिक लाइट स्कोरिंग यदि मैं घोड़ा होता (टी–17) का परिणाम है और मानक की चरण 3.1 व 3.2 में सूचीबद्ध करके व्याख्या की गई है।

पशु कल्याण ट्रांजेट वाक (टी–22) पुरूष, महिला याा दोनों साथ मिलकर कर सकते हैं,यह समूह तय करते हैं या टूल के परिणाम पर आधारित है जैसे कि "दैनिक कार्य अभ्यास" (टी–4), कुछ देशों में महिलायें अधिकांशत, पशु सम्बंधी कार्य घर के आस–पास करती है तथा पुरूष पशु को कार्य करते हुए प्रबंध करते हैं। हमने पाया है कि महिलाएं समूह की अभ्यास में अधिक संवेदनशील व रूचि लेने वाले होते हैं।

NAMES OF OWNERS O GREEN ⊙ ORANGE ● RED
पशु मालिक का नाम O हरी ⊙ नारंगी ● लाल

WHERE TO LOOK कहाँ देखना है	WHAT TO SEE 1-16 JAN क्या देखना है	Guddu	Harpal Singh	Jaipal Singh	Amichand	Satyapal Singh	Gopal Singh	Jeevanlal	Vijay Singh	Hemraj	क्या देखना है
SKIN त्वचा	DRYNESS-DIRTY	⊙	●	O	O	O	⊙	O	O	O	सूखा-गंदा
LEG पाँव	SWELLING OF JOINTS	O	O	O	O	O	O	O	O	O	जोड़ों में सूजन
HOOF खुर	LAMENESS-PULLING UP LEG	O	O	O	●	O	O	O	O	O	लंगड़ापन
	WOUND-WARM	O	O	⊙	●	O	O	O	O	O	घाव बुखार
	BREAK-CRACK	O	O	O	O	O	●	O	●	O	टूटा-फटा
	CLEANLINESS	⊙	⊙	⊙	●	●	O	O	●	●	सफाई
WOUND ON MOUTH मुँह पर घाव	LIP-NO SKIN	O	O	O	O	O	●	O	O	O	होंठ कटा
WOUND ON GIRTH छाती पर घाव	NO HAIR-NO SKIN	O	O	O	O	O	●	O	O	O	बाल व खाल रहित
WOUND ON WITHER मध्य पर घाव	NO HAIR-NO SKIN	O	O	O	O	O	O	O	O	O	बाल व खाल रहित
WOUND UNDER TAIL पूँछ के नीचे घाव	NO HAIR-NO SKIN	O	O	O	O	⊙	O	O	O	O	बाल व खाल रहित
EYE आँख	REDNESS-DISCHARGE BLINDNESS	O	O	O	O	O	⊙	⊙	●	⊙	लाल, कीचड़, अंधा
NOSE नाक	BREATHING PROBLEM RUNNING DISCHARGE	⊙	O	⊙	O	O	O	●	●	⊙	हाँफना, बहना
WEAKNESS OF BODY शरीर की कमजोरी	RIBS AND BONES SHOWN	⊙	⊙	⊙	O	O	⊙	O	⊙	O	पसली और हड्डी दीखना
NECK गर्दन	DOWN-DULL ALERTNESS	O	O	O	O	O	O	O	O	O	उदास
BEATING पिटाई	EARS DOWN-FEAR BITING-WOUNDS	O	O	O	O	O	O	O	O	O	घाव कान झुका हुआ
STABLE अस्तबल	CLEANLINESS-SMELL	O	⊙	⊙	⊙	⊙	O	●	O	O	गन्दगी-बदबू
FEEDING POT खोर	FEED-CLEANLINESS HEIGHT	⊙	⊙	⊙	●	⊙	⊙	⊙	⊙	⊙	चारा साफ खोर ऊँची
SADDLE/HARNESS साज	CLEANLINESS-SMELL-NOT SHARP	O	⊙	O	O	O	⊙	O	O	O	सफाई-बदबू, धारदार नहीं
CART बुग्गी	BALANCE-CLEANLINESS	O	⊙	●	O	O	⊙	O	⊙	●	संतुलन/सफाई
FARRIERY नालबन्दी	SIZE OF SHOE ACCORDING TO HOOF	O	O	O	O	O	O	O	O	O	खुर के हिसाब से नाल
HAIR CLIPPING बाल कटाई	HAIR SHORT NO BRETING EA	●	O	O	●	O	O	O	●	O	साफ व छोटा बाल
DISEASE IN LAST ONE MONTH पिछले एक माह की बीमारियाँ											
	COLIC	O	O	O	O	O	O	O	O	O	
	RESPIRATORY PROBLEM	●	●	●	●	●	●	●	●	●	
	TETANUS	O	O	O	O	O	O	O	O	O	

चित्र 4.8 पशु कल्याण भ्रमण रिकाडिंग चाहे (टी –22)

चरण 3.4: समूह से सम्बन्धित पशु के कल्याण की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण

चरण 3.4 का उद्‌देश्य है सभी पायी गयी उपलब्धियों का सार प्रस्तुत करना। व्यक्तिगत पशु के कल्याण का सही चित्र और मुददे जिससे समूह से जुडे सभी पशु प्रभावित होते हैं को दर्शाना। जिससे आगे व्यक्तिगत एवं सामूहिक चर्चा एवं निर्णय द्वारा पशु का कल्याण हो सके।

जैसे ही पशु कल्याण भ्रमण (टी 22) पूरा होता है, समूह के सदस्य एक साथ बैठकर सभी उपलब्धियों को चार्ट पर अंकित करते हैं और उसका निर्णय निकालते हैं। यदि भ्रमण का समय एक दिन से ज्यादा चलना है तो उचित होगा कि प्रतिदिन के अन्त में समूह के सदस्य भ्रमण पर चर्चा करें एवं निर्णायक बैठक अभ्यास के अन्त में करें।

समूह सभी पशुओं का एक साथ एवं अलग–अलग उपलब्धियों का सार प्रस्तुत करता है। समूह अलग–अलग सभी पशु को मिले लाल स्कोर या खराब स्थिति जिससे पशु का कल्याण प्रभावित होता है का आंकलन करते हैं एवं गाव स्तर पर भी कल्याण की स्थिति का आकलन करते हैं। इस प्रक्रिया में कल्याण सम्बन्धी मुद्‌दों की सूची बनती है। जो कि चरण 4 में उपयोग होगी। संयुक्त विश्लेषण प्रक्रिया से व्यक्तिगत एवं संयुक्त कार्य शुरू होता है। क्योंकि इससे पशु कल्याण मुददों के प्रति जागरूकता बढती है एवं लोगों पर दबाव बढता है एवं समूह पशु कल्याण के लिए कार्य शुरू करते हैं। समूह इन मुद्‌दों को लेकर योजना बनाकर गतिविधि शुरू करते है।

इस प्रक्रिया का लाभ यह है कि ज्यादातर स्थतियों में पशु कल्याण भ्रमण के बाद ही पशु कल्याण का कार्य शुरू हो जाता है। क्योंकि पशु कल्याण को प्रभावित करने वाले मुददों का अहसास समूह के सदस्यों को होता है। और सदस्यों के बीच एक स्वस्थ प्रतियोगिता की शुरूआत होती है।

अवस्था 4 सामुदायिक कार्य योजना का निर्माण

अवस्था 4 का उददेश्य है कि समूह के सदस्यो को अभी तक हुए अभ्यास से निकले मुददों के प्रति जागरूक करना, जिससे व्यक्तिगत एवं सामूहिक क्रिया द्वारा पशु का कल्याण हो सके। इस प्रक्रिया में तीन चरण हैं:

4.1– काम करने वाले पशु के कल्याण मुद्दों का प्राथमिकीकरण करना

4.2– कल्याण मुद्दों का मूल कारण निकालना

4.3– कारण विश्लेषण के आधार पर सामूहिक योजना का निर्माण

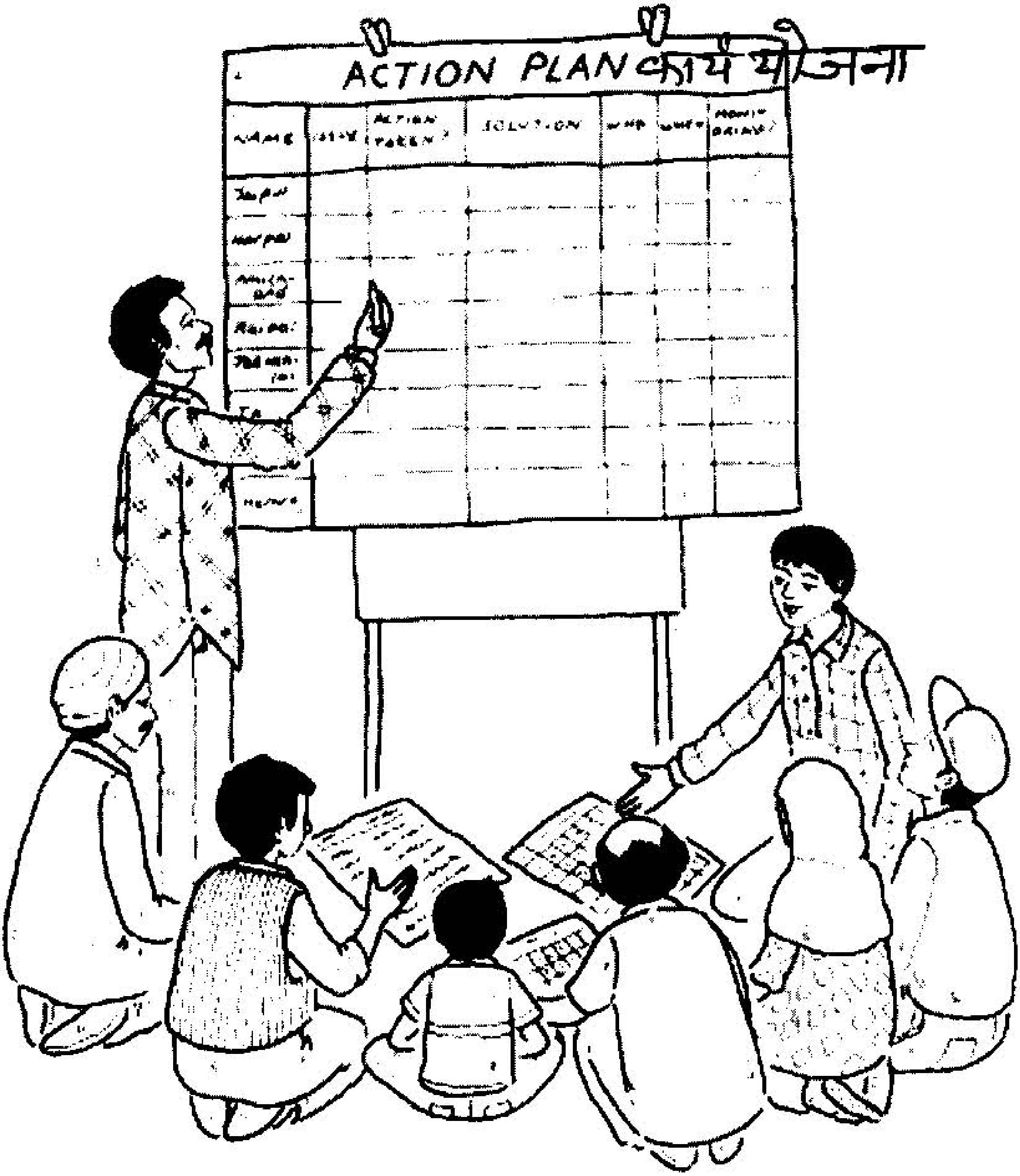

अवस्था 4 सामुदायिक कार्ययोजना

चरण 4.1 कल्याणके मुददों की महत्ता के आधार पर पशु एवं पशु कल्याण के लिए प्राथमिकी करण करना

उद्देश्य

- पशु कल्याण के सभी मुददों की सूची बनाना
- महत्ता के आधार पर मुददों

चरण 4.2 कल्याण के मुददों के कारणों को जानना

उद्देश्य

- पशु कल्याण मुद्दों के कारण का विश्लेषण करना एवं पता करना कि कौन से कारक जिम्मेदार हैं?

चरण 4.3 पशु कल्याण के लिए सामूहिक योजना का निर्माण

उद्देश्य

- प्रत्येक कारण के लिए गतिविधियों की पहचान
- प्रत्येक कारण के गतिविधियों के
एक्शन के लिए कौन जिम्मेदार होगा
- कब गतिविधियाँ की जायेगी
- कौन मानिटरिंग करेगा
- प्रत्येक गतिविधियों को नापने का पैमाना क्या होगा?

प्रक्रिया

- पशु मालिक एवं अन्य सेवादाताओं के साथ बैठक आयोजित करना
- पशु भ्रमण के दौरान निकले मुद्दों की सूची बनाना एवं अवस्था–3 में दर्शाये गये चार्ट के आधार पर अन्य मुद्दों को भी शामिल करना।
- समान मुद्दों के आधार पर एवं पशु को ज्यादा प्रभावित करने वाले मुद्दों का प्राथमिकीकरण करना और निर्धारण करना कि किसका समाधान तत्काल आवश्यक है, किसमें थोड़ा समय लगेगा और किसमें ज्यादा समय लगेगा।
- सभी मुददों का कारण निकालना।
- समूहिक रूप से मुख्य कारण का संभावित हल निकालना जिससे पशु का कल्याण प्रभावित होता है (इस समाधान को सामूहिक या व्यक्तिगत रूप से लागू करना)
- प्रत्येक एक्शन के लिए समूह के सदस्यों की जिम्मेदारी का निर्धारण करना।
- आपसी सहयोग, बाहरी सहयोग, संसाधान एवं समय सीमा तय करना।
- कार्य योजना के लागू होने को कैसे नापेंगें एवं कौन नापेगा इस का निर्धारण करना।
- समूह की कार्य योजना को समुदाय के समक्ष प्रस्तुत करना एवं कार्ययोजना को आगे बढ़ाने के लिए लिखित या मौखिक सहमति लेना।

टूल्स

- जोड़ावार रैंकिंग (टी 8)
- मैट्रिक्स रैंकिंग (टी 9)
- थ्री पाइल सोरटिंग (टी 23)
- पशु कल्याण कहानी गैप के साथ (टी24)
- प्राब्लम हार्स (टी 25)
- पशु कल्याण कारण एवं प्रभाव चित्र (टी 26)

टेबल 4.5 प्रक्रिया परिदृश्य अवस्था 4 सामुदायिक कार्य योजना का निर्माण

चरण 4.1 कल्याण मुददों का महत्ता के आधार पर पशु एवं पशु कल्याण के लिए प्राथमिकीकरण करना

काम करने वाले पशु के कल्याण को प्रभावित करने वाले मुद्दे अब समूह द्वारा पहचान लिए गये है। अब अगला कार्य हैं कि यह समस्या के महत्ता के आधार पर निर्धारण करना कि कौन सी समस्या ज्यादा गम्भीर है और सबसे पहले हल करने की आवश्यकता है। यह प्रक्रिया समूह को योजना लागू करने के लिए सीमित पैसे एवं संसाधन के अनुसार वास्तविक एजेंडा तय करने में सहायक होगी ।

पशु कल्याण भ्रमण के चार्ट रिकार्ड का विश्लेषण (टी 22, अवस्था 3) करके समूह ने ऐसे मुददों की सूची प्रस्तुत की जिसे लाल स्कोर (या खराब कल्याण) मिला था । किए गए पिछले अभ्यास का अवलोकन करने के लिए पशु मालिकों को उत्साहित करें और पशु सम्बन्धी समस्याओं को इस सूची में जोडें

समूह को आप फैसिलिटेट करें हैं कि वो चर्चा के माध्यम से मुद्दों को एक कार्ड पर लिखकर प्राथमिकता के आधार पर रैंक करें (पिरफरेंस रैकिंग)। इसके अलावा आप जोड़ावार रैंकिग (टी 8) या मैट्रिक्स रैंकिग (टी 9) का प्रयोग कर सकते है। जोड़ावार रैकिग से पशुमालिक एक मुद्दे से दूसरे मुद्दे की तुलना करके महत्ता के हिसाब से निर्णय करते हैं। कभी–कभी समूह के लिए जोड़ावार रैकिंग से निर्णय निकालना मुश्किल हो जाता है तब मैट्रिक्स रैंकिंग का प्रयोग उचित होता है। हमने अनुभव किया है कि कुछ समूह पिरफरेंस रैकिग और मैट्रिक्स रैंकिंग दोनो का प्रयोग करते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि मुद्दों का प्राथमिकीकरण पशुमालिकों के अनुसार किया जाए न कि अपने अनुसार या अपने संस्था के अनुसार किया जाए। यदि समूह का निर्णय पर अपनत्व नहीं होगा तो एक्शन नहीं होगा।

पशु कल्याण मुददों की सूची बड़ी होती है और सभी मुद्दों पर समूह एक साथ एक्शन नहीं कर सकता। इसलिए सभी मुददों में से ऐसी समस्यों को निकालना चाहिए जिसका हल तुरन्त निकालने की आवश्यकता है (एक महिने के अन्दर) फिर जो कम समय में हो जाए (एक वर्ष के अन्दर) अन्त में जिसमें ज्यादा समय लगे (दो वर्ष या अधिक) को निकालना चाहिए।

प्रकिया बाक्स 5. ऐसे मुद्दों के लिए हम क्या कर सकते है जिनका हल सम्भव नही है।

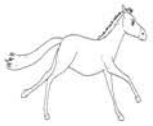

हमने टैफिक लाइट भ्रमण (टी 22) के विश्लेषण से यह पाया कि समूह ऐसे मुद्दों को अलग रखते हैं जिनका हल सम्भव नहीं हैं। जैसे अंधापन, यहाँ हमें समूह में यह चर्चा करनी चाहिए कि पशु अंधा क्यों हुआ और काम करने वाले पशु में अंधापन क्यों होता है, जिससे भविष्य में अंधापन न हो इस पर कार्य हो सके। और समूह को उत्साहित करना चाहिए कि अंधे पशु से कैसे काम लिया जा सकता है। पशु को प्रशिक्षित किया जाए कि वो आवाज के माध्यम से काम कर सके और जहॉ ट्रैफिक कम है वहॉ काम लिया जाए। आराम के समय का उचित प्रबन्धन किया जाए। जैसे उसको खाना और पानी प्रतिदिन एक ही जगह पर दिया जाए।

<u>चरण 4.2</u>–मूल कारणों का विश्लेषण

अगले चरण में आप एवं समूह मिलकर सभी चुने गए अश्व कल्याण मुद्दों का कारण पता करेंगे। इसमें उन कारकों को भी सम्मलित किया गया है जिससे काम करते समय एवं आराम के समय पशु का कल्याण प्रभावित होता है। इस कार्य के लिए विभिन्न प्रकार के टूल का प्रयोग किया जा सकता है। ज्यादातर हम समस्या घोड़ा (टी 25) एवं पशु कल्याण कारण एवं प्रभाव का प्रयोग करते हैं। इन टूल्स द्वारा हम काम करने वाले कमजोर

पशु का कारण एवं उसके कल्याण पर क्या प्रभाव पड़ता है का ऑकलन करते हैं। यह प्रकिया एक पेड़ के द्वारा कारण एवं प्रभाव के रिश्ते को प्रर्दशित करता है। यह पशु मालिक, उसके परिवार और पशु पर पर पड़ने वाले प्रभाव को प्रदर्शित करने में बहुत सहायक होती है। जिससे बदलाव के लिए पशु मालिक एक्शन करते हैं। उदाहरण के तौर पर वे पशु के शरीर पर हुए जख्म के कारण के बारे में चर्चा करते हैं जिसका कारण, साज की बनावट और उसकी सफाई, साज, बुग्गी की बनावट हो सकता है। इस कारण के प्रभाव से पशु को दर्द होता है, वजन कम होता है और पशु के कार्य करने की क्षमता कम होती है। पशु पर जख्म के कारण पशु मालिक की आय कम होती है। (पशु कम कार्य करता है और उसके दवा पर खर्च बढता है) या फिर समुदाय में उसकी स्थिति नीचे हो जाती है।

शुरूआत में समूह द्वारा पहचाना गया कारण सतही होता है। पुट्ठे पर जख्म और सीना पर जख्म के केस में पशु मालिक मानते हैं कि यह लगातार सफाई से ठीक हो सकता है। यद्यपि काम करने वाले पशु के जख्म की सफाई ही काफी नहीं होता। इसके बहुत से कारण हो सकते हैं जैसे साज का ठीक से फिट नहीं होना है, गन्दगी गड़डा, असंतुलित बुग्गी, खराब रास्ता, अधिक वजन लादना, पीटना और यह आवश्यक नहीं है कि ये कारण पहली बार के ही चर्चा में निकल आये। समूह को यह स्वंय अनुभव करना होगा कि पूरा प्रयास करने और जख्म की सफाई करने के बाद भी जख्म पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ। इस अनुभव के कारण समूह जख्म के कारणों को और गहराई से विश्लेषण करने के लिए आगे बढ़ता है यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप धैर्य के साथ समूह को उत्साहित करें कि वो गहनता के साथ और कारणों का विश्लेषण करें। यदि चर्चा को जल्दबाजी में किया गया तो पशु मालिकों के पास समय कम होने के कारण वास्तविक कारण आने में कठिनाई हो सकती है।

चरण 4:3: पशु कल्याण मुद्दे को सुधारने हेतु सामुहिक कार्ययोजना तैयार करना

जैसे ही समूह सभी समस्याओं के कारण पर सहमत हो जाता है, समूह प्रत्येक कारण के लिए एक सामूहिक कार्य योजना बनाता है, और उसको लागू करता है। सामूहिक कार्य योजना एक खुला सामूदायिक सहमति होता है जिससे बदलाव के लिए कार्य किया जाता है और यह निर्धारित किया जाता है कि कौन सा कार्य कौन करेगा ओर कब करेगा। यह कार्ययोजना समस्या समाधान के लिए पशु मालिकों द्वारा सही प्रकार से जिम्मेदारी लेने में सहायक होता है। जिसके द्वारा यह भी पता चलता है कि कार्य योजना लागू करने में किसका सहयोग चाहिए (आपसे, सहयोगी संस्था से, अन्य बाहरी संस्था से या सेवाप्रदाता से)। इस समय समूह को उत्साहित करना चाहिए कि वो अपने पुराने अनुभवों एवं सीखों के आधार पर योजना लागू करें। सामुदायिक कार्य योजना में मुख्य अंशदान पशुमालिक समूह के द्वारा होना चाहिए, क्योंकि यह योजना उनके समस्या समाधान के लिए बनी है। यह हमेशा सहायक होता है यदि सेवा प्रदाता प्रतिनिधियों को योजना में शामिल किया जाए जैसे–नालबन्द, स्थानीय स्वास्थ्य सेवा प्रदाता, महिला समूह और सम्बंधित संस्थाएं। यह आवश्यक है कि महिला और बच्चों को योजना प्रक्रिया के प्रत्येक स्तर पर या तो पुरूष के साथ–साथ या अलग से शामिल किया जाए। इससे केवल अच्छा कार्य ही नहीं होता बल्कि आगे स्थायित्व में भी सहायक होता है क्योंकि खाली समय में ये पशु सम्बन्धी कार्य भी करते हैं। कभी–कभी समूह योजना एक या दो आवश्यक मुद्दों को लेकर अपने रूचि के अनुसार बनाते हैं। जब इन मुद्दों का समाधान हो जाता है तो ये वरीयता के अनुसार दूसरे मुद्दे पर कार्य करते हैं। जब समूह मजबूत हो जाता है एवं उनमें विश्वास बढ़ जाता है तो वे सम्पूर्ण योजना बना सकते हैं।

योजना का आकार कुछ भी हो पर ये बदलाव लाने के लिए विशिष्ट होना चाहिए। इसमें निम्न का समावेश होना चाहिए–

- पहचाने गये कल्याण के मुद्दे
- सभी मुद्दों का कारण (कारण प्रभाव विश्लेषण पर आधारित)
- प्रत्येक समस्या के कारणों के लिए कार्य
- कौन करेगा (जिम्मेदारियां)
- कब किया जाएगा (समय)
- कौन देखेगा कि प्रत्येक कार्य ठीक प्रकार से चल रहा है या नहीं

समूह के आकार के अनुसार प्रत्येक सदस्य एक साथ कार्य कर सकते हैं या छोटे–छोटे समूह में बंटकर। वे प्रत्येक समस्या कारण पर या योजना के भाग पर कार्य कर सकते हैं। अपने रूचि के अनुसार समूह अपने कार्य को पूरा करने के बाद फिर सभी समूह के साथ मिलकर एक दूसरे कार्य पर सुझाव दे सकते हैं जिसमें बदलाव की जरूरत हो बदलाव किये जा सकते हैं, पशु का शरीर, व्यवहार और भावना, प्रबन्धन पशुमालिक का व्यवहार भट्टा, संसाधन सेवाप्रदाता और सेवा मुद्दा जो चरण 4.1 में वरीयता से लिए गये थे।

नाम	मुददे	कारण	गतिविधियां	कौन?	कब?	कौन देखेगा
गुड्डू						
जयपाल						
हरपाल						
अमीचन्द						
हेमराज						

मुददे	कारण	गतिविधियॉ	कौन?	कब?	कौन देखेगा?
गंदा शरीर					
सुम की सफाई					
आंख गन्दी					
छाती पर जख्म					
बुग्गी का बैलेंस					
सांस की समस्या					

चित्र 4.9 सामुदायिक कार्ययोजना बनाने के दो संभावित प्रारूप

हमने यह अनुभव किया कि कार्ययोजना में दो प्रकार की गतिविधियों होती हैं प्रत्येक सदस्य द्वारा व्यक्तिगत गतिविधि जिससे पशु को फायदा हो जैसे साज–समान की सफाई, बुग्गी का मरम्मत एवं बैलेसिंग, जख्म की सफाई। व्यक्तिगत गतिविधियों का सामूहिक रूप से निर्णय लिया जाता है एवं समूह द्वारा मोनिटरिंग भी की जाती है।

सामूहिक गतिविधिः— समूह के सभी सदस्यों द्वारा समूह के सदस्यों के पशुओं के लिए जैसे एक समय में सभी के पशुओं का टीकाकरण, या काम करने वाली जगह पर पानी का टैंक बनवाना

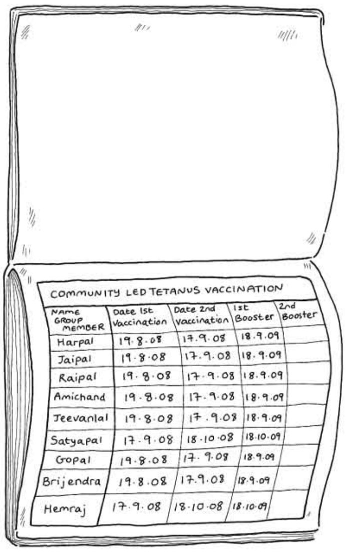

इस समय यह अत्यन्त आवश्यक है कि समूह यह चर्चा करे कि किस प्रकार प्रभावशाली ढंग से योजना की गतिविधियों को नापेंगे और देखेंगे। इससे उनके बीच कार्य के लिए एक दबाव एवं उत्साह बनता है ।

नापने का तरीका क्या होगा जिससे यह पता चले कि जो योजना में गतिविधियां ली गई थीं वो हो रही है या नहीं (गतिविधि मानिटरिंग)

प्रत्येक गतिविधियों को कौन नापेगा? समूह अन्य समुदाय के मदद से इसको नाप सकते हैं।

वे कब नापेंगे? नापने का अन्तराल समूह की प्राथमिकता के आधार पर तय होता है। जैसे सप्ताह में नाप सकते हैं 15 दिन में, महीने में नाप सकते हैं।

समुदाय द्वारा टी0टी0 टीकाकरण				
समूह सदस्य का नाम	प्रथम टीकाकरण	द्वितीय टीकाकरण	प्रथम टीकाकरण	द्वितीय टीकाकरण
हरपाल	19.08.08	17.09.08	18.09.09	
जयपाल	19.08.08	17.09.08	18.09.09	
राजपाल	19.08.08	17.09.08	18.09.09	
अमीचन्द	19.08.08	17.09.08	18.09.09	
जीवन	19.08.08	17.09.08	18.09.09	
सत्यपाल	17.09.08	18.10.08	18.08.09	

समूह द्वारा सहमत कार्य योजना चित्र 4.10 नीचे

मुदद्दे	कारण	जो गतिविधि	कौन?	कब?	कौन देखेगा
गंदा शरीर	गंदा थान खुरैरा न करना बाल न कटवाना स्नन न कराना	प्रतिदिन थान की सफाई खुरैरा प्रतिदिन सप्ताह में एक बार स्नान	हरपाल सिंह, गोपाल सिंह	कल से शुरू करेंगे	हेमराज जयपाल
सुम की सफाई	गन्दा थान सुम की सफाई न करना	प्रतिदिन थान की सफाई चूने का प्रयोग	गुड्डू, हरपाल जयपाल, अमनचन्द सतयपाल,	अभी से तत्काल	जीवन लाल गोपाल

	सुम को न देखना	सुम की प्रतिदिन सफाई	विजय, हेमराज		
आंख गन्दी	धूल वाले वातावरण में कार्य करना। आंख की सफाई न करना	आंख की सफाई प्रतिदिन दो बार	जीवन, गोपाल, विजय, हेमराज	भटटे के समय	गुडडू, हरपाल
छाती पर जख्म	ठोस पट्टी का प्रयोग गंदी पट्टी का प्रयोग पट्टी पर तेल का प्रयोग न करना	मुलायम पट्टी का प्रयोग पट्टी की प्रतिदिन सफाई पट्टी पर तेल का प्रयोग	गोपाल	प्रतिदिन	विजय, अमीचन्द
बुग्गी का बैलेंस	टायर में हवा कम या सभी टायर में अलग अलग हवा असमान बोझ	हवा प्रत्येक महीने देखना, सभी टायर में हवा का समान दबाव, समान बोझ	हरपाल जयपाल गोपाल विजय हेमराज	कल से	गुडडू हरपाल
सांस की समस्या	अज्ञात गंदा स्थान	डाक्टर के द्वारा बचाव पर चर्चा करना	सभी	5, फरवरी	सत्यपाल जयपाल

चित्र – 4.10 सामुदायिक कार्ययोजना का एक उदाहरण

केस स्टडी – H खंजरपुर गांव

स्रोत– रमेश रंजन, ब्रुक इण्डिया, गाजियाबाद, उ0प्र0 दिसम्बर 2007

ब्रुक इण्डिया गाजियाबाद यूनिट ने खंजरपुर गांव में 2007 में काम शुरू किया जुलाई में घोड़ा बुग्गी रखने वाले पशु मालिकों ने चर्चा शुरू किया कि कौन बुग्गी मालिक हम ग्यारह सदस्यों मे से अच्छा है और कौन सबसे अच्छा है। आगे ये सहमत हुए कि हम ये देखने के लिए कुछ मानक तय करेंगे जैसे–साफ थान, कम जख्म, साफ बाल, सही साज, बैलेंस बुग्गी एवं बराबर हवा का दबाव, कौन पशु मालिक अपने पशु को प्यार नहीं करता एवं अन्य सभी सदस्यों द्वारा निर्णय लिया गया कि वे भ्रमण करके सभी के घर जाकर इन मानकों के आधार पर पशु को एवं उनके थान को देखेंगे। यह एक उत्साहजनक अभ्यास था। भ्रमण के बाद सभी ने पायी गयी स्थिति की चर्चा की और ये चर्चा लम्बी चली। अधिकतम नम्बर मि० जयप्रकाश के घोड़े के दिया गया (10 में से 8) क्योंकि उसके घोड़े में एक भी जख्म नहीं था।

इसके बाद जख्म, बात करने का मुख्य मुद्दा बन गया क्योंकि जयप्रकाश के पशु को छोड़कर सभी के पशु बुरी तरह से जख्म से प्रभावित थे। सभी ये जानने के लिए उत्सुक थे कि कैसे पशु को जख्म से निजात मिले। इस कारण पशु मालिक जख्म के कारण को समझने व खोजने में लग गये, जिससे जख्म से छुटकारा मिल सके और निर्णय लिया कि इसके लिए ये कार्य करेंगे जैसे काठी की सफाइ करना, साफ कपड़े का प्रयोग, चमड़े पर तेल का प्रयोग (काठी पर,) पशु को ज्यादा पानी पिलाना, बुग्गी का बैलेंस बनाना और टायर में हवा का समान दबाव। जब समूह ने दूसरी बार भ्रमण किया तो पाया (अगस्त में) कि ज्यादातर पशु के जख्म कम हो गये थे, लेकन ब्रजपाल और राकेश के घोड़े के पीठ पर जख्म बढ़ गए थे। दोनों पशु मालिक अपनी बात पर दृढ़ थे कि जो सहमत गतिविधियां थी वो दोनों ने किया है, साज समान, बुग्गी इत्यादि।

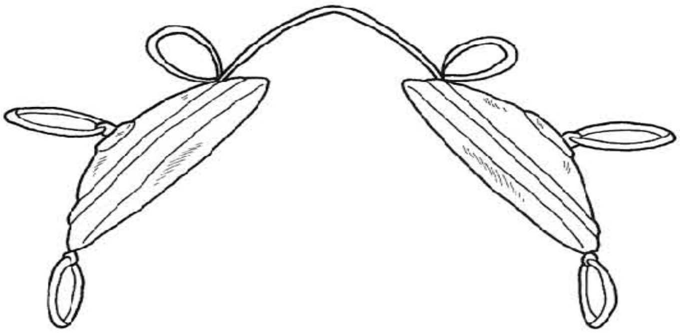

इससे समूह आगे की खोज के लिए मजबूर हो गया और निष्कर्ष निकाला कि बंगला का आकार (साज का एक भाग) भी पशु के जख्म को प्रभावित करता है और पहले की चर्चा में वे इस पर गौर करना भूल गये थे। सभी के बंगला को नापा गया और पशु के आकार से मिलाया गया। सभी इसके परिणाम को जानने के लिए उत्सुक थे। और सभी तब आश्चर्य चकित हुए जब यह पाया गया कि बृजपाल और राकेश का बंगला सभी बंगला से लगभग दुगुना था। दोनों इस निकर्ष से सहमत हुए और बंगला को पशु के आकार के अनुसार बदला। तीसरी बार पशु भ्रमण अक्टूबर में किया गया और पाया गया कि बृजपाल और राकेश के घोड़े के जख्म कम हुए और अन्य पशुमालिक के घोड़े के जख्म समाप्त हो गए। पशु मालिकों को इस समस्या का हल मिल गया।

यह अनुभव खंजरपुर के पशु मालिकों की क्षमता वृद्धि एवं विश्वास बढ़ाने में सहायक हुआ जिससे वे अपने समस्या का समाधान स्वंय कर सकें। उन्होंने ये गतिविधियां सामुहिक रूप से चालू रखी जिससे न कि उन्हें जख्म से निजात मिला बल्कि अन्य रख–रखाव सम्बन्धी मुददों का समाधान हुआ और पशु कल्याण बेहतर हुआ।

अवस्था–5 क्रिया और प्रतिक्रिया

अवस्था–5 का उद्देश्य है कि समूह को कार्य योजना लागू करने, मानिटरिंग करने और अनुभव पर चर्चा करने में सहायता करना। यहॉ यह आवश्यक है कि समूह व्यक्तिगत एवं सामूहिक कार्यो का गम्भीरता पूर्वक विश्लेषण करें जिससे पशु कल्याण सफल हो सके। ये धनात्मक और सृजनात्मक विश्लेषण, प्रक्रिया को सीख में बदलती है और आगे ये सीख क्रिया में बदलती है। प्रतिक्रिया की गहराई गुणवत्ता पर मुख्य प्रभाव डालती है। निर्धारित समयान्तराल के बाद प्रगति को देखने से पशु मालिक को सहायता मिलती है जिससे

- गतिविधियों में उनकी रूचि बढ़ती है
- विभिन्न स्टेक होल्डर के दायित्व को समझना आसान हो जाता है
- वातावरण के बदलाव को समझ पाते हैं
- क्रिया के लिए जानकारी बढ़ती है कौन करेगा, कौन नहीं
- उचित क्रियाको बढ़ावा मिलता है
- चुनौती के लिए जिम्मेदारी का बंटवारा होता है
- दबाव एवं प्रोत्साहन मिलता है जिससे कि व्यक्तिगत क्रिया प्रभावित होती है
- कार्य करने वाले पशु के प्रति संवेदनशीलता बढ़ती है।
- कार्य करने वाले पशु का ख्याल रखना, और उसको समझना आसान हो जाता है

यह अवस्था आपको और आपकी सहयोगी संस्था को ठीक प्रकार से स्थिति को समझने में मदद करती है। क्रिया एवं प्रतिक्रिया प्रक्रिया की सफलता के लिए दो प्रकार की सामूहिक मानिटरिंग आवश्यक है।

1. **समूह की गतिविधियों की मानिटरिंग करना।**

   समूह की बैठक के दौरान समूह की गतिविधियों को मानिटरिंग करना एक निरन्तर कार्य है। इससे ये पता चलता है कि कार्य योजना में सहमत गतिविधियां समूह सदस्यों एवं स्टेक होल्डर द्वारा सही प्रकार से की जा रही है या नहीं।

2. **कार्य करने वाले पशु के कल्याण में बदलाव की मानिटरिंग**

   लगातार पशु भ्रमण के दौरान सफल गतिविधियों के द्वारा बदलाव को नापा जा सकता है। (टी0–22) नीचे दिये चित्र 4.11 क्रिया–प्रतिक्रिया चक्र तथा टेबल 4.6 प्रक्रिया परिदृश्य अवस्था 5 द्वारा क्रिया और प्रतिक्रया को गहराई से समझा जा सकता है।

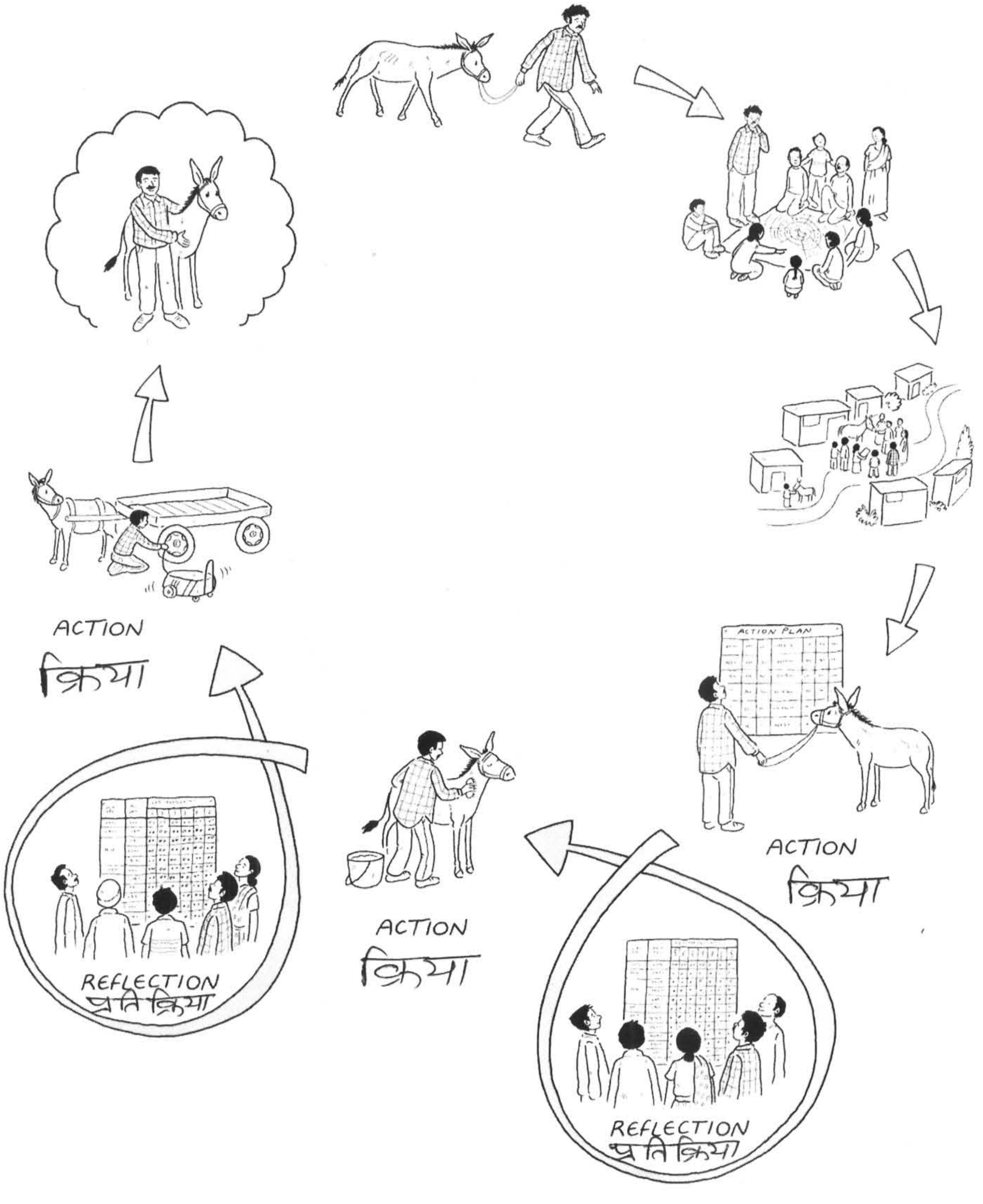

चित्र – 4.11 क्रिया एवं प्रतिक्रिया चक्र

अवस्था–5 क्रिया और प्रतिक्रिया

चरन 5.1 सामुदायिक कार्य योजना की गतिविधियों को लागू करना और मानिटर करना।

उद्देश्य

- समुदायिक कार्ययोजना में निर्धारित किए गए व्यक्तिगत एवं सामूहिक गतिविधियों के लिए समूह के लोगों को तैयार करना
- समूह बैठक कर या क्षेत्र का भ्रमण करके यह देखना कि गतिविधियॉं की जा रही हैं या नहीं

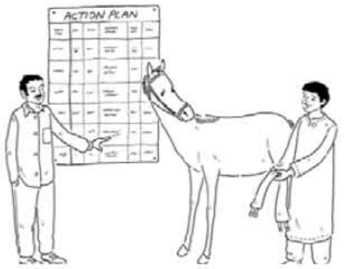

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रयास से कल्याण में हो रहे विकास की समीक्षा के लिए नियमित बैठक आयोजित करें
- समुदायिक कार्ययोजना में सहमत गतिविधियों को जंचते हुए रिकार्ड करें,जिससे इन गतिविधियों का होना सुनिश्चित होगा
- कार्ययोजना के क्रियान्वयन के लिए जरूरी संसाधनों को सामूहिक रूप से अथवा अन्य सुविधादाता से जोड़कर सृजित करें
- ऐसी गतिविधियॉं जिसमें बाहरी मदद की जरूरत है के लिए मदद करना शुरू करें

टूल्सः

- जोडावार रैंकिंग–टी 8
- पशु कल्याण भ्रमण–टी 22
- घोड़ा समस्या –टी 25
- पशु कल्याण कारण – प्रभाव डायग्राम –टी 26

चरन 5.2 पशु कल्याण बदलाव की सहभागी मॉनिटरिंग कर क्रिया और प्रतिक्रिया का चक्र बनाना

उद्देश्य

- कामकाजी पशुओं के कल्याण में कार्ययोजना के प्रभाव को मानिटर करना
- पशुओं में देखे गए बदलाव पर प्रतिक्रिया व्यक्त करना एवं नए कार्ययोजना का विकास

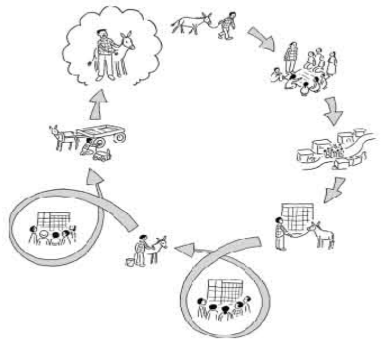

प्रक्रिया

- पशु कल्याण भ्रमण–टी 22 को एक से तीन माह के अन्तराल पर दुहरायें (अवस्था 3,चरन3.3)
- पशु कल्याण भ्रमण के रिकार्डिंग चार्ट के परिणामों का विश्लेषण करें
- कार्ययोजना को सही दिशा में रखने के आवश्यक कदम उठाएं अथवा नई योजना विकसित करें

टेबल 4.6 प्रक्रिया परिदृश्य अवस्था 5 क्रिया एवम् प्रतिक्रिया

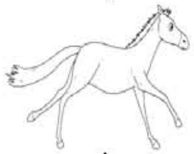

प्रक्रिया बाक्स 6: एक अच्छा क्रिया एवं प्रतिक्रिया प्रक्रिया

- स्थानीय संसाधन एवं क्षमता का उपयोग करना
- समुदाय के ज्ञान एवं जानकारी की पहचान करना
- उदाहरण द्वारा प्रदर्शित करना कि पशुमालिक अपने पशु के लिए सृजनात्मक और जानकार है।
- पशु सम्बंधित स्टेक होल्डर को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करना
- एक सुगमकर्ता होना चाहिए जो क्रिया एवं प्रतिक्रिया में समुदाय की सहायता करें।

स्त्रोतः–केपलिंग–अलाकिजा, एस0, लोप्स, सी0, बेनवाउली, ए0 एवं डियालो, डी0 (1997) ए0 प्राक्टिकल इवोल्युशन हैण्डबुक– हू आर द क्वेसचन मेकर्स? ओ ई एस पी हैण्ड बुक सीरीज, आफिस ऑफिस आफ इवेलुएशन एवं स्ट्रेजिक प्लानिंग, यूनाइटेड नेशन्स, डेवलेपमेन्ट प्रोग्राम, न्यू यार्क, यू0एस0ए0

चरन 5.1 सामुदायिक कार्य योजना की गतिविधियों को लागू करना और मानिटर करना।

प्रथम चरण में क्रिया एवं प्रतिक्रया, समूह को कार्य योजना के अनुसार क्रिया करने में सहायता करता है। एक अच्छे सामुदायिक कार्ययोजना से तुरन्त क्रिया होती है।

सुगमकर्ता के रूप में आपका यह कार्य है कि आप ऐसा वातावरण तैयार करें कि सहमत क्रिया में समूह के सदस्य एक दूसरे का सहयोग करें। इसमें निम्न शामिल है :–

- लगातार बैठक करके समुदाय द्वारा कार्य योजना के व्यक्तिगत और सामूहिक कार्यों का विश्लेषण करना।
- क्रिया के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराना, उदाहरण के लिए पैसे का अंशदान करके सार्वजनिक फंड बनाना, अन्य संस्थाओं, सेवा प्रदाताओं और सरकारी योजना से जुड़ाव कराना।
- आवश्यकतानुसार बाहरी सहयोग दिलाना।
- लिए गये निर्णयों के लिए अभिलेख या रजिस्टर तैयार करना।

शुरूआत में आप अभिलेख की प्रक्रिया को स्वयं करें और धीरे–धीरे इसे समूह प्रतिनिधि को दे दें। जहां कोई भी समूह प्रतिनिधि पढ़े नहीं हैं वहां वे किसी पढ़े लिखे की सहायता ले सकते है। जैसे गांव के किसी पढ़े लिखे की या गांव के किसी स्कूल के बच्चे की।

चरन 5.2: पशु कल्याण बदलाव की सहभागी मॉनिटरिंग, क्रिया और प्रतिक्रिया का चक्र बनाना

एक, दो या तीन महीने के अन्तराल पर पशु कल्याण भ्रमण को दोहराकर समूह अपने पशु कल्याण बदलाव की मानिटरिंग कर सकता है। प्रत्येक मुददे के लिए दिए गए नम्बर को एक समान चार्ट पर रिकार्ड करते हैं। (देखें चित्र 4.12 नीचे)

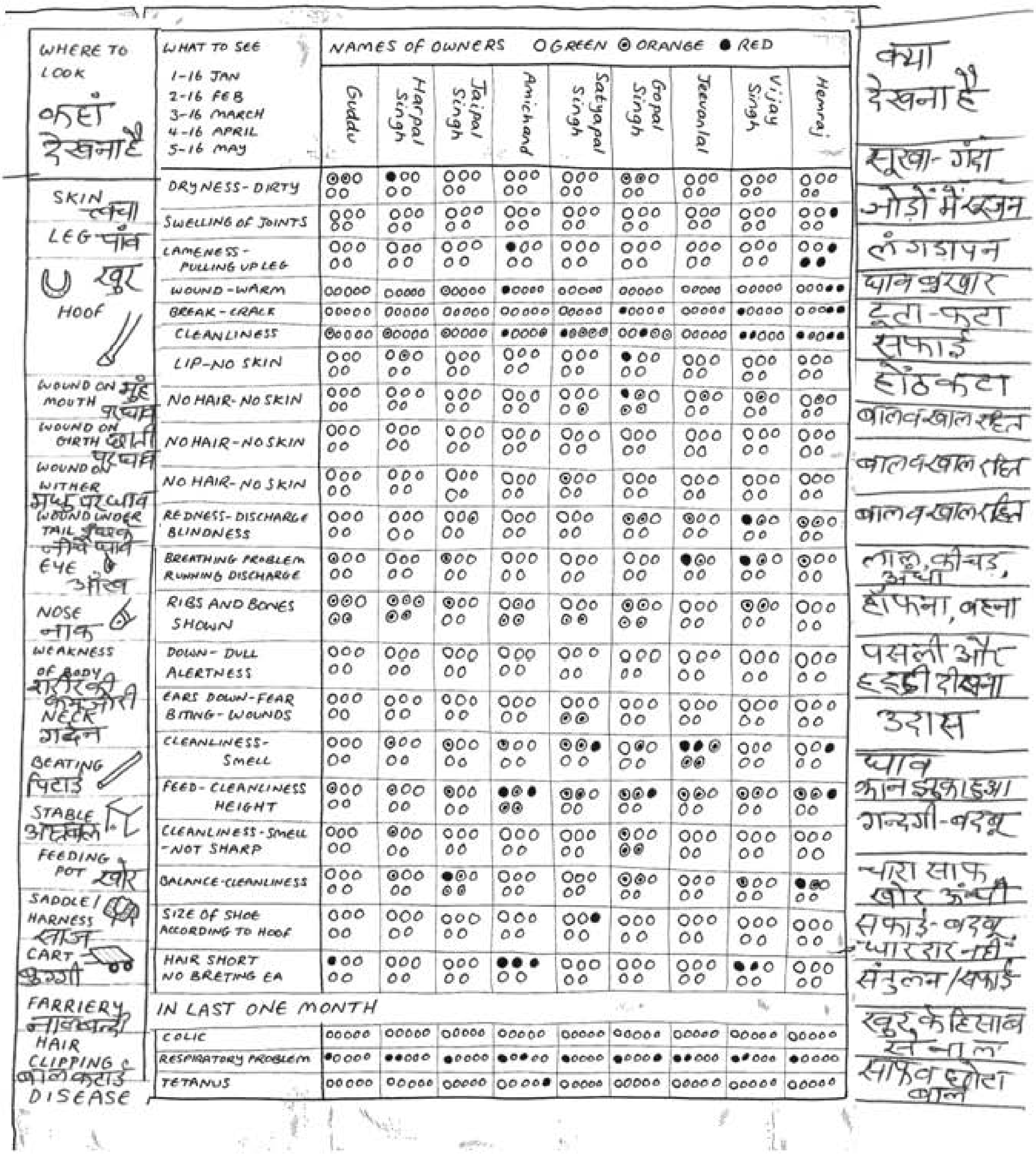

चित्र 4.12 दुबारा किए गए पशु कल्याण भ्रमण को दर्शाता रिकार्डिंग चार्ट

इसके बाद समूह के सदस्य एक साथ बैठकर पाये गये धनात्मक एवं ऋणात्मक परिणामों पर चर्चा करते हैं। बढ़ा हुआ नम्बर यह प्रदर्शित करता है कि पशु कल्याण के लिए उन्होंने जो किया है उसका प्रभाव पड़ रहा है और रख–रखाव सही प्रकार से हो रहा है इसके द्वारा वे अपनी कमी को पहचान कर क्रिया में बदलाव कर सकते हैं।

जिस समुदाय में हम काम कर रहे हैं वहाँ हमने पाया कि बहुत से कल्याण मुद्दों में तो सुधार हुआ लेकिन कुछ मुद्दों में सभी क्रिया करने के बाद भी सुधार नही हुआ। जिसके कारण आगे चर्चा करने की आवश्यकता होती है। और उन विशेष मुद्दों के गहराई में जाकर कारण जानने की जरूरत होती है। इसके लिए हम घोड़ा समस्या टूल (टी–25) या पशु कल्याण कारण व प्रभाव टूल (टी0 26) का प्रयोग कर सकते हैं। ज्यादा गम्भीर और लम्बे समय के कल्याण मुद्दों के समाधान हेतु दूसरे स्तर का कारण विश्लेषण प्रक्रिया आवश्यक हो जाता है।

पशु कल्याण भ्रमण की पुनरावृत्ति सामुदायिक कार्य योजना में सुधार के लिए आवश्यक है। हमने पाया है कि मोटे तौर पर दो प्रकार से सुधार होता है:–

- जैसे ही समूह की संवेदना पशु की तरफ बढती है, सदस्य कल्याण बदलाव की लम्बी सूची का प्रयोग करते हैं। जिसको वे नापना चाहते हैं और एक गहरा स्कोरिंग पद्धति बनाते हैं। ये दोनों वे अपने समयानुसार करते हैं। यदि वे नहीं करते हैं तो हमें अपनी तरफ से कोई जटिल पद्धति नहीं देनी चाहिए। क्योंकि समुदाय को निर्णय करना है कि नापने का कौन सा तरीका उचित है। पशु सम्बन्धी मानक और संसाधन सम्बन्धी मानक नम्बर एवं सम्पूर्णता में बढते हैं। उदाहरण के तौर पर एक समूह ने शुरूआत में अस्तबल की सफाई का पहचान किया और उसको सामूहिक रूप से मानिटरिंग किया। कुछ पशु कल्याण भ्रमण की पुनरावृत्ति के बाद, खोर की सफाई, खोर की ऊंचाई,भोजन के प्रकार आदि मुद्दे जुडते हैं। दूसरे समूह ने अपने पशुओं के जख्म को नापा और पहले उन्होंने जख्म की संख्या को गिना और बाद में जख्म की गहराई को भी नापने लगे।
- एक अन्य समूह और अधिक गहराई से कारण का विश्लेषण करने लगा है और उसके अनुसार क्रिया को कार्य योजना में सम्मिलित किया है।

आप पायेंगे कि शुरूआत में समूह को ज्यादा सहयोग की आवश्यकता होती है और वे आप पर निर्भर होते हैं। जैसे ही समूह पशु कल्याण मुद्दों से ज्यादा परिचित होते हैं और उनका समस्या समाधान में विश्वास बढ़ता है, वे स्वयं ही क्रिया प्रतिक्रिया करने लगते हैं। यह आपके कार्य की सफलता का द्योतक होता है। इस समय ही आप अपने सहयोग के बारे में बात कर सकते हैं एवं वापसी के लिए चर्चा कर सकते हैं। समूह को सहयोग एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए वापसी की योजना बनाना आवश्यक है। हमारे अनुभव के आधार पर इस स्तर पर पहुंचने में 12 महीने लगते हैं और आगे 12 से 18 महीने उनको मजबूत करने में लगते हैं जब तक वापसी नहीं करते। अवस्था–6 में हम इसकी सहमति पर चर्चा करेंगे।

अवस्था–6 स्वयं मूल्यांकन और निरन्तर सहयोग से क्रमिक वापसी

अवस्था–6 में समूह द्वारा पशु कल्याण के लिए किए गये कार्य का आंकलन करना है। यह मध्य समय (12 से 18 महीने) और अन्त में (2 से 3 वर्ष) किया जाता है। इसके द्वारा समूह पशु कल्याण में धनात्मक बदलाव देख सकते है और आगे नयी क्रिया के लिए प्रतिक्रिया कर सकते है। आपका काम यह देखना है कि गांव वापसी से पहले समूह अपने पांव पर खड़ा है या नही। इस समय आप समूह के साथ सहमति बना सकते है कि भविष्य में अभी और कितने सहयोग की आवश्यकता है और यह देखना कि आपके बहुत कम सुझाव के साथ समूह स्वयं कार्य कर रहा है। लम्बे समय का सहयोग आप दे सकते है जैसे वार्षिक बैठक आयोजित करवाना, किसी समस्या या आपदा में सहयोग करना, स्थानीय संस्था या संघ के साथ जुड़ाव करना (अभ्यास–5 देखें)

धीरे–धीरे सहयोग वापस करने से आप और आपकी संस्था दूसरे गांव में जहां आवश्यकता है कार्य कर सकती है और आप अधिक क्षेत्र और अधिक पशु तक पहुंच सकते हैं।

अवस्था–6 स्वंय मूल्यांकन और निरन्तर सहयोग से क्रमिक वापसी

चरण–6.1 स्वयम् मूल्यांकन

उद्देश्य

- समूह द्वारा की गयी गतिविधियों का पशु पर प्रभाव का विश्लेषण,
- कार्य योजना लागू करने में सफलता और चुनौती की चर्चा,
- समूह की आजीविका में पशु कल्याण द्वारा आया सुधार ।

प्रक्रिया

- पहले से बैठक का आयोजन जिसमें कार्य योजना में सम्मिलित स्टेक होल्डर सेवादाता भी शामिल हो।
- कार्य योजना लागू करने से सम्बंधित सफलता, चुनौती एवं सीख की चर्चा।
- पशु कल्याण पर प्रभाव के बदलाव को देखने हेतु पशु कल्याण भ्रमण के चार्ट का विश्लेषण।
- स्वंयम् मूल्यांकन, विश्लेषण के आधार पर कार्य योजना का निर्माण

टूल्स

- ऐतिहासिक समय सारिणी (टी–7)
- बदलाव विश्लेषण (टी–11)
- पहले और बाद में विश्लेषण (टी–11)
- समूह ऋण विश्लेषण (टी–14)
- सफलता असफलता की कहानी
- मुख्य बदलाव तकनीकी (टी–9)

चरण 6.2 निरन्तर सहयोग से धीरे–धीरे या क्रमिक वापसी

उद्देश्य

- गांव से वापसी की कार्य योजना निर्माण

प्रक्रिया

- नये योजना निर्माण के समय समूह के साथ निरन्तर पशु कल्याण प्रक्रिया पर चर्चा।
- आप और आपकी संस्था के सहयोग के बारे में सहमति बनाना,।
- योजना लागू करने एवं सहयोग के समय के लिए सहमति बनाना
- अपनी आत्मनिर्भरता को अपनाने के लिए मानक तय करना और अपनी वर्तमान आत्मनिर्भरता स्तर को समझने में सहयोग।
- संघ शंकुल निर्माण प्रक्रिया का प्रारम्भ करना।
- अपने सुझाव से तय समयनानुसार वापसी करना और समूह के निवेदन पर अथवा आपदा के समय सहयोग करना।

टेबल 4.7 अवस्था 6 का प्रक्रिया परिदृश्य स्वंय मूल्यांकन और निरन्तर सहयोग से क्रमिक वापसी

अवस्था– 6 : दो चरणों से बना है 6.1 और 6.2

स्वयं मूल्यांकनः समूह लम्बे समय की क्रिया की प्रगति को देखता है। समूह पशु कल्याण भ्रमण के चार्ट द्वारा पशु पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करता है। समूह अपने कार्य योजना की सफलता, असफलता, चुनौतियों का विश्लेषण करता है। वे ये भी विश्लेषण करते हैं कि कैसे पशु कल्याण पर पड़ने वाले प्रभाव से उनकी आजीविका पर प्रभाव पड़ता है। फिर वे सहमति बनाते है कि किस क्रिया से लम्बे समय में धनात्मक प्रभाव पड़ेगा।
सुगमकर्ता के रोल में परिवर्तन का दौरः आप समूह के साथ सहमति बना सकते हैं कि आपके निरन्तर सहयोग के जगह बिना आपके सहयोग के समूह का कार्य चलता रहे।

चरण 6.1 स्वयं मूल्यांकनः

इस चरण का मुख्य उद्देश्य पशु कल्याण भ्रमण चार्ट का विश्लेषण करके बदलाव की प्रवृति एवं प्रभाव देखना और पशु कल्याण से समूह और उसके परिवार पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना है। इस बदलाव को पाने में सामुदायिक कार्य योजना की सफलता और असफलता का विश्लेषण करना है।

सीख की चर्चा करना, कार्य योजना के बदलाव में सहायक होती है। यह समूह द्वारा स्वयं मूल्यांकन की प्रतिक्रिया है। इसका उद्देश्य है कि समूह लम्बे समय के कार्य (12 महीने से ऊपर) का मूल्यांकन करें। इस प्रक्रिया के दौरान समूह अपने कार्य योजना में बदलाव करके निरन्तर पशु कल्याण में सुधार करते हैं।

आपके लिए यह आवश्यक है कि इस बैठक की योजना पहले से बनायी जाये। क्योंकि इसमें आम बैठक से अधिक समय लगता है। कुछ समूह इस बैठक को दो दिन करते हैं, तथा कुछ समूह स्वयं मूल्यांकन के लिए तीन से चार दिन प्रतिदिन 2घन्टे बैठक करते हैं। यह बहुत आवश्यक है कि स्थानीय स्टेक होल्डर को बैठक में शामिल किया जाए जैसे पशु चिकित्सक, दवा की दुकान वाला, नालबन्द, साज बनाने वाला या अवस्था 2 में पहचाने गये अन्य। इनकी उपस्थिति से पशु सम्बन्धी सेवाओं में सुधार होगा और सामुदायिक कार्य योजना मजबूत होगी।